हम प्यार के बंधन
कैसे तोड़ते
और बनाते हैं
प्रेम का
श्रम
स्टीफन ग्रोज़,
द एग्ज़ामिन्ड लाइफ़ के लेखक

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: A [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]
1745 [illegible], [illegible], [illegible] 10019
randomhousebooks.com
penguinrandomhouse.com
[illegible] © 2025 [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [

प्रकाशक।
ग्रेवॉल्फ प्रेस की ओर से परमिशन कंपनी, एलएलसी: द हाफ- से "ट्रैक" का अंश टॉमस ट्रांसट्रोमर की सर्वश्रेष्ठ कविताएँ, रॉबर्ट ब्लाई द्वारा अनुवादित, कॉपीराइट © 2001
टॉमस ट्रांसट्रोमर द्वारा लिखित, अनुवाद का कॉपीराइट © 2001 रॉबर्ट ब्लाई के पास सुरक्षित है। द की अनुमति से उपयोग किया गया।
ग्रेवॉल्फ प्रेस, graywolfpress.org की ओर से परमिशन कंपनी, एलएलसी। हार्डकवर ISBN 9780812997552
ईबुक ISBN 9780812997569 पुस्तक टीम: प्रोडक्शन एडिटर: इवान कैमफील्ड • मैनेजिंग एडिटर: रेबेका बर्लेंट • प्रोडक्शन
प्रबंधक: चैन्लर हैरिस • प्रूफरीडर: मार्टिन श्नाइडर पुस्तक का डिज़ाइन सुसान टर्नर द्वारा किया गया है, और इसे एरिएन दिन्ह द्वारा ईबुक के लिए रूपांतरित किया गया है।
कवर डिज़ाइन: जेसी सायवार्ड ब्राइट
कवर फोटो: सारा जोन्स
उत्पाद सुरक्षा और अनुपालन के लिए यूरोपीय संघ में अधिकृत प्रतिनिधि पेंगुइन रैंडम है।
हाउस आयरलैंड, मॉरिसन चैम्बर्स, 32 नासाउ स्ट्रीट, डबलिन D02 YH68, आयरलैंड। https://eu-
contact.penguin.ie
ep_prh_7.3a_155004497_c0_r0

विषय -सूची

समर्पण

सूक्ति

□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□

□□□□□ □□□□□ □□□

□□□□ □□□□□

□□ □□□□□ □□□□□

□□□□□ □□□□□: □□□ □□□□□

□□□□□□□□

□□□□□

□□□□□□□□□□

□□□□□ □□ □□□

□□ □□ □□□ □□

□□□-□□□□□

□□□□□□□□: □□□□□ □□ □□□

□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□□□□□

□□□□ □□ □□□□ □□□

मेरे परिवार को, प्यार के साथ

एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से प्रेम करना: शायद यही हमारे सभी कार्यों में सबसे कठिन कार्य है, वह कार्य जिसके लिए अन्य सभी कार्य केवल तैयारी मात्र हैं।
— रेनर मारिया रिल्के, एक युवा कवि को पत्र

याद रखें कि हमारी सभी असफलताएं अंततः प्रेम में असफलताएं ही होती हैं। — आइरिस मर्डोक, द बेल

प्रस्तावना

समर्पण

जनवरी 1983 का महीना है, नव वर्ष के बाद का पहला सोमवार। आसमान में काले बादल छाए हैं; मूसलाधार, बर्फीली बारिश हो रही है। हार्ले स्ट्रीट टैक्सियों से भरी है। जब ट्रैफिक सिग्नल बदलते हैं, तो टैक्सियाँ थम जाती हैं। उनके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। छतरियाँ अजीबोगरीब कोणों पर हिल रही हैं, टक्कर से बचने के लिए उन्हें झुकाया जा रहा है।
मुझे 5 अपर विम्पोल स्ट्रीट का पता मिला और मैंने घंटी बजाई। रिसेप्शनिस्ट ने मुझे कई लैंप से रोशन प्रतीक्षालय में ले गई। चिमनी में कोयले की आग जल रही थी। फर्श पर गहरे रंग की लकड़ियाँ थीं और एक बड़ा कालीन बिछा था। मैं कमरे के एक कोने में बैठ गया ताकि मैं दरवाजे पर नज़र रख सकूँ।
मनोविश्लेषक बनने के लिए, आपको स्वयं का विश्लेषण करवाना होगा, और यह प्रशिक्षण विश्लेषण आपके कार्य करने के तरीके पर गहरा प्रभाव डालेगा— आखिर क्यों न डाले? मैं अपने पहले मनोविश्लेषणात्मक सत्र की शुरुआत का बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ।
ठीक सुबह 9 बजे, डॉ. लिमेंटानी प्रकट होते हैं। वे हल्की सी मुस्कान देते हैं और सिर हिलाते हैं। वे मुझे प्रतीक्षालय से भी अधिक गर्म एक साधारण कमरे में ले जाते हैं और मनोविश्लेषणात्मक सोफे के पीछे अपनी कुर्सी पर बैठ जाते हैं।
“आराम से बैठ जाइए। यहाँ कुर्सी है या सोफा।” वह थोड़ी देर रुकता है। “मुझे लगता है सोफा ज्यादा आरामदायक है।”

—

अपने मनोविश्लेषक जीवन की शुरुआत के चालीस साल पीछे मुड़कर देखता हूँ तो मुझे बाहरी शोर से शांति की ओर, ठंड से गर्माहट की ओर बदलाव याद आता है। मुझे यह भी याद आता है कि मैं तब कौन था।
मैं इकत्तीस साल की थी और अनुभवहीन थी। मैं आवेगशील थी और जल्दी प्यार में पड़ जाती थी, और अक्सर गहनता को आत्मीयता समझ बैठती थी। मुझे लगता था कि मैं समझदार हूँ, लेकिन प्यार को मैं लोकप्रिय संस्कृति की सीमित और संकीर्ण सोच से देखती थी। मैं अपने दोस्तों से ऐसे बात करती थी मानो प्यार कोई ऐसा पद हो जिसे किसी समिति द्वारा ही भरा जा सकता है। मेरा मानना था कि अगर मुझे सही इंसान मिल जाए, तो खुशी अपने आप मिल जाएगी।
मुझे बहुत सी बातें समझ नहीं आती थीं। मुझे यह समझ नहीं आता था कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपनी खुशी के लिए स्वयं जिम्मेदार है। और अगर मैं खुद के साथ सम्मान और देखभाल से पेश नहीं आऊंगी, तो संभवतः बहुत से लोग भी मेरे साथ वैसा ही व्यवहार नहीं करेंगे।
मुझे दर्द समझ नहीं आता था। मैं सोचती थी कि जब हम किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम करते हैं तो हमें कई तरह के दर्द होते हैं—जैसे तड़प, चिंता, शोक— ये सब ऐसी भावनाएँ हैं जिनसे बचना चाहिए, ऐसे लक्षण हैं जिन्हें दूर करना चाहिए। मुझे यह समझ नहीं आता था कि दर्द ही वह सबसे बेहतरीन साधन है जिससे हम अपनी इच्छाओं को जान पाते हैं।
हम प्रेम के बारे में खुद को धोखा देते हैं—कौन, क्या और क्यों। लेकिन हमारे पास आत्म-धोखे को दूर करने की शक्ति भी है। प्रेम का परिश्रम वह काम है जो हमें स्वयं को और अपने प्रियजनों को स्पष्ट रूप से देखने के लिए करना पड़ता है। यह दुनिया को उसके वास्तविक स्वरूप में स्वीकार करने का हमारा प्रयास है। आइरिस मर्डोक लिखती हैं, "प्रेम व्यक्तियों की धारणा है। प्रेम वह अत्यंत कठिन अहसास है कि स्वयं के अलावा भी कुछ वास्तविक है।" वे आगे कहती हैं: "प्रेम वास्तविकता की खोज है।"

—

प्रेम के बारे में मेरा पहला सबक: समर्पण और आज्ञापालन के बीच का अंतर। मैं डॉ. लिमेंटानी के सोफे पर लेट गई और अपने आँसुओं को देखकर हैरान रह गई। पहले सेशन के अधिकांश समय तक मैं मुश्किल से बोल पा रही थी। अब मुझे लगता

है कि यह इस बात की राहत की प्रतिक्रिया थी (जिसे मैंने बाद में अपने मरीजों में भी देखा है) कि कोई मेरी बात सुनने के लिए मौजूद है, और वह अगले दिन और उसके बाद भी, जब तक मैं आना चाहूँगी, तब तक मेरे साथ रहेगा।
कुछ दिनों बाद जब मुझे अपनी बात कहने का मौका मिला, तो मैंने अपने मनोविश्लेषक से अपने ओडिपस कॉम्प्लेक्स, अपने प्रक्षेपण और अंतर्प्रक्षेपण, अपने स्थानांतरण और उनके प्रति-स्थानांतरण के बारे में बात की। मैंने उन्हें फ्रायड, लाकान, क्लेन और विनिकॉट पर अपने विचार बताए। मैंने उन्हें जर्नल ऑफ द अमेरिकन साइकोएनालिटिक एसोसिएशन और द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोएनालिसिस में हाल ही में प्रकाशित लेखों के बारे में अपने विचार बताए। उन्होंने मुझे कुछ समय तक इसी तरह बोलने दिया, और अंत में, कुछ हफ्तों बाद, उन्होंने पूछा, "क्या आपने गौर किया है कि आप मुझसे ज़्यादा मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के बारे में बात करते हैं?"
वह क्या कहना चाह रहा था? मैंने पूछा, "क्या परिचयात्मक व्याख्यानों में फ्रायड यह नहीं कहते कि नैदानिक अभ्यास मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत पर आधारित है?"
“अच्छा, हम मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत पर बात कर सकते हैं,” उन्होंने कहा। “लेकिन इससे आपका क्या मतलब निकलता है?” और एक अन्य अवसर पर उन्होंने पूछा: “आप हमेशा अपने सत्रों में फ्रायड या मनोविश्लेषण के किसी महान विद्वान के साथ ही क्यों आते हैं? अकेले यहाँ आने से आपको इतना डर क्यों लगता है?”
उस समय मुझे लगा कि डॉ. लिमेंटानी यह सुझाव दे रहे थे कि मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत को अपनाकर मैं गलत लड़की के साथ डेटिंग कर रहा हूँ, कि मुझे नैदानिक मनोविश्लेषण, यानी स्वयं उस अनुभव के साथ समय बिताना चाहिए। लेकिन असल में, डॉ. लिमेंटानी उस चीज़ को सुलझाने की कोशिश कर रहे थे जो मेरे भीतर इतनी गहराई से समाई हुई थी कि मैं उसे देख ही नहीं पा रहा था। मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत पर मेरे विस्तृत व्याख्यानों के अलावा, मैं एक मरीज के रूप में अविश्वसनीय रूप से—शायद मजबूरीवश—आज्ञाकारी था: मैं कभी देर से नहीं आता था, कभी कोई सत्र नहीं छोड़ता था, बिल मिलते ही उसी दिन भुगतान कर देता था। डॉ. लिमेंटानी ने मेरी उन्हें प्रसन्न करने की इच्छा, वह सब कुछ करने की इच्छा जो मुझे लगता था कि वह मुझसे करवाना चाहते हैं, को समझ लिया था। समय के साथ, स्पष्ट और मर्मस्पर्शी व्याख्याओं की एक

श्रृंखला में, उन्होंने मुझे समझाया कि मैं यह मानता था कि यदि मैं उनके सामने समर्पण कर दूं—यदि मैं वह मरीज बन जाऊं जैसा वह मुझे बनाना चाहते हैं—तो वह मुझे स्वीकार कर लेंगे, और यह स्वीकृति मुझे ऊपर उठाएगी, मुझे ठीक करेगी, मुझे मेरे जीवन में वापस ले आएगी।
मैं डॉ. लिमेंटानी के पास उसी तरह जा रहा था जैसे मैं अपने जीवन के कई अन्य महत्वपूर्ण लोगों के पास गया था। मैं चाहता था कि वे मुझ पर ध्यान दें, इस उम्मीद में कि उनकी स्वीकृति—उनका प्यार—मुझे बदल देगा। उनकी व्याख्याओं के माध्यम से, मुझे यह एहसास हुआ कि यह मेरे जीवन में केवल एक अंतर्निहित प्रवृत्ति से कहीं अधिक था: यह मेरा जीवन ही था।
मुझे यह बात स्पष्ट हो गई कि किसी चीज़ (या किसी व्यक्ति) के सामने आत्मसमर्पण करने और उसके आगे झुकने में एक महत्वपूर्ण अंतर है। अगर मैंने इस अंतर को पहले समझ लिया होता, तो शायद मैं कुछ कष्टों से बच सकता था। आत्मसमर्पण का अर्थ है किसी चीज़ को छोड़ देना, एक तरह की मुक्ति का अनुभव करना। जब दो लोग एक-दूसरे के सामने आत्मसमर्पण करते हैं, तो वे जीवंत, सशक्त और स्वीकृत महसूस करते हैं। वे प्रेम का अनुभव करते हैं।
समर्पण या आज्ञाकारिता एक अलग चीज़ है। इसकी शुरुआत भी प्रेम पाने की चाह से होती है—लेकिन किसी दूसरे व्यक्ति के सामने समर्पण करने से हमें ऐसा महसूस होता है जैसे हम उनके वश में आ गए हों। समर्पण एक लेन-देन है: मैं तुम्हें वह दूंगा जो तुम चाहते हो—मैं वैसा बनूंगा जैसा तुम चाहते हो— बदले में तुम मुझसे प्रेम करोगे। क्योंकि यह सौदा पूरा नहीं हो सकता, इसलिए यह असफल होना तय है, और समर्पण अक्सर निराशा या अवसाद की भावनाओं के साथ आता है।
अंततः, जब मैं डॉ. लिमेंटानी पर भरोसा करने और अपने सारे सिद्धांतों को दरकिनार करते हुए, उनके विश्लेषण के सामने आत्मसमर्पण करने में सक्षम हुआ, तो मैंने पाया कि मैं अक्सर फूट-फूटकर नहीं रोता था। (मैंने यह भी पाया कि जब मैं रोता था तो दुनिया खत्म नहीं हो जाती थी।) मेरे पास कहने के लिए और भी बातें थीं। मुझे अपने सटीक शब्द और उनकी प्रतिक्रियाएँ याद नहीं हैं; मैंने अपने जीवन में चल रही बातों के बारे में जरूर बात की होगी— गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप, अपने शोध और प्रशिक्षण के बारे में मेरी भावनाएँ, मेरी माँ का कैंसर। मेरी भावनाओं, सपनों और विचारों को ध्यान से सुनने की उनकी शांत जिद के साथ, डॉ. लिमेंटानी ने मुझे धीरे-धीरे मेरे आंतरिक जगत का

नक्शा बनाने के काम में शामिल किया। यहाँ इच्छा है; यहाँ ईर्ष्या है; यहाँ, इस जगह पर, उदासी है।
धीरे-धीरे मेरे आंतरिक और बाहरी जगत के बीच संवाद बेहतर होता गया—और मैंने इसे एक राहत के रूप में अनुभव किया। मैंने पाया कि मैं उन चीजों को बेहतर ढंग से समझने लगा था जो कभी रहस्यमय लगती थीं। इससे भी बढ़कर, मुझे कम अकेलापन महसूस हुआ, अब मैं किसी दीवार से घिरा हुआ महसूस नहीं करता था। मैंने मनोविश्लेषण की शुरुआत इस विश्वास के साथ की थी कि डॉ. लिमेंटानी शुरू से ही मुझे अच्छी तरह जानते थे—कि मनोविश्लेषक होने का अर्थ है सब कुछ पहले से जानना। लेकिन सच्चाई इसके बिल्कुल विपरीत है: मनोविश्लेषण एक विशेष प्रकार का अज्ञान है। मनोविश्लेषण दो व्यक्तियों का एक साथ अज्ञान होना है। मनोविश्लेषण की प्रक्रिया एक साथ सोचना, एक साथ अर्थ खोजना है। मुझे जानने का एकमात्र तरीका—कि हम मुझे जान सकें—बातचीत और सुनने के माध्यम से ही था।

मुझसे विवाह करो

1

अब जब मैं 1989 का अपना फिलोफैक्स देख रहा हूँ, तो मुझे याद आया कि मैंने नवंबर के आखिरी शनिवार को कैम्ब्रिज में केटल्स यार्ड में बिताने की योजना बनाई थी। मैं चित्रों की एक प्रदर्शनी देखना चाहता था। लेकिन शुक्रवार देर रात सोफी ए. का फोन आने पर मेरी यह योजना रद्द हो गई।
सोफी को एक दोस्त ने मेरा नंबर दिया था और उसे लगा कि उसे किसी से तुरंत बात करने की ज़रूरत है। उसने और उसके मंगेतर निकोलस (निक) ने पिछला सप्ताहांत शादी के निमंत्रण पत्र तैयार करने में बिताया था। सोमवार सुबह, निक ने अपने हिस्से के निमंत्रण पत्र डाक से भेज दिए थे। सोफी की ज़िम्मेदारी वाले साठ निमंत्रण पत्र अभी भी उसके दफ्तर में उसकी डेस्क के नीचे एक बैग में रखे थे। वह उन्हें डाक से भेजने, घर ले जाने या निक को इस बारे में बताने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसे यह भी समझ नहीं आ रहा था कि क्या उसे मुझे फोन करना चाहिए। मैंने उसे अगले दिन परामर्श का प्रस्ताव दिया।
शनिवार को सोफी अपनी मुलाकात के लिए नहीं आई। पंद्रह मिनट बाद, मैंने मान लिया कि उसने आखिरकार निमंत्रण भेज दिए होंगे, या अपने मंगेतर से बात कर ली होगी और अब उसके नतीजों का सामना कर रही होगी। मैं अपने परामर्श कक्ष के बगल में छोटी सी रसोई में कॉफी बना रही थी और डाक खोल रही थी, तभी मेरे दरवाजे की घंटी बजी।
मेरे दरवाजे पर खड़ी महिला लंबी और स्टाइलिश थी। उसके सीधे काले बाल ठुड्डी तक की लंबाई वाले ज्योमेट्रिक बॉब कट में कटे हुए थे। उसने तार के फ्रेम वाला चश्मा पहना हुआ था। उसकी जींस को छोड़कर, उसने जो कुछ भी पहना था, वह सब काला था। वह कुछ हिचकिचाहट के साथ परामर्श कक्ष में दाखिल हुई। अपना कोट उतारे बिना, सोफी मेरे सामने वाली कुर्सी के किनारे पर बैठ गई और देर से आने के लिए कई बार माफी मांगी। उसने बताया कि वह अपने माता-पिता के घर रुक गई थी। वह उन्हें निमंत्रण के बारे में बताना चाहती थी, लेकिन वहां पहुंचकर वह बता नहीं पाई।

“शायद मुझे उनकी प्रतिक्रिया से डर लग रहा है,” उसने कहा। “वे निक को बहुत पसंद करते हैं।” उसने मुझसे फिर माफी मांगी। उसने कहा कि वह खुद जैसी नहीं थी। वह एक राष्ट्रीय समाचार पत्र के लिए कला संवाददाता के रूप में काम करती थी। वह एक जिम्मेदार व्यक्ति थी, अनिर्णायक या आवेगशील नहीं। मैंने पूछा, "क्या आपके साथ पहले कभी ऐसा कुछ हुआ है?"
“कभी नहीं,” उसने कहा।
उसने मुझे निक के साथ अपने रिश्ते के बारे में बताया। उनकी मुलाकात दोस्तों के ज़रिए हुई थी, और शुरुआत में थोड़ी उलझन आई थी जब उसे लगा कि निक को अभी भी अपनी पुरानी प्रेमिका में दिलचस्पी है। उनके बीच हमेशा से अच्छी शारीरिक केमिस्ट्री थी। बेशक, कुछ बातें थीं जो उसे परेशान करती थीं। निक को हाल ही में लंदन की एक यूनिवर्सिटी में इतिहास के लेक्चरर के रूप में नौकरी मिली थी, और उसे लगता था कि वह बहुत ज़्यादा काम करता है। बर्तनों और घर के कामों को लेकर उनके बीच रोज़ाना की नोकझोंक होती रहती थी। निक अभी भी थोड़ा बचकाना था, लेकिन क्या सभी पुरुष ऐसे ही नहीं होते? “मेरे साथ रहना आसान नहीं है,” उसने कहा। “मैं उससे भी उतनी ही व्यवस्थित रहने की उम्मीद करती हूँ जितनी मैं हूँ। अगर मैं उसे सुपरमार्केट से दस चीज़ें लाने भेजूँ और वह उनमें से आठ लेकर वापस आए, तो मेरे लिए अपनी झुंझलाहट छिपाना मुश्किल हो जाता है। मेरे चेहरे पर ऐसा भाव आ जाता है जैसे मैं कह रही हूँ, ‘मुझे खुद ही कर लेना चाहिए था’।”
लेकिन निक इस तरह की बातों पर उससे नाराज़ नहीं होता था, उसने कहा। दूसरे बॉयफ्रेंड नाराज़ हो जाते थे। वह कुर्सी पर आगे की ओर झुक गई। उसने अपना कोट खोला और उसे अपने कंधों से पीछे हटा लिया। “मिस्टर ग्रोज़, मैं निक से प्यार करती हूँ। मुझे किसी और की ज़रूरत नहीं है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि मेरे साथ क्या हो रहा है। मुझे डर लग रहा है।”
सोफी नॉटिंग हिल में पली-बढ़ी थी, जो पोर्टोबेलो रोड के पास स्थित है। वहाँ उसके माता-पिता का प्राचीन वस्तुओं का व्यवसाय था। वे चिमनियों, दरवाजों के फर्नीचर, फर्श, बगीचे की सजावट की वस्तुएँ, रोशनी, दर्पण, वस्त्र और कालीन जैसी पुरानी इमारतों से संबंधित पुरानी वस्तुएँ बेचते थे। उसे बहुत बुरा लग रहा था कि वह उन्हें शादी के निमंत्रण के बारे में नहीं बता पाई। वह आमतौर पर अपने माता-पिता को सब कुछ बता देती थी। वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी और उनसे बहुत प्यार करती थी।

मैंने सोफी से उसके खान-पान और नींद के बारे में पूछा। उसने बताया कि वह सुबह जल्दी उठ जाती है, बेचैन रहती है और उसे भयानक सपने आते हैं। पिछली रात बहुत खराब गुज़री थी। उसे डर था कि कहीं हमारी मुलाकात छूट न जाए, इसलिए वह बार-बार अलार्म घड़ी देखने के लिए उठी। सुबह होने के करीब, उसे गहरी नींद आ गई और उसने एक सपना देखा।
“मैंने सपना देखा कि मैं अपने मम्मी-पापा के साथ चेंजिंग रूम में थी। हम सबको कपड़े उतारकर शावर की तरफ जाना था। अचानक मुझे एहसास हुआ कि हम सब पर गैस छोड़ी जाने वाली है। मैं कुछ नहीं कर सकती थी। हम चेंजिंग रूम में नहीं रुक सकते थे। हमें आगे बढ़ना था, दरवाजे से बाहर निकलना था। हम सब मरने वाले थे।” उसने मेरी तरफ देखा। “और फिर मैं जाग गई।”
“मैं ऐसा सपना क्यों देखूंगी?” उसने मुझसे पूछा।
मेरी चुप्पी से सोफी असहज महसूस करने लगी।
वह हिचकिचाई, फिर उसने मुझे बताया कि वह यहूदी नहीं है; निक भी नहीं है। होलोकॉस्ट का यह विषय उसके मन में कभी आया ही नहीं था। कुछ महीने पहले, प्राइमो लेवी की मृत्यु के ठीक बाद, उसने टेलीविजन पर उनके बारे में एक डॉक्यूमेंट्री देखी थी और उनकी एक किताब भी पढ़ी थी, लेकिन काफी समय हो गया था। उसका सपना उसे समझ नहीं आ रहा था। हम चुपचाप एक-दूसरे के सामने बैठे रहे।
एक-दो मिनट बाद मैंने उससे पूछा कि वह क्या सोच रही थी।
उसने अपनी सगाई की अंगूठी घुमाई, मुझसे कहा कि उसे शर्म आ रही है और उम्मीद जताई कि मैं इसे गलत नहीं समझूंगा, लेकिन जब उसकी सहेली ने उसे मुझसे मिलने आने का सुझाव दिया था, तो उसके मन में यह ख्याल आया था कि शायद मैं यहूदी हूं। ग्रोज़ एक यहूदी नाम है, है ना? उसने फ्रायड के बारे में सोचा था। वह यहूदी थे। सोफी रुक गई। "मैं बहुत बुरी लग रही हूं। मुझे नहीं पता कि मैंने होलोकॉस्ट के बारे में सपना क्यों देखा।"
मुझे अंतर्ज्ञान था कि सोफी का सपना यातना शिविरों, होलोकॉस्ट या यहूदी धर्म के बारे में नहीं था—उसकी चिंता किसी आंतरिक विपत्ति का संकेत दे रही थी। फिर भी, हालांकि वह अपने विचारों को ईमानदारी और खुलेपन से व्यक्त कर रही थी, और हालांकि सपना देखने में सरल लग रहा था, मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि मैं इसे समझने में संघर्ष कर रहा था। मैं अटक गया था।

मुझे फ्रायड की एक बात याद आई—अगर वे किसी मरीज़ के सपने को पूरी तरह से नहीं समझ पाते थे, तो वे मरीज़ से उसे दोहराने के लिए कहते थे। आमतौर पर, मरीज़ अपने वर्णन में थोड़ा-बहुत बदलाव कर देता था—फ्रायड के अनुसार, सपने के जिन हिस्सों का वर्णन अलग तरीके से किया जाता था, वे सपने के छलावे में "कमज़ोरी" के रूप में सामने आते थे।
जब मैंने सोफी से सपना दोहराने को कहा, तो उसने लगभग वैसे ही बताया जैसे पहली बार बताया था। लेकिन जब उसने चेंजिंग रूम का वर्णन किया, तो उसने एक और बात जोड़ दी। उसने अपनी बाहें उठाते हुए कहा, "यह बहुत बड़ा नहीं था। यह ऐसा था, लगभग इस कमरे के आकार का।"
“यह कमरा, मेरा परामर्श कक्ष”—मैंने भी अपने हाथ ऊपर उठा लिए—“एक प्रकार का चेंजिंग रूम है।”
सोफी का चेहरा भावहीन हो गया, फिर वह मुस्कुराई। "मुझे लगता है ऐसा ही है, लेकिन इसका क्या मतलब है?" उसने कहा।
मैंने समझाया कि उसका सपना—मेरे कार्यालय में देर से आना और नींद न आना— यह दर्शाता है कि वह हमारी मुलाकात को लेकर चिंतित थी।
“क्या यहाँ आने वाले ज़्यादातर लोग गैस चैंबर के बारे में सपने नहीं देखते?” उसने अपने टखनों को कुर्सी के नीचे दबाते हुए कहा। “मैं गैस चैंबर के बारे में सपने क्यों देखूँगी?”
मैंने उसे बताया कि उसका सपना इस डर को व्यक्त कर सकता है कि आगे बढ़ने से — बदलने से—उसके माता-पिता के साथ उसका जीवन नष्ट हो जाएगा।
उन्होंने कहा, "मैं खुद को बदलाव से डरने वाले व्यक्ति के रूप में नहीं देखती।"
“आप बदलाव चाहते हैं—शादी करना, नया परिवार शुरू करना। लेकिन मुझे लगता है कि आप इस बात से चिंतित हैं कि यह घटनाक्रम आपके बचपन के परिवार के लिए खतरा बन सकता है।”
"क्या आपको लगता है कि मैं शादी नहीं करना चाहती?"
मैंने कहा, "मुझे ऐसा कुछ सुनाई नहीं दे रहा है।"
मैंने सोफी से कहा कि मुझे लगता है कि वह दुविधा में फंसी हुई है। वह एक नया परिवार बनाना चाहती थी, लेकिन अपने पुराने परिवार को तोड़ना नहीं चाहती थी। भले ही उसे निमंत्रण पत्र न भेजने का पछतावा हो, लेकिन उसके ये कदम निक और उसके माता-पिता दोनों की रक्षा करने का एक तरीका भी थे। "अगर

तुम उससे अपना रिश्ता खत्म करना चाहतीं, तो तुम उसे बता देतीं कि तुम यह रिश्ता आगे नहीं बढ़ा सकतीं।"
“आप कह रहे हैं कि मैं न आगे जा सकती हूँ और न पीछे हट सकती हूँ। मैं समझती हूँ। यह चालाकी है,” उसने कहा। लेकिन वह यह जानना चाहती थी कि फैसला कैसे लिया जाए। क्या उसे शादी करनी चाहिए या नहीं? “मुझे उम्मीद थी कि आप इस मामले को सुलझाने में मेरी मदद कर सकते हैं।”
सोफी ने अपने हाथों को अपने चारों ओर लपेट लिया, फिर मेरी तरफ देखा। "मैं कब आगे बढ़ पाऊंगी?"
मैंने कहा, "मुझे नहीं पता। अभी तो ऐसा लगता ही नहीं कि तुम यह कर पाओगे।" "क्या यही है?"
मैंने उससे कहा कि मैं भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर सकता।
एक और बात थी जिसने मुझे झकझोर दिया। "तुम्हारी चिंता की तीव्रता—मुझे ऐसा लगता है कि यह शादी से कहीं अधिक किसी और चीज़ के बारे में है—जैसे कि जब तुम निमंत्रण भेजोगी, तो तुम सचमुच अपने माता-पिता को नष्ट कर दोगी।" सोफी ने इस बारे में सोचा। उसने मुझे बताया कि कभी-कभी अपने माता-पिता को अलविदा कहने और उनके घर से निकलने के बाद, उसे चिंता होती थी कि जब वह वहाँ नहीं होती थी तो वे आपस में बात नहीं करते थे। जब भी वह उनके सामने कोई समस्या रखती थी—जैसे पैसों की चिंता, स्वास्थ्य संबंधी समस्या, या उसके फ्लैट में कोई खराबी—तो वे फिर से एक-दूसरे के करीब आ जाते थे। और हाँ, वे उसकी शादी की तैयारियों में भी मदद कर रहे थे।
जब वह बोल रही थी, तो मेरे मन में एक ऐसी महिला की छवि बनी जिसने कई वर्षों से अपने माता-पिता के साथ किसी न किसी काम के ज़रिए रिश्ता बनाए रखा था— उन्हें अपने जीवन के अनुभवों में शामिल करके—ताकि उनकी शादी को बचाए रखने में मदद मिल सके। मैंने सोफी को यह बात बताई। मेरे द्वारा "बचाए रखने" शब्द के प्रयोग से वह चौंक गई।
सोफी के जन्म से पहले, उसने मुझे बताया, उसकी माँ के कई गर्भपात हुए थे। आखिरकार, कई वर्षों के प्रयास के बाद, उसकी माँ ने ऐनी नाम की एक बच्ची को जन्म दिया, जो समय से पहले पैदा हुई थी। जीवन के पहले कुछ महीनों तक ऐनी ग्रेट ओर्मंड स्ट्रीट चिल्ड्रन्स हॉस्पिटल के इनक्यूबेटर में रही। सोफी के माता-पिता उसे घर लाने के छह महीने बाद, सोफी की माँ सुबह उठी तो उसने

ऐनी को पालने में मृत पाया। उस समय, उसके माता-पिता ने और बच्चे पैदा करने की सारी उम्मीद छोड़ दी।
लेकिन उनके लिए यह बहुत आश्चर्य की बात थी—उनकी माँ इकतालीस वर्ष की थीं — कि उन्हें सोफी हो गई थी। उनके माता-पिता सोफी को समय-समय पर "हमारी छोटी सी चमत्कार" कहकर पुकारते थे। सोफी को बचपन से ही यह एहसास था कि उसके माता-पिता को डर था कि कहीं कोई दुर्घटना उसे भी न छीन ले।
मुझे लगा कि उसके अस्तित्व को लेकर यही डर उन तीनों के बीच घनिष्ठ संबंध का कारण बना। इससे हमें उसके सपने को थोड़ा बेहतर समझने में भी मदद मिली— परिवर्तन परिवार के अस्तित्व के लिए खतरा है।
“मैं देख सकती हूँ,” सोफी ने कहा। वह अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर बैठ गई। उसकी खामोशी को सुनते हुए, मैं सोचने लगी कि हानि का हमारा अनुभव ही हमें आकार देता है। दुनिया और उसके भोजन को पाने के लिए हम गर्भ और स्तन खो देते हैं। स्कूल, खेल, दोस्तों के लिए हम माँ का प्यार खो देते हैं। और अगर हमें कभी आत्मीयता का अनुभव करना है, तो हमें अपने किशोरावस्था के स्वरूप और प्रेम से जुड़ी उन अपूरणीय अपेक्षाओं को छोड़ना होगा। समय बीतने के साथ, हम अपने बचपन, लोगों और स्थानों को खो देते हैं, और अंततः, जीवन को ही। अंततः, हम उन सभी चीजों को खो देते हैं जिनसे हमने प्रेम किया है।
बेशक, यह सब मेरे काम से मेरे लिए परिचित था, फिर भी मैंने अतीत को त्यागने की आवश्यकता को इस हद तक कभी महसूस नहीं किया था ताकि वर्तमान को अपनाया जा सके, एक पुराने रिश्ते को छोड़कर एक नए रिश्ते की ओर बढ़ा जा सके - वह अपरिहार्य नुकसान जो प्रेम के मूल में है।
इस खुली चर्चा में, लगभग नब्बे मिनट बीत चुके थे, और अब सोफी का सवाल बदल गया था: अब सवाल यह नहीं था कि क्या उसे निक से शादी करनी चाहिए, बल्कि यह था कि क्या वह शादी से होने वाले नुकसानों को स्वीकार कर पाएगी? मैंने उसे यही बताया।
सोफी ने गहरी सांस ली। उसने कहा, "मुझे नहीं पता कि मैं क्या करने वाली हूं, लेकिन मुझे हल्कापन महसूस हो रहा है।"
हालांकि हमें उसकी दुविधा की केवल प्रारंभिक समझ ही थी, लेकिन मैंने इसका यह अर्थ निकाला कि उसके सपने ने हमें कुछ ऐसा दिखाया है, सोफी का एक ऐसा पहलू जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। उसका यह छिपा हुआ हिस्सा अब उसके लिए विचार करने, समझने का अवसर लेकर आया था।

मुझे लगा कि यहीं रुकना उचित रहेगा। मैंने सोफी से मंगलवार शाम को दोबारा मिलने का सुझाव दिया। वह मान गई। यह एक उत्साहवर्धक शुरुआत थी।
सोमवार की सुबह देर से सोफी ने मेरे आंसरिंग मशीन पर एक संदेश छोड़ा। उसने बताया कि वह जल्दी ऑफिस चली गई थी, कैरी बैग ले आई थी और निमंत्रण पत्र पोस्ट कर दिए थे। उसने मुझे धन्यवाद दिया। हमारी बातचीत ने उसे फैसला लेने में मदद की थी—वह निक से प्यार करती थी और उससे शादी करना चाहती थी। वह मंगलवार को मुझसे नहीं मिल सकती थी, लेकिन अगले एक-दो दिन में फोन करके मिलने का समय तय कर लेगी। उसने कहा, "मुझे लगता है कि आपसे दोबारा मिलना मेरे लिए बहुत मददगार होगा।"
उस हफ्ते सोफी से मेरी कोई खबर नहीं मिली, न ही अगले हफ्ते। दरअसल, कई सालों तक उससे कोई संपर्क नहीं हुआ।

2

दो साल बाद, 1991 में, सोफी की एक अच्छी दोस्त बताने वाली एक युवती ने मुझे परामर्श के लिए फोन किया। उसने बताया कि सोफी को लगता है कि मैं उसकी मदद कर सकती हूँ। 1998 में, सोफी की एक और दोस्त बताने वाली एक महिला ने भी मुझसे मिलने का समय मांगा। 2004 में भी ऐसा ही हुआ। हर बार, मैं सोचती थी कि कहीं ये सिफारिशें सोफी की ओर से कोई संदेश तो नहीं हैं, शायद वह मुझे यह बताना चाहती हैं कि वह मुझे भूली नहीं हैं, या शायद वह खुद मुझसे बात करना चाहती हैं लेकिन किसी आंतरिक झिझक के कारण ऐसा नहीं कर पा रही हैं। ज़ाहिर है, क्योंकि मैंने उसे सालों से नहीं देखा था—मैं उसे ठीक से जानती भी नहीं थी—इसलिए मुझे यह समझ नहीं आता था कि सोफी के लिए इन सिफारिशों का क्या मतलब है।

3

2015 में क्रिसमस से ठीक पहले—हमारी पहली मुलाकात के छब्बीस साल बाद— सोफी ने मुझे एक वॉइसमेल छोड़ा। उसने कहा, "मुझे उम्मीद है कि मैं आकर आपसे बात कर सकूँगी।" उसकी आवाज़ में बेचैनी झलक रही थी, इसलिए मैंने उसे अगले दिन मिलने का समय देते हुए एक संदेश छोड़ा।
रात के खाने के बाद, मैंने अपनी पत्नी और बच्चों के साथ ताश खेला। मैं लगातार हारता रहा, जिससे मेरी बेटी बहुत खुश हुई। जब बच्चे सो गए, तो मैंने अपनी किताब पढ़ना जारी रखा, लेकिन मुझे ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई हो रही थी।
शनिवार की सुबह ठंडी और धूप खिली हुई थी। नाश्ते के बाद, मैंने अपने लिए एक कप ताज़ी कॉफ़ी डाली और अपने परामर्श कक्ष को तैयार करने के लिए नीचे चली गई—लाइटें जलाईं, रेडिएटर को ठीक किया, ठंडे पानी का जग और एक नया गिलास रखा—और सोफी के साथ अपनी पहली बैठक के नोट्स देखे।
हालांकि मेरा कार्यालय मेरे घर वाली ही इमारत में है, लेकिन यह एक अलग फ्लैट है। मेरा परामर्श कक्ष अन्य मायनों में भी अलग है। हमारे घर में, अक्सर पारिवारिक बातचीत तात्कालिक ज़रूरतों के बारे में होती है—क्या मैं आपके लिए एक कप चाय बना दूं? रात के खाने में क्या है? क्या आपके पास

आपका स्कूल बैग है? लेकिन मेरे परामर्श कक्ष में समय ठहर सा जाता है। चालीस वर्षों से, कमरा और उसमें रखी चीज़ें लगभग वैसी ही हैं, और यह निरंतरता अतीत से जुड़ाव की भावना को और भी गहरा कर देती है। मेरे मरीज़ों और मेरे लिए, अपने परामर्श कक्ष में प्रवेश करना बचपन की उन रस्मों जैसी याद दिलाता है—क्रिसमस पर दादा-दादी के घर जाना, या समुद्र किनारे उसी हॉलिडे कॉटेज में जाना; यह स्थान और इसमें रखी वस्तुएँ बीते हुए पलों की याद दिलाती हैं।
अपनी कुर्सी पर बैठकर, अपने नोट्स पढ़ते हुए, मैंने सोफी को याद करने की कोशिश की। वह कौन थी? उसके लिए सोफी होना कैसा था? पिछले पच्चीस वर्षों में, मेरी शादी हो गई, बच्चे हुए, और मैंने इस कमरे में मरीजों के साथ हजारों घंटे बिताए। जब मैं पहली बार सोफी से मिली थी, तब मैं बस शुरुआत कर रही थी—मुझे क्या पता था? यह सब बहुत पहले की बात है। उस समय उसकी बातें सुनने वाली 37 वर्षीय मनोविश्लेषक कौन थी?
दस:15 बजे दरवाजे की घंटी बजी। सोफी के सीधे काले बाल अब सफेद हो चुके थे, लेकिन फिर भी ठुड्डी तक करीने से कटे हुए बॉब कट में थे। हमेशा की तरह, उन्होंने काले कपड़े पहने थे। हम मुस्कुराए और हाथ मिलाया। उन्होंने मेरा अभिवादन ऐसे किया जैसे बस थोड़ी देर का ब्रेक हो, लेकिन मेरे परामर्श कक्ष की ओर गलियारे में चलते हुए मुझे एहसास हुआ कि मैं उन्हें कितना बूढ़ा लग रहा हूँ। उन्होंने मुझे समय निकालने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने अपना चमड़े का कोट और भारी स्कार्फ अपनी कुर्सी के पीछे टांग दिया। मेरा मन हुआ कि मैं कहूँ कि काफी समय हो गया है, लेकिन मैं यह सुनना चाहता था कि वह कैसे शुरू करेंगी।
उसने मेरी तरफ देखा। "मुझे यह तय करना होगा कि मुझे अपनी शादी खत्म करनी है या नहीं।"

4

एक महीने पहले, निक डरहम में एक इतिहास सम्मेलन में मुख्य वक्ता थे। उनके भाषण के अगले दिन सुबह, सोफी ने फोन करके पूछा कि कार्यक्रम कैसा रहा। एक महिला ने उनका मोबाइल फोन उठाया। उसने कहा, "चिंता की कोई बात नहीं है;

उन्हें गहन चिकित्सा कक्ष से छुट्टी मिल गई है और वे अपने कमरे में हैं— वे अब आराम कर रहे हैं।"
पिछली रात होटल में उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। सोफी ने लेवेस से अगली ट्रेन पकड़ी। डरहम पहुँचते ही वह सीधे यूनिवर्सिटी अस्पताल गईं। निक बिस्तर पर सो रहे थे और उनकी बांह में ड्रिप लगी हुई थी। उन्होंने हृदय रोग विशेषज्ञ से बात की—वही महिला जिसने उनके मोबाइल का जवाब दिया था— जिन्होंने सोफी को आश्वासन दिया कि निक पूरी तरह से ठीक हो जाएंगे। सोफी ने फिर टैक्सी लेकर निक के होटल गईं। काउंटर पर उन्होंने मैनेजर से कहा कि उन्हें प्रोफेसर एम. के कमरे की चाबी चाहिए; वह उनका सामान लेने आई हैं। मैनेजर ने उम्मीद जताई कि प्रोफेसर अब बेहतर महसूस कर रहे होंगे। उन्होंने सोफी को बताया कि निक का सामान कंसीयज के पास है। उन्होंने कहा, "प्रोफेसर की पत्नी ने पहले ही उनका कमरा पैक कर दिया है।" सोफी ने पूछा, "क्या आप उनकी सहकर्मी हैं?"
सोफी हैरान रह गई। उसे अब समझ आया कि कुछ संकेत तो थे— उनके क्रेडिट कार्ड से की गई ऐसी खरीदारी जिसे वह पहचानती नहीं थी, शैम्पेन की एक बोतल जो अब फ्रिज में नहीं थी। निक को लगातार ज़्यादा से ज़्यादा टेक्स्ट मैसेज आ रहे थे। एक-दो बार उसने उनकी कार में या उसके कपड़ों पर वही अपरिचित गंध महसूस की थी। "मैंने गौर किया था," उसने मुझसे कहा। "लेकिन मैंने इस बारे में ज़्यादा सोचा नहीं।"
सोफी को अपनी शादी के बारे में मुझे क्या बताना है, यह समझ नहीं आ रहा था। शादी के बाद, उनके बीच प्यार भरा रिश्ता था—निक बहुत प्यारा, ध्यान रखने वाला और देखभाल करने वाला इंसान था। लेकिन किसी कारण से, जब बच्चे छोटे थे, तो उसके लिए सोफी की चाहत कम हो गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हुआ। उसका दिल कहाँ चला गया? वह बच्चों से बहुत प्यार करती थी। उसका सारा ध्यान उन्हीं पर था; शायद निक के लिए उसके दिल में कुछ बचा ही नहीं था। या शायद, जब बच्चे छोटे थे, तो वे दोनों अलग-अलग रास्तों पर चले गए थे। "शायद हम एक-दूसरे से बिछड़ गए," उसने कहा। लेकिन फिर, बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी। निक ने अपने करियर में कड़ी मेहनत की। वह उसकी लगन की प्रशंसक थी। "लेकिन मैं नहीं चाहती कि आप यह सोचें कि हमारी शादी में सिर्फ उसका करियर ही मायने रखता है," उसने मुझसे कहा। "उसने हमारे परिवार और मेरे लिए सचमुच कई त्याग किए हैं।"

आठ साल पहले, निक को एक अमेरिकी विश्वविद्यालय से जीवन में एक बार मिलने वाला सुनहरा अवसर मिला था। इसका मतलब था अधिक पैसा, अधिक प्रतिष्ठा और अपनी पसंद के काम के लिए अधिक समय। निक की स्थिति में कई शिक्षाविद इस प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार कर लेते। लेकिन परिवार के लिए कैलिफ़ोर्निया जाने का यह सही समय नहीं था। बच्चे अभी स्कूल में थे और कई वर्षों तक बच्चों की परवरिश और स्वतंत्र रूप से काम करने के बाद, सोफी को एक महत्वपूर्ण साहित्यिक उत्सव में स्थायी नौकरी मिल गई थी। हालांकि निक के लिए यह आसान नहीं था, फिर भी उन्होंने प्रस्ताव ठुकरा दिया। इस फैसले के बाद कुछ समय के लिए सोफी को निक के प्रति अपनापन महसूस हुआ, लेकिन फिर यह भावना समाप्त हो गई।
निक को दिल का दौरा पड़ने के बाद के हफ्तों में सोफी उसके अफेयर के बारे में बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाई। उसने देखा कि निक अपना मोबाइल लेकर बाथरूम में चला जाता था, और कभी-कभी छुप-छुपकर फोन भी करता था। लेकिन ज़्यादातर समय उनका ध्यान सिर्फ़ उसकी सेहत में सुधार पर ही केंद्रित था। बाईपास सर्जरी के कारण कमज़ोर हो चुके निक सोफी पर निर्भर थे। सोफी उनके लिए खाना बनाती, उन्हें डॉक्टर के पास ले जाती, और उन्हें नहलाती थी।
फिर एक दिन नाश्ते के दौरान निक ने कहा कि उसे विश्वविद्यालय स्थित अपने कार्यालय से कुछ कागजात लेने हैं। सोफी को उस पर विश्वास नहीं हुआ। पिछली शाम को वह लगातार मैसेज कर रहा था। इसलिए उसने सच बता दिया: उसने उसे होटल में हुई घटना के बारे में बताया। दोनों काफी देर तक चुप रहे।
सोफी उस महिला को जानती थी, उसने मुझे बताया। वे कुछ डिनर पार्टियों में मिले थे, और उसे याद था कि जब वह इतिहास विभाग में शामिल हुई थी, तब निक ने उसके बारे में बड़े उत्साह से बात की थी। सोफी ने कहा, "लगता है वह फोटोग्राफी के इतिहास में एक प्रतिभाशाली युवा है। मिली—उसका नाम यही है — न केवल लिखती है, बल्कि उसने विक्टोरिया एंड अल्बर्ट संग्रहालय में फोटोग्राफी और किसी अन्य विषय पर एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया है। वह युवा है, बत्तीस साल की है, अविवाहित है।"
निक ने सोफी को बताया कि डरहम में सम्मेलन से ठीक पहले ही उन्होंने एक-दूसरे के साथ सोना शुरू किया था। सोफी ने कहा, "कौन जाने? मुझे लगता है कि मिली जानती है कि वह क्या चाहती है, और वह निक को चाहती है। और वह कहता है कि उसके साथ संबंध बनाने, उसे छोड़ने का विचार उसे लुभा रहा है।"

लेकिन रसोई में उसके साथ बैठे-बैठे सोफी को यकीन नहीं हुआ। उसने कहा, “मुझे पता है कि वह उसके साथ एक नई जिंदगी शुरू नहीं करना चाहता। बच्चों को बताना, घर बेचना, दो फ्लैट खरीदना—हमारी जिंदगी को अलग करना—वह इसके लिए तैयार नहीं है। फिर उसके साथ बच्चे पैदा करना? मुझे समझ नहीं आता। निक ऐसा नहीं चाहता।”
सोफी रुक गई। “मैं तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ। बेशक, मुझे दुख है, जलन है, थोड़ा डर भी है—लेकिन मेरा एक हिस्सा उत्साहित भी है। डरहम से ही मेरे मन में ये ख्याल आ रहा है कि यही वो मौका है जब मैं निक को छोड़ सकती हूँ। मैं अभी निक को छोड़ सकती हूँ और कोई मुझे दोष नहीं देगा। उसका अफेयर मेरे लिए ‘मुसीबत से निकलने का आसान रास्ता’ है।”
मुझसे संपर्क करने से एक रात पहले, निक ने सोफी से कहा था कि वह मिली से रिश्ता तोड़ने के लिए तैयार है। वे दोनों बिस्तर पर साथ लेटे थे, और उसने सोफी से कहा कि वह यह सोच भी नहीं सकता कि उसका परिवार फिर कभी रसोई की मेज पर एक साथ नहीं बैठ पाएगा। उसे अपना बनाया हुआ परिवार, अपना साथ बिताया जीवन—छुट्टियाँ, जन्मदिन—सब बहुत प्यारे थे। उसने सोफी से कहा कि वह उससे प्यार करता है। यह कहते ही सोफी घबरा गई।
“इसीलिए मैं आपसे मिलने आया हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा कि मुझे क्या करना चाहिए—रुकना चाहिए या चले जाना चाहिए?”
सोफी चुपचाप मेरी प्रतिक्रिया का इंतजार कर रही थी।
मैंने अपनी मेज पर रखी घड़ी देखी। तीस मिनट बचे थे। कुछ देर तक—पता नहीं कितनी देर तक—मैं सोच में डूबा रहा। जैसे ही मैं सोफी से पूछने वाला था कि वह इस शादी को अपने लिए कैसे समझाती है, उसने चुप्पी तोड़ी—“मिस्टर ग्रोज़?”
मैंने सोफी से कहा कि मैं सोच-विचार कर रही हूँ। मुझे चिंता थी कि वह फैसला लेने के लिए खुद पर बहुत दबाव डाल रही थी। "तुम आज कई पहेलियाँ लेकर आई हो, लेकिन तुम ज़िद कर रही हो कि हम सिर्फ एक का ही जवाब दें।"
थोड़ा शांत होते हुए सोफी ने कहा कि उस सुबह लंदन जाते समय उन्हें यह एहसास हुआ कि वह एक ऐसी दुविधा में फंसी हुई हैं जो वर्षों पहले की दुविधा से बिल्कुल उलट है। उन्होंने कहा, "तब मैं यह तय नहीं कर पा रही थी कि शादी करूं या नहीं। अब मैं यह तय नहीं कर पा रही हूं कि तलाक लूं या नहीं।"

मुझे प्रॉस्ट की एक रचना याद आ गई जिसमें वे एक कमल के फूल का वर्णन करते हैं, और दो बिंदुओं के बीच उसकी निरंतर, कभी न रुकने वाली गति का। नदी तल से अपने तने से बंधी हुई, वह हमेशा आगे-पीछे खिंचती रहती है। कमल के फूल को देखते हुए, अपनी चाची के बारे में सोचते हुए, कथाकार को यह अहसास होता है कि यही वह चीज़ है जो उसे फंसाए रखती है। साल दर साल, चाहे कोई भी समस्या हो, वह अपने इसी आगे-पीछे के विचारों में उलझी रहती है, कभी उससे आगे नहीं बढ़ पाती। मैंने कहा, "तुम ऐसे व्यवहार कर रहे हो जैसे तुम्हारे पास केवल दो ही विकल्प हों।"
"मुझे तो ऐसा ही लगता है," उसने कहा।
मुझे सोफी से हुई अपनी पहली मुलाकात याद आ गई। वह असमंजस में थी, एक विकल्प चुनने में असमर्थ थी। हमने इस दुविधा को तभी तोड़ा जब हमें एहसास हुआ कि हम गलत सवाल पूछ रहे थे। सवाल यह नहीं था कि उसे निक से शादी करनी चाहिए या नहीं, बल्कि यह था कि क्या वह शादी और प्यार से होने वाले नुकसानों को स्वीकार कर पाएगी? मैंने सोफी को इस बदलाव की याद दिलाई।
तो अब सही सवाल क्या है?
मैंने कहा कि मुझे नहीं पता, और इसे समझने में हमें कुछ समय लग सकता है। मैंने सुझाव दिया कि हम मिलते रहें, और यह उनके और निक के लिए मददगार साबित हो सकता है कि वे मेरे एक सहकर्मी, जो एक विवाह चिकित्सक हैं, से बात करें। “नहीं,” सोफी ने कहा। “अभी तो नहीं; जब तक मुझे पता नहीं चल जाता कि मैं क्या चाहती हूँ।”
मुझे उसकी बात समझ में आ गई। हमने नए साल से शुरू करके, हर सोमवार को, सप्ताह में एक बार मिलने का फैसला किया। हमने फीस भी तय कर ली। मैंने उससे पूछा कि क्या उसके कोई सवाल हैं। उसने सिर हिलाकर मना कर दिया।
फिर मैंने कहा, "मेरा एक और सवाल है।"
उसने मेरी तरफ देखा।
“तुम वापस क्यों नहीं आए? जब हम पहले मिले थे तब क्यों नहीं?”
"वापस आओ?"
"हाँ।"
सोफी खड़ी हो गई। "मुझे नहीं पता।" उसने कुर्सी के पीछे से अपना कोट और स्कार्फ उठाया। "मेरी शादी हो रही थी, फिर बच्चे हुए, सब ठीक चल रहा था, फिर — मुझे नहीं पता।"

तुम मुझे याद दिलाती हो कि वे कहाँ रहते हैं, वे क्या करते हैं। तुम्हें लगता है कि मैं शार्लोट, एमिली, हेलेन और जो को भूल सकती हूँ।”
सोफी ने कहा कि मेरे द्वारा उनके नाम सुनने पर उसे आश्चर्य हुआ। उसके अंदर कुछ पिघल गया। उसकी माँ, जो अपनी प्राचीन वस्तुओं की दुकान में रखी हर चीज़ की उत्पत्ति बता सकती थी, सोफी की सबसे अच्छी सहेलियों के नाम कभी याद नहीं रख पाती थी। शार्लेट "चश्मा पहनने वाली" थी, एमिली "सड़क के उस पार रहने वाली" थी, और हेलेन "जिसके पिता द इकोनॉमिस्ट में काम करते थे" थी।
अगली सोमवार को जब मैं उससे दोबारा मिली, तो सोफी ने बताया कि हमारे पिछले सेशन के बाद से उसके मन में बचपन की यादें उमड़ रही थीं, उसके माता-पिता की लापरवाहियों की घटनाएं। उसने बताया कि जब उसकी माँ उसे गलत यूनिफॉर्म में स्कूल भेज देती थी या जब वह स्कूल के गेट से सबसे आखिर में लेने आती थी, तो उसे कितनी शर्मिंदगी महसूस होती थी। इसी वजह से वह आत्मनिर्भर किशोरी बनी। अब जब वह खुद माँ बन चुकी थी, तो सोफी को यह समझना मुश्किल लग रहा था कि उसके माता-पिता में से किसी को भी यह कैसे पता नहीं था कि वह कौन से ए लेवल के विषय लेने वाली है।
क्योंकि सोफी के माता-पिता ऐनी की यादों में हमेशा डूबे रहते थे, जो सोफी के जन्म से एक साल पहले मर गई थी, इसलिए सोफी को उनकी यह बेपरवाही बहुत बुरी लगती थी। बेशक, वह समझ सकती थी कि वे ऐनी के जन्मदिन पर उसकी कब्र पर जाकर और ग्रेट ऑरमंड स्ट्रीट चिल्ड्रन हॉस्पिटल को दान देकर उसे याद करना चाहते थे, लेकिन बचपन में सोफी को तब बहुत बुरा लगता था जब उससे पूछा जाता था कि क्या उसने अपनी प्रार्थनाओं में ऐनी को याद किया है। या फिर, एक बार जब उसने देखा कि उसकी माँ के पर्स में ऐनी की दो तस्वीरें थीं, लेकिन उसकी एक भी नहीं। एक बार, जब वह तेरह या चौदह साल की थी, तो उसने अपनी माँ से इस बारे में बात करने की कोशिश की, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे या कैसे कहे। उसने कहा, "ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी दीवार से बात कर रही हूँ।"
हमने मृत शिशु के प्रति उसके माता-पिता के लगाव और सोफी से उनके अलगाव पर चर्चा की। हमने इस विचार पर गौर किया कि यद्यपि सोफी का पालन-पोषण सामान्य और स्नेहपूर्ण प्रतीत होता था—बाहरी तौर पर उसकी कभी उपेक्षा नहीं की गई — फिर भी कुछ कमी थी। क्या यह जिज्ञासा की कमी थी? उसके माता-पिता ने उसे एक अच्छे स्कूल में भेजा और बीमार होने पर उसकी बहुत अच्छी देखभाल की।

में ज़्यादा सोचूँगी। "शायद—जैसे तुम्हारी माँ जीवित बच्चे से ज़्यादा अनुपस्थित बच्चे को पसंद करती थी—तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारे जीवित होने से ज़्यादा तुम्हारे अनुपस्थित होने को पसंद करूँगी।"

6

अगले हफ्ते मेरी सोफी से मुलाकात नहीं हुई। लंबा वीकेंड था और निक सोफी को एक ग्रामीण स्पा होटल में ले गया था। जब हम अगली बार मिले, तो उसने बताया कि यात्रा पूरी तरह से खराब रही।
एक बेहद परेशान करने वाला झगड़ा तब हुआ जब एक अच्छे दिन और साथ में डिनर के बाद, निक सेक्स करना चाहता था और समझ नहीं पा रहा था कि सोफी ने उसे क्यों मना कर दिया। सोफी ने उसे बताया कि वह दुविधा में है। उसने निक के अफेयर को उनके बीच की दूरी का नतीजा, उनकी शादी का ही एक हिस्सा मान लिया था—लेकिन फिर भी, वह कुछ भी ऐसा नहीं करने वाली थी जो वह नहीं करना चाहती थी। निक को लग रहा था कि शादी को फिर से संवारने की उसकी कोशिशें नाकाम हो रही हैं। “निक सिर्फ आपसी माफी से ज़्यादा कुछ चाहता है। वह कहता है कि वह चाहता है कि हम अलग तरह से सोचें, खुलकर बात करें, ज़्यादा सेक्स करें, और ज़्यादा गहराई से प्यार करें।”
सप्ताहांत ने सोफी के वैवाहिक जीवन को लेकर संदेह को और पुख्ता कर दिया था। वह बार-बार उनके अलगाव की कल्पना करने लगी, खुद को लंदन के एक फ्लैट में रहते हुए देखने लगी, जैसा कि वह अपनी जवानी के दिनों में रहती थी। वह बच्चों के करीब होगी और निक की अत्यधिक निर्भरता से दूर रहेगी।
“जब आप कुछ महीने पहले मुझसे मिलने आई थीं, तो हमें यह नहीं पता था कि आपकी दुविधा से निकलने में आपकी मदद करने के लिए सही सवाल क्या हो—कि आपको रुकना चाहिए या जाना चाहिए। शायद सवाल यह है: क्या आप आगे बढ़ने के लिए निक को छोड़ना चाहती हैं, या यह अंतरंगता से बचने का एक तरीका हो सकता है?” "आपका क्या मतलब है?"
मुझे आश्चर्य होता है कि क्या तलाक आपकी शादी को जारी रखने का एक तरीका है। मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा है।
मैंने सोफी से कहा कि निक के साथ उसकी बहस में कुछ जीवंतता, कुछ जोशीलापन था। बेशक, किसी भी शादी की तरह, उसकी शादी भी दो अलग-अलग कल्पनाओं और

कहानियों का मिश्रण थी, और मैं केवल वही कहानी जानती थी जो वह मुझे बता रही थी—लेकिन, उसके अनुसार, जनवरी से ही निक उसके साथ एक नई शादी बनाने की कोशिश कर रहा था, एक ऐसी शादी जिसमें वे एक-दूसरे के करीब हों। मैंने उसे याद दिलाया कि जब निक ने उससे कहा कि वह शादी में रहना चाहता है, कि वह उससे प्यार करता है, तो वह घबरा गई थी। "मेरा मतलब है कि तुम निक से ज़्यादा अपनी दूरी को लेकर आसक्त हो।"
"आप कह रहे हैं कि मेरी वैवाहिक समस्याएं 'मृत शिशु' होने, अनुपस्थित शिशु होने की इस बात से जुड़ी हैं।"
मुझे लगता है कि आप निक से दूरी बनाए रखने के लिए, यानी अपनी अनुपस्थिति के लिए, उससे तलाक लेना चाहती हैं। निक आपसे दोबारा शादी करना चाहता है, एक सही वैवाहिक जीवन जीना चाहता है। आप इस बात से डरी हुई हैं।
सोफी ने माना कि वह हमेशा से ही सतर्क रही है। लेकिन शादी में आई इस दूरी ने उसे दुखी भी कर दिया था। उसने कहा कि वह मेरी बात समझ रही है, उसे सही लग रहा है, लेकिन वह उस रिश्ते से क्यों जुड़ी रहना चाहेगी जो उसे दुखी कर रहा है?
"निक और तुम्हारे बीच की दूरी तुम्हें दुखी तो करती है, लेकिन यह जानी- पहचानी है—और इसी वजह से यह सुरक्षित महसूस होती है। तुम्हारा दुख सुरक्षित है।"
सोफी कुछ देर तक चुप रही। थोड़ी देर बाद मैंने उससे पूछा कि वह क्या सोच रही थी।
उसने अपने विचारों के क्रम को याद करने की कोशिश की। हमारी बातचीत ने उसे उदास कर दिया था—नहीं, बल्कि निराश कर दिया था। फिर वह अपने रिश्तों के बारे में सोचने लगी। “मुझे चिंता है कि क्योंकि मेरे माता-पिता ने कभी मुझसे ठीक से लगाव नहीं किया, इसलिए मैं भी कभी ठीक से लगाव नहीं कर पाऊंगी। मुझे चिंता है कि मेरे रिश्तों में कुछ कमी है—बच्चों से, निक से। और मुझे हमारी पहली मुलाकात याद आ रही थी, वो शादी के निमंत्रण पत्र जो मैं भेज नहीं पाई थी। मैं बहुत डर गई थी। मुझे वो भयानक सपना आया था।”
एक पल के लिए हम दोनों चुप रहे। सड़क के उस पार फुटपाथ पर एक कुत्ता भौंका। मुझे लगा कि सोफी को हमारी पहली मुलाकात याद आ रही होगी क्योंकि उस दिन का हमारा सेशन उस पहली मुलाकात से बहुत मिलता-जुलता था। तब उसे एहसास हुआ था कि निक के साथ अपनी नई जिंदगी के लिए उसे अपने माता-पिता, उनके तीन लोगों

की दुनिया को छोड़ना होगा। अब अगर उसे सचमुच शादीशुदा जिंदगी जीनी है, तो उसे अपने आप का एक हिस्सा—अपनी दूरी, अपना यह खास तरीका—छोड़ना होगा।
मैंने उसे यह बात बताई।
“मैं देख रही हूँ,” उसने कहा। “मैं देख रही हूँ।”
अगले कुछ हफ्तों में, हमने इस बातचीत से उठे मुद्दों पर चर्चा जारी रखी। सोफी को अपने अनुभव को व्यक्त करने के लिए सही शब्द ढूंढने में समय लगा, और हमें अपनी नई समझ के निहितार्थों को समझने में। जून के अंत में, सोफी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसे और निक को वैवाहिक चिकित्सक के पास भेज सकती हूँ।
अगस्त की छुट्टियों से पहले हमारे आखिरी सेशन में सोफी धूप से झुलसी नाक के साथ आई। उसने निक के साथ ससेक्स तट पर सप्ताहांत बिताया था। चलते-चलते वह शोक के बारे में सोचने लगी। उसने बताया कि उसके माता-पिता सोचते थे कि शोक का मतलब स्थिति से निपटना होता है। "मुझे यह समझ नहीं आया कि शोक का मतलब वास्तविकता को स्वीकार करना होता है।"

7

अगले सोमवार, मेरी अगस्त की छुट्टियों के पहले दिन, मैं अपने कुत्ते को लेकर सुबह-सुबह हैम्पस्टेड हीथ पर टहलने निकला। खुले आसमान में, जिसका रंग बैंगनी से नारंगी में बदल रहा था, मैं सोफी के बारे में सोच रहा था, हमारी पहली मुलाकात के बारे में, जो इतने साल पहले हुई थी। मैं अपनी शादी के बारे में सोच रहा था। और फिर मैं उस मेहनत के बारे में सोच रहा था जो हमें एक-दूसरे तक पहुँचने के लिए करनी होगी।
जब मैं घर पहुंचा, तो मैं अपने परामर्श कक्ष में गया, अपनी नोटबुक निकाली, एक नया पृष्ठ खोला और यह कहानी लिखना शुरू किया।

खोया प्यार

इंटरनेट, ईमेल और मोबाइल फोन के आने से पहले, मेरे एक परिचित वैवाहिक चिकित्सक ने मुझे एक पत्र भेजा जिसमें उन्होंने अपने एक मरीज़ से मिलने का अनुरोध किया था। मरीज़ का नाम डॉ. रवि एम. था और वे तैंतालीस वर्षीय गणित के व्याख्याता थे। रवि और उनकी पत्नी वैवाहिक उपचार ले रहे थे। चिकित्सक का मानना था कि रवि की पत्नी, डॉ. सोनल एम., जो भौतिकी की व्याख्याता थीं, अपने वैवाहिक जीवन को बेहतर बनाने के लिए उत्सुक थीं और उपचार के प्रति प्रतिबद्ध थीं। लेकिन उन्हें रवि उतने उत्साहित नहीं दिखे। चिकित्सक ने उन्हें "संकोची" बताया। उन्हें उम्मीद थी कि व्यक्तिगत मनोविश्लेषण से रवि को खुलकर बोलने में मदद मिलेगी।
मेरे सहकर्मी के अनुसार, पति-पत्नी के बीच सहयोग नामुमकिन था। वे छोटी- बड़ी हर बात पर एक साथ काम करने में असमर्थ थे। उदाहरण के लिए, रवि अपनी पत्नी को यह बताने से इनकार कर देता था कि वह रात के खाने के लिए कब घर आएगा। वहीं, सोनल उसके साथ टहलने जाने, साथ में फिल्म देखने या यहाँ तक कि सोफे पर बैठकर टीवी कार्यक्रम देखने से भी कतराती थी। दोनों अपनी-अपनी ही दुनिया में खोए रहते थे।
दस साल से शादीशुदा रवि और सोनल दो बेटियों (सात और पांच साल की) के माता- पिता थे। वे अपनी बेटियों के बारे में बात करते ही झगड़ने लगते थे। अपने पत्र के अंत में मेरे सहकर्मी ने लिखा, “वे पुराने ख्यालों के, यहाँ तक कि रूढ़िवादी भी लग सकते हैं। सच्चाई यह है कि उनका वैवाहिक जीवन प्रेमपूर्ण था। हाल तक वे सप्ताह में कम से कम दो बार शारीरिक संबंध बनाते थे और उसका आनंद लेते थे। दोनों अपने यौन संबंध को ‘चमत्कारी’ जैसे शब्दों से वर्णित करते थे। उनमें प्रेम और मित्रता दोनों थी, लेकिन कुछ बदल गया।” उन्होंने आगे लिखा, “मुझे विश्वास है कि वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं। मुझे लगता है कि वे खुश रह सकते हैं, लेकिन कुछ उन्हें एक दंपत्ति बनने से रोक रहा है। रवि का कम बोलना इस समस्या का एक बड़ा कारण है।”
हमारी पहली मुलाकात में, रवि यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मैं हमारी बातचीत को विवाह चिकित्सक के साथ साझा न करूँ। जब मैंने उसे आश्वस्त किया,

तो रवि ने बताया, "उसे लगता है कि मैं कम बोलती हूँ, लेकिन मैं एक कारण से कम बोल रही हूँ।"
रवि ने मुझे बताया कि उसके जन्म के तुरंत बाद, उसकी माँ अवसादग्रस्त हो गई और उसके पिता घर छोड़कर चले गए। उसके माता-पिता का तलाक हो गया और उसके पिता कनाडा चले गए, जहाँ उन्होंने दूसरा परिवार बसा लिया। रवि अपनी माँ और दादी के साथ लंदन में ही रहा। सत्रह साल की उम्र तक उसने अपने पिता को दोबारा नहीं देखा। “मैं जानता हूँ कि तलाक क्या होता है। यह एक भयानक त्रासदी है। मैं अपनी बेटियों के साथ एक ही घर में न रहने की बात सोच भी नहीं सकता।”
मैं खुद को यह कहने से रोक नहीं पाया, "अगर आप तलाक से बचना चाहते हैं, तो क्या अपनी पत्नी से बात करना और अपनी समस्याओं को कपल्स थेरेपी में लाना सबसे अच्छा नहीं होगा?"
रवि हँस पड़ा। उसने कहा कि वह सोनल का सामना कभी नहीं करेगा। यह बहुत खतरनाक था। वह उससे प्यार करता था। उसे विश्वास था कि अगर वे इस विषय से बच सकें, इस बारे में कभी बात न करें, तो शायद वे तलाक की तबाही से बच सकें। “अगर मैं इस समस्या के बारे में बात करता हूँ, या इससे भी बुरा, अगर वह इसके बारे में बात करना शुरू कर देती है—तो बस। हमें तलाक लेना ही पड़ेगा। मैं उसे अपनी गलती कबूल करते हुए नहीं सुनना चाहता।”
“क्या कबूल करना है?”
रवि हिचकिचाया, हमारे बीच फर्श की ओर देखा और बोला, "सोनल का किसी के साथ अफेयर चल रहा है।"
उसने ऊपर देखा। “वह एक वकील हैं। वे हमारी ही सड़क पर रहते हैं। हमारे बच्चे एक ही उम्र के हैं; वे एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। उनका नाम राकेश है।”
मैंने इंतजार किया।
उन्होंने आगे कहा, “लगभग एक साल पहले राकेश की पत्नी को स्तन कैंसर का पता चला था। सोनल उनके घर खाना पहुंचाने लगी और सामान लाने-ले जाने में मदद करने लगी। हमारे समुदाय में हम एक-दूसरे की मदद करते हैं।”
कभी-कभी, बेटियों की डांस क्लास के बाद, जब दोनों परिवार साथ होते थे, रवि ने देखा था कि सोनल राकेश से बात करते समय उसके हाथ को छूती थी। “मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया। फिर, लगभग एक साल पहले, मैंने उन्हें उसके घर के सामने

गहरा, राकेश के बालों जैसा। उसने उस बाल को एक लिफाफे में रखा और विश्वविद्यालय में अपनी डेस्क में बंद कर दिया। उसने कहा, "अगली बार इसे ले आऊंगा।"
“रवि, यह तो पागलपन वाली सोच है। पत्नी के अंडरवियर देखकर यह पता नहीं चल सकता कि वह बेवफा है।”
“बिल्कुल कर सकते हैं। शुक्रवार को बाल ज्यादा होते हैं। यह सामान्य दिनचर्या से एक राहत है।”
“क्या आप कोई चार्ट रखते हैं? बालों की संख्या? आपकी पत्नी के अंडरवियर में?”
मुझे ग्राफ की जरूरत नहीं है, मुझे पता है। आंकड़े झूठ नहीं बोलते। वे सच बताते हैं।
रवि के "सबूत" ने मुझे संदेह में डाल दिया। क्या यह किसी प्रकार का एक लक्षण वाला मनोविकार था? क्या वह ओथेलो था? शायद उसका किसी के साथ संबंध था? मैं केवल वही जान सकती हूँ जो मेरे मरीज़ मुझे बताते हैं। सोनल का राकेश के साथ एक गर्मजोशी भरा रिश्ता था, शायद थोड़ा-बहुत नखरे वाला भी। लेकिन रवि ने मुझे एक ऐसी महिला के बारे में बताया था जो अनुमान लगाने योग्य, भरोसेमंद माँ और विद्वान थी: एक विश्वसनीय महिला जो अपने परिवार के प्रति समर्पित थी। जब मैंने रवि को सीसीटीवी टेप देखने का सुझाव दिया कि सोनल का किसी के साथ संबंध है या नहीं, तो इससे उसे कोई राहत नहीं मिली—वह अपनी बात पर अड़ा रहा, इस विश्वास पर अड़ा रहा कि वह बेवफा थी: क्यों?
जब मैं इन विचारों में उलझा हुआ था—जो कुछ मुझे अभी बताया गया था उसे समझने की कोशिश कर रहा था—रवि अपने "सबूत" को लेकर और भी ज़्यादा उत्तेजित होता जा रहा था। जब कोई मरीज़ बहुत ज़्यादा बेचैन हो जाता है, तो मैं उसे वर्तमान की उत्तेजना से दूर, अतीत की ओर ले जाने की कोशिश करता हूँ।
“हमारे पास बस कुछ ही मिनट बचे हैं, और मैं तुमसे अगले हफ्ते तक नहीं मिल पाऊँगी,” मैंने कहा। “मैं तुम्हारे बचपन के बारे में सोच रही थी, जब तुम एक ऐसी माँ के साथ अकेली थी जो मानसिक रूप से टूट चुकी थी, एक ऐसी माँ जो गंभीर अवसाद में डूबी हुई थी। मुझे लग रहा था कि शायद तुम भी अवसादग्रस्त हो गई होती।”
“क्या एक बच्चा अवसादग्रस्त हो सकता है?” रवि ने पूछा।

“आपने जो कुछ भी बताया है, उससे लगता है कि कई बार आपकी माँ न तो अपना और न ही आपका ख्याल रख पाती थीं। मैं समझ सकती हूँ कि आप उन पर निर्भर थे और उनका कोई जवाब नहीं मिलता था। हाँ, मुझे लगता है कि इससे बच्चा अवसादग्रस्त हो सकता है।”
रवि बस गया।
सन्नाटे में, मैंने रवि के बचपन के कष्टों की भयावहता की कल्पना की: उसके पिता का चले जाना, उसकी माँ का उसकी पुकारों का जवाब न देना। रवि का यह भ्रम परित्याग के भय से बचाव का एक तरीका हो सकता है—सोनल पर भरोसा न करने का एक बचाव।
मैंने कहा, "मुझे लगता है कि सोनल की बेवफाई के बारे में आपकी धारणाएं अंतरंगता के खतरों से खुद को बचाने का एक तरीका हो सकती हैं। आप प्यार से डरते हैं।"

—

यह मामला इतना पेचीदा था कि मुझे लगा कि मुझे एक मार्गदर्शक की ज़रूरत है। मैंने डॉ. हेरोल्ड स्टीवर्ट को फ़ोन किया, जो एक मनोविश्लेषक थे और जिन्हें मैं अपने प्रशिक्षण के दौरान जानता था। उनकी यह ख्याति थी कि वे मरीज़ के उन विचारों और भावनाओं को सुन लेते थे जिन्हें मरीज़ शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाता था। डॉ. स्टीवर्ट मनोविश्लेषक बनने से पहले लगभग बीस वर्षों तक एक सामान्य चिकित्सक रहे थे और उनके पास अपार अनुभव था।
रवि के साथ मेरे सत्र के दो दिन बाद, मैं डॉ. स्टीवर्ट के परामर्श कक्ष में कॉफ़ी पी रहा था। उनका सीना चौड़ा था, भुजाएँ मजबूत थीं और आँखें गहरे भूरे रंग की थीं। गरीब यहूदी अप्रवासियों के पोते, डॉ. स्टीवर्ट का जन्म ईस्ट एंड में हुआ था—वे अक्सर कहते थे, "बो बेल्स की आवाज़ की सीमा के भीतर"— जिसकी वजह से उस समय वे ब्रिटिश मनोविश्लेषणात्मक सोसायटी में एकमात्र कॉकनी मनोविश्लेषक थे।
घिसी-पिटी चेकदार कमीज़, मुलायम धूसर पतलून और पुराने चमड़े के चप्पलों में हैरोल्ड को देखकर ऐसा लग रहा था मानो वह अभी-अभी बगीचे में कुछ काम करके लौटा हो। यह बात इतनी पुरानी थी कि उसके मनोविश्लेषणात्मक सोफे के बगल में उसके मरीजों के इस्तेमाल के लिए फर्श पर रखी एक ऐशट्रे रखी थी।

करना। मुझे इसमें लंबा समय लगा, लेकिन अंततः उसका भ्रम दूर हो गया। अंत में, उसे इसकी ज़रूरत ही नहीं थी।
अगले कुछ महीनों में, रवि जितना अधिक अपने मनोविश्लेषण में खुद को शामिल करता गया—अपनी भावनाओं, सपनों, बचपन की यादों के बारे में—उतना ही कम वह अपने साक्ष्यों के बारे में बोलने लगा। अंततः, एक दिन, हेरोल्ड के साथ मेरे पर्यवेक्षण के एक वर्ष से भी कम समय बाद, उसने इस बारे में बात करना पूरी तरह बंद कर दिया।
रवि और सोनल ने साथ मिलकर काम करना शुरू किया, छोटी-छोटी चीज़ें एक साथ करने लगे—उन्होंने हर रविवार सुबह साथ में लंबी सैर करने की आदत बना ली। जब रवि को कैम्ब्रिज में नौकरी का प्रस्ताव मिला, तो मैं इस बात से प्रभावित हुआ कि उसने विश्वविद्यालय से कहा कि वह यह पद तभी स्वीकार करेगा जब सोनल भी अपना काम जारी रख सकें। इन बदलावों से मेरी मूल परिकल्पना की पुष्टि होती प्रतीत हुई—कि रवि की भ्रामक ईर्ष्या उसे प्रेम के खतरों से बचा रही थी। जब रवि के कैम्ब्रिज जाने का समय आया, तो हमने साथ में काम खत्म करने की तारीख तय कर ली। हालाँकि मुझे लगता था कि उसे अपना विश्लेषण जारी रखना चाहिए—चाहे मेरे साथ या कैम्ब्रिज में किसी मनोचिकित्सक के साथ—फिर भी मैं अपनी उपलब्धियों से खुश था।
कई वर्षों बाद—सोनल से एक अप्रत्याशित टेलीफोन कॉल आने के बाद—मुझे एहसास हुआ कि इस मामले के बारे में मेरी समझ अधूरी थी। मैंने कुछ महत्वपूर्ण बात को नज़रअंदाज़ कर दिया था।

—

2 दिसंबर, 2007 को, डॉ. स्टीवर्ट की मृत्यु के ढाई साल बाद और रवि एम. के मनोविश्लेषण के समाप्त होने के उन्नीस साल बाद, सोनल ने मुझे फोन करके कहा कि वह चाहती है कि रवि मेरे साथ मनोविश्लेषण में वापस आ जाए।
मैंने उसे समझाया कि मैं उससे संपर्क नहीं कर पा रही हूँ, लेकिन अगर वह मुझे फोन करे और मिलना चाहे, तो मैं उपलब्ध रहूँगी। "क्या यह कोई आपातकालीन स्थिति है?" मैंने पूछा।
“मुझे ऐसा ही लगता है।” सोनल ने एक गहरी सांस ली। “संक्षेप में, दो साल पहले मुझे अंडाशय के कैंसर का पता चला था,” उसने कहा। उसकी सर्जरी हुई,

कीमोथेरेपी हुई, और फिर तीन महीने पहले उसे बताया गया कि कैंसर उसके लीवर तक फैल गया है। “मेरे डॉक्टरों ने मुझे बताया है कि अब कुछ भी करने की गुंजाइश नहीं बची है। मेरे पास कुछ महीने हैं, साल नहीं,” उसने कहा।
सोनल ने दोबारा कीमोथेरेपी शुरू कर दी थी, लेकिन इस बार इलाज का मकसद सिर्फ कैंसर की रफ्तार को जितना हो सके धीमा करना था। कई बार कीमोथेरेपी का दर्द असहनीय हो जाता था और हाल ही में वह इलाज बंद करके पैलिएटिव केयर शुरू करने के बारे में सोचने लगी थी। मैंने उसे अपनी संवेदनाएं व्यक्त करने की कोशिश की, लेकिन उसने मेरी बातों को अनसुना कर दिया।
पिछले दो वर्षों में, जब से उसे बीमारी का पता चला था, रवि का स्वभाव लगातार ठंडा और एकांतप्रिय होता जा रहा था। उसने कहा, "बिल्कुल वैसा ही जैसा वह तब था जब वह पहली बार आपसे मिलने आया था। अब जब मैं चौथे चरण में हूँ, तो उसका व्यवहार और भी खराब हो गया है।"
मैंने उससे पूछा कि क्या कोई विशेष घटना घटी थी।
कुछ हफ्ते पहले, उसने मुझे बताया, उसका जन्मदिन था। उसकी बेटियों ने बहुत मेहनत की थी, लेकिन रवि ने उसे एक कार्ड दिया जो सालों से उसकी डेस्क में पड़ा था, और सड़क के किनारे वाली दुकान से फूलों का एक छोटा सा गुलदस्ता दिया। "मेरा पिछला जन्मदिन," सोनल ने कहा। "लेकिन मुझे इस बात से परेशानी नहीं है।"
पिछले दो सालों में, उन्होंने बताया, जब कीमोथेरेपी के कारण रात को नींद नहीं आती थी और डर भी लगता था, तब से वह पारिवारिक व्यंजनों की एक किताब पर काम कर रही थीं। इसमें वे व्यंजन शामिल थे जो वह हर हफ्ते बनाती थीं, साथ ही वे व्यंजन भी जो उनकी बेटियों को बचपन में बहुत पसंद थे, और रवि के पसंदीदा व्यंजन भी। उन्होंने परिवार के जीवन से जुड़ी कहानियाँ भी शामिल करने का फैसला किया, ताकि यह एक तरह से पारिवारिक संस्मरण बन जाए। उन्होंने जन्मदिन और त्योहारों पर परिवार के साथ भोजन करते समय ली गई तस्वीरें, साथ ही यात्राओं के दौरान कैफे और रेस्तरां में ली गई छुट्टियों की तस्वीरें भी ढूंढीं। उन्होंने कहा, "न्यूयॉर्क में बेसबॉल मैच के दौरान पिज्जा खाते हुए हम चारों की एक बहुत ही प्यारी तस्वीर है।" "मैं अपनी कुछ यादें छोड़ना चाहती थी - रवि के लिए, अपनी बेटियों के लिए, उन पोते-पोतियों के लिए जिन्हें मैं कभी नहीं देख पाऊंगी। यह उनके भविष्य के लिए मेरा प्यार जताने का तरीका है।"

सोनल ने रवि या बच्चों को किताब के बारे में नहीं बताया था। कुछ हफ्ते पहले ही उसने किताब छपवाकर जिल्द भरवाई थी ताकि दिवाली पर वह हर बच्चे को एक-एक प्रति दे सके।
उस दिन, सूर्यास्त के ठीक बाद—जब परंपरा के अनुसार वे दीये और मोमबत्तियाँ जलाते थे—रवि ने सिरदर्द का बहाना बनाया और फिर कहा कि शायद उसे फ्लू हो गया है। लड़कियाँ उसे कमरे से नीचे लाने में नाकाम रहीं। “उसने सारा माहौल खराब कर दिया,” उसने कहा।
सोनल और उनकी बेटियाँ सोफे पर आराम से बैठ गईं—एक-एक बेटी उनके अगल-बगल, बिल्कुल वैसे ही जैसे वे बचपन में बैठती थीं—और साथ में किताब पढ़ने लगीं। उन्होंने कहा, “मेरी बेटियों को यह किताब बहुत पसंद आई। लेकिन रवि ने अपनी किताब खोली और उसे अभी भी कागज में लिपटी हुई ही अपने बेडसाइड टेबल पर रख दिया। उसने अंदर देखा तक नहीं।”
उसने आगे कहा, “मेरे थेरेपिस्ट का कहना है कि रवि मुझसे इसलिए नाराज़ है क्योंकि मैं मर रही हूँ। मैं यह बात समझती हूँ, लेकिन मैं खुद को बुरी तरह फंसा हुआ महसूस करती हूँ। जितना ज़्यादा मैं उससे प्यार करती हूँ, उतना ही वह बुरा बर्ताव करता है।”
हम दोनों चुप रहे।
“श्री ग्रोज़, मैंने उन्हें कपल्स थेरेपी में वापस जाने के लिए मनाने की कोशिश की है, लेकिन वे नहीं जा रहे हैं। क्या आप कृपया उनसे मिल सकते हैं?” मैंने सोनल से कहा कि अगर वह मुझसे संपर्क करे, तो मैं करूँगा। और फिर मैंने यह भी कहा कि अगर इससे मदद मिलेगी, तो मैं उन दोनों से मिल सकता हूँ। फोन रखने के बाद मैं काफी देर तक अपनी कुर्सी पर बैठा रहा। आखिरकार मुझे उन्नीस साल पहले रवि के साथ हुई अपनी आखिरी से पहले वाली मुलाकात याद आ गई। किसी भी मनोविश्लेषण के समापन पर, कुछ कार्य करने होते हैं। उदाहरण के लिए, यह महत्वपूर्ण है कि मेरे मरीज़ यह जानें कि वे किसी भी समय मुझसे बात करने के लिए वापस आ सकते हैं, या किसी अन्य मनोचिकित्सक को खोजने में मेरी मदद मांग सकते हैं। कभी-कभी, मैं अपने मरीज़ से कहता हूँ कि यदि उन्हें आगे और मदद की आवश्यकता हो, तो मदद मांगना सफलता का संकेत है, विफलता का नहीं। अक्सर अंतिम से पहले वाले सत्र में—जब मेरा मरीज़ मनोविश्लेषण के बारे में अपने विचार और भावनाएँ बता चुका होता है—मैं अब तक किए गए काम का सारांश प्रस्तुत करता हूँ: हमने क्या हासिल किया है और क्या करना बाकी है।

रवि के मामले में, मैंने उसे याद दिलाया कि वह अब अपने भ्रमपूर्ण ईर्ष्या के चंगुल में नहीं है, और उसे समझाया कि मुझे ऐसा क्यों लगता है। मैंने उसके वैवाहिक जीवन, कार्य जीवन और स्वयं के साथ उसके संबंधों में आए सुधारों का वर्णन किया।
वह सहमत हो गया, फिर चुप हो गया।
मैं एक पल रुका, यह सोचने लगा कि अपनी अगली बात कैसे कहूँ। फिर मैंने कहा कि हालाँकि वह मेरी बात से सहमत था कि ये सुधार हुए हैं, लेकिन उसने कभी आभार व्यक्त नहीं किया। मैंने कहा, "मुझे याद नहीं कि आपने कभी धन्यवाद कहा हो। आगे चलकर, आभार व्यक्त करने या महसूस करने में आपकी असमर्थता के बारे में आपको सोचना चाहिए।"
“मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ। मैं आपको भुगतान करता हूँ, है ना?” उसने कहा।
रवि सोनल के साथ वैसा ही व्यवहार कर रहा था जैसा उसने सालों पहले मेरे साथ किया था। जब अलविदा कहने का समय आया, तो वह धन्यवाद नहीं कहने वाला था।

—

एक महीने बाद मैंने सोनल को ईमेल करके बताया कि रवि ने मुझसे संपर्क नहीं किया है। उसने जवाब दिया कि रवि का रुख नहीं बदला है। वह न तो कपल्स थेरेपी में वापस आएगा और न ही मुझसे मिलने आएगा। मैंने सोनल को पत्र लिखकर अपना दुख व्यक्त किया और उसके अच्छे स्वास्थ्य की कामना की।
इस ईमेल आदान-प्रदान के बाद के दिनों में, मुझे हैरोल्ड से बात करने की तीव्र इच्छा हुई। मैंने यह बात अपनी एक पुरानी दोस्त, मनोचिकित्सक को बताई, जो मृत्युदंड और शोक संतप्त लोगों के साथ काम करती हैं। उन्होंने कहा, "कुछ बातें लिखकर व्यक्त करना सबसे अच्छा होता है। अगर किसी मरीज़ को अपने प्रियजन से कुछ कहना हो, तो मैं उन्हें पत्र लिखने का सुझाव देती हूँ।"
जब मैं घर पहुंचा, तो मैंने अपना कंप्यूटर खोला और टाइप करना शुरू कर दिया। प्रिय हेरोल्ड,
रवि के मनोविश्लेषण में मुझसे कुछ महत्वपूर्ण छूट गया—
कुछ अंधकारमय, विनाशकारी। मुझे रवि की सोनल के प्रति ईर्ष्या नहीं दिखी।

जब उसे उसके प्यार की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है, तब वह उसे दे नहीं पाता। या, वह जो है
उसे देना प्यार जैसा नहीं लगेगा। ईर्ष्या में डूबा रवि ऐसा नहीं कर सकता।
वह ऐसी जगह की ओर बढ़े जहां वह खुद को देख सके।
मुझे बार-बार सेस्लाव की इन कविता की पंक्तियाँ याद आती हैं।
मिलोज़:
प्रेम का अर्थ है स्वयं को देखना सीखना।
दूर की चीजों को देखने का तरीका
क्योंकि तुम अनेक चीजों में से केवल एक हो।
और जो कोई उस मार्ग को देखता है, उसका हृदय ठीक हो जाता है...
ओह हैरोल्ड, मुझे हमारी बातचीत बहुत याद आती है। मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है। मैं तुम्हें हमेशा याद रखूंगी।
हमेशा।
स्टीफन
हैरोल्ड को पत्र लिखने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि यह समस्या हम सभी की है, केवल रवि की नहीं। कभी न कभी, हममें से हर कोई ईर्ष्या या किसी प्रकार की नाराजगी में फंस जाता है, और ऐसे समय में, हमारे चारों ओर पनपने वाली काल्पनिक दुनिया हमारी दृष्टि को अवरुद्ध कर देती है: जिन्हें हम प्यार करते हैं और जिनके हम सबसे करीब होते हैं, वे हमारी अपनी कल्पना की दुनिया के पात्र बन जाते हैं और हम उसमें फंस जाते हैं। हम उनसे अपना संबंध खो देते हैं, और वे हमसे।
ईर्ष्या, शिकायत, क्रोध—ये भावनाएँ हमें जकड़ सकती हैं। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो?…मुझे विश्वास नहीं हो रहा…सच में? हमारी आँखें घुमाना, हमारी तीखी आलोचनाएँ—बोली और अनकही—स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने का एक तरीका हैं। शिकायत को छोड़ना मुश्किल है क्योंकि हमें अपनी श्रेष्ठता की भावना को त्यागना पड़ता है। झुंझलाहट या आक्रोश के सुख को छोड़ना कठिन है, या जिसे मैंने "पवित्रता का आनंद" कहा है। खुद को सही नज़रिए से देखने के लिए वापस लौटना साहस की मांग करता है।
हम यह कैसे करेंगे? मिलोश की कविता एक अच्छी शुरुआत हो सकती है:

प्रेम का अर्थ है स्वयं को देखना सीखना।

दूर की चीजों को देखने का तरीका

मिलोश का कहना है कि प्रेम—मनोविश्लेषण की तरह—आत्म-चिंतन, पुनर्विचार का एक साधन हो सकता है: एक ऐसी जगह जहाँ हम खुद से, अपनी भावनाओं से, अपनी वास्तविकता से सवाल कर सकते हैं।
परिचित चीज़ों में गहराई से उतरना कठिन काम है। यह तर्क दिया जा सकता है कि पृथ्वी के आकार को जानने में सबसे बड़ी बाधा अज्ञानता नहीं, बल्कि यह "ज्ञान" था कि पृथ्वी चपटी है। स्वयं को जानने में सबसे बड़ी बाधा अज्ञानता नहीं, बल्कि हमारा "आत्मज्ञान" है। प्रेम के लिए आवश्यक है कि हम स्वयं को देखने के अपने तरीके को त्याग दें, स्वयं को उन तरीकों से देखें जो शायद हमें पसंद न हों।
रवि मुझसे मिलने कभी वापस नहीं आया। उसे प्यार चाहिए था, हाँ, और उसे यह भी लगता था कि वह प्यार दे रहा है। वह खुद को ठीक से नहीं देख पा रहा था और अंत में, उसने प्यार की मेहनत करने से इनकार कर दिया: हमारी कहानी को नए सिरे से समझने का निरंतर कार्य। उस मेहनत के बिना वह सोनल को नहीं देख सकता था। बीमारी के उसे हमेशा के लिए छीन लेने से पहले ही वह उसके लिए खो चुकी थी, और वह उसके लिए।

एक असंभव इच्छा

1

मनोविश्लेषक के रूप में योग्यता प्राप्त करने के दो साल बाद, मैंने हैम्पस्टेड में पोर्टमैन क्लिनिक में एक पदभार ग्रहण किया, जो एक फोरेंसिक मनोचिकित्सा इकाई है। कभी-कभी, मैं किसी अपराधी की पत्नी, पति या बच्चे का इलाज करता था, लेकिन मेरे पास आने वाले अधिकांश मरीज़ स्वयं अपराध कर चुके थे। मेरे कुछ मरीज़ों का हिंसा का इतिहास था। एक ने अपने पिछले मनोचिकित्सक पर हमला किया था, लेकिन यह एक अलग कहानी है।
पोर्टमैन क्लिनिक का संचालन डॉ. मर्विन ग्लासर करते थे, जो मेरे सुपरवाइज़र थे। डॉ. ग्लासर ने यौनिकता, अपराध, आक्रामकता, अनाचार और बाल यौन शोषण पर शोध पत्र लिखे थे। उनकी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपार ख्याति थी। वे अपने उस विचार के लिए सबसे अधिक जाने जाते थे जिसे वे हम सभी में निहित "मूल जटिलता" कहते थे, जो दो विपरीत चिंताओं से मिलकर बनी होती है: समाहित होना और परित्याग। उनके विचार में, जन्म से ही हमारे भीतर दूसरों के साथ गहन आत्मीयता की गहरी लालसा होती है, और फिर भी यही लालसा हमें स्वयं को स्थायी रूप से खोने के भय में बदल सकती है। दूसरी ओर, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की हमारी इच्छा हमें उस स्थिति में ले जा सकती है जहाँ हमें भुला दिए जाने का भय होता है। ये दोनों चिंताएँ तब सक्रिय हो जाती हैं जब हम प्रेम करते हैं। अनिवार्य रूप से, प्रियजन हमारी इच्छित दूरी बनाए रखने में विफल हो जाते हैं—वे बहुत बार फोन करते हैं, या समय पर फोन नहीं उठाते।
जब मैंने क्लिनिक में काम शुरू किया, तब तक डॉ. ग्लासर पोर्टमैन के निदेशक के रूप में लगभग बीस साल बिता चुके थे—वे सेवानिवृत्ति के करीब थे। उनकी उम्र बासठ वर्ष थी और मेरी उम्र सैंतीस वर्ष थी। वे मुझसे कुछ दूरी बनाए रखते थे। एक शांत स्वभाव के व्यक्ति होने के बावजूद, उन्होंने मेरे पेशेवर विकास में औपचारिक, लगभग गंभीर रुचि दिखाई। मेरे पहले मामलों में एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की पत्नी शामिल थीं, जिन्होंने हैरोड्स से ब्रेड चुराई थी; हैकनी का एक सोलह वर्षीय लड़का जिसने अपने स्कूल में आग लगा दी थी; एक दोषी प्रदर्शनकारी; एक पुरुष नर्स जो अचानक हिंसक कृत्यों के लिए

प्रवृत्त था; और एक उनतीस वर्षीय बैरिस्टर, जिसने स्वयं क्लिनिक में संपर्क किया था—वह ऊँची एड़ी के जूते पहनकर अंडरग्राउंड में यात्रा करती थी, ताकि जानबूझकर पुरुषों के पैरों पर कदम रखकर उन्हें दर्द पहुँचा सके। एक दिन, स्टाफ मीटिंग के बाद, डॉ. ग्लासर ने मुझे एक तरफ बुलाकर एक अनुरोध किया। वे चाहते थे कि मैं एक इक्कीस वर्षीय महिला का केस लूँ जो हाल ही में जेल से रिहा हुई थी। उसने अपने कार्यस्थल से लगभग 30,000 पाउंड चुराने के आरोप में पंद्रह महीने की सजा काटी थी। उन्होंने कहा, "मेरे पास कोई पद खाली नहीं है, वरना मैं खुद उसका केस ले लेता। उसका समय बहुत बुरा बीता है।" उनकी आवाज़ में एक तरह की बेचैनी थी। "उसे मदद की ज़रूरत है। क्या मैं उसकी फाइल आपकी ट्रे में रख सकता हूँ?"
केट एफ. की फाइल असामान्य रूप से मोटी थी: इसमें पंद्रह वर्ष की आयु से लेकर अब तक की पुलिस और चिकित्सा रिपोर्टें, एक सामाजिक कार्यकर्ता का बयान, विभिन्न गवाहों के बयान, अदालत के लिए एक मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन, उसके वकीलों द्वारा क्लिनिक को लिखे गए पत्र, विभिन्न कानूनी दस्तावेज, क्लिनिक समन्वयक और उसके परिवीक्षा अधिकारी के बीच कुछ पत्राचार, साथ ही अखबारों की कतरनें शामिल थीं। इन पन्नों पर जगह-जगह पीले रंग के पोस्ट-इट नोट्स चिपके हुए थे—जिनमें से कई पर "अत्यावश्यक" लिखा हुआ था।
फाइल में सबसे हालिया वस्तु—इस ढेर के शीर्ष पर—स्कॉटलैंड के एक वकील द्वारा लिखे गए हालिया पत्र की एक फोटोकॉपी थी, जिसमें केट को एलास्डेयर एफ नामक व्यक्ति से संपर्क न करने की चेतावनी दी गई थी। पत्र का निष्कर्ष यह था:

आपके और मिस्टर एफ के बीच के इतिहास को देखते हुए, उन्हें लगता है कि आपका पत्राचार और टेलीफोन कॉल परेशान करने वाले, विचलित करने वाले और अवांछित।
वह नहीं चाहता कि आप उसे पत्र लिखें या फोन करें।
वह आपसे मिलना या बात करना नहीं चाहता। संक्षेप में, वह नहीं चाहता
मैं आपसे किसी भी प्रकार का कोई भी संपर्क रखना चाहता हूँ।
उनके कानूनी प्रतिनिधियों के रूप में, हम आपसे अनुरोध करते हैं कि कृपया संपर्क न करें।
उसे फिर से।

यह पत्र किसने लिखा था? क्या घटना हुई थी?
फाइल में और गहराई से देखने पर मुझे डॉ. ग्लासर की अदालती रिपोर्ट मिली। सत्रह साल की उम्र में केट को सहायक लेखाकार की नौकरी मिल गई। एक साल बाद उसने रोज़ाना लगभग 100 पाउंड कमाना शुरू कर दिया। वह पैसे खर्च नहीं करती थी; वह उन्हें अपने कमरे में छिपा देती थी। जब उसे गिरफ्तार किया गया, तो उसने चुराए हुए 30,000 पाउंड अपने मालिकों को लौटा दिए। डॉ. ग्लासर ने पूछा, केट पैसे क्यों चुरा रही थी जिसे वह खर्च नहीं करती थी?
डॉ. ग्लासर ने अपने निष्कर्ष में लिखा कि केट की चोरी को भावनात्मक अभाव की प्रतिक्रिया के रूप में सबसे अच्छी तरह समझा जा सकता है; यह उसके मनोवैज्ञानिक नुकसानों को दूर करने का उसका प्रयास था। उसने पीड़ा झेली थी। उसका अपराध बाहरी, भौतिक वास्तविकता की मांगों के अनुसार नहीं, बल्कि आंतरिक, मानसिक वास्तविकता की मांगों के अनुसार किया गया था। अचेतन रूप से, वह न्याय की तलाश कर रही थी। कारावास से उसे कोई लाभ नहीं होगा; बल्कि इससे उसे नुकसान होगा। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि कारावास की सजा पूरी तरह से अनुचित थी।
उनकी रिपोर्ट का अंतिम पैराग्राफ, जैसा कि आमतौर पर तब होता था जब वे कारावास की सजा के खिलाफ तर्क देते थे, इस प्रकार था:

आदरपूर्वक, यदि न्यायालय हमारी सलाह स्वीकार करे—कि सुश्री एफ. को यह प्राप्त नहीं होता है
कारावास की सजा—हम अनुरोध करेंगे कि मनोचिकित्सा को इसका आधार न बनाया जाए।
वैकल्पिक वाक्य की स्थिति। प्रभावी होने के लिए, चिकित्सा को निम्नलिखित की आवश्यकता होती है:
यह स्वैच्छिक रूप से किया जाना चाहिए। हमारा मानना है कि सुश्री एफ को मनोचिकित्सा की आवश्यकता है।
मदद करें, और इससे लाभ भी उठा सकती हैं। यदि कभी भी वह हमारी सहायता मांगे, तो हम
उसे इलाज उपलब्ध कराने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा।

खाली स्टाफ रूम में, मैंने अपने लिए एक कप कॉफी डाली, खिड़की के पास एक आरामदायक कुर्सी ढूंढी और फाइल को खंगालना शुरू कर दिया।
शुरुआती दस्तावेजों में से एक केट के डॉक्टर का पत्र था। इसमें परिवार के इतिहास के बारे में थोड़ी जानकारी दी गई थी। जब केट आठ महीने की थी, तो थके- हारे श्री एफ. उसे और अपनी पत्नी को डॉक्टर के पास ले गए और मदद मांगी: "वह एक शांत बच्ची है; मेरी पत्नी ही हमेशा रोने लगती है।"
श्रीमती एफ. को प्रसवोत्तर अवसाद से पीड़ित मानते हुए, डॉक्टर ने उन्हें एक विशेषज्ञ मनोचिकित्सक के पास भेजा; श्रीमती एफ. ने डॉक्टर द्वारा दी गई सलाह और अवसादरोधी दवाइयों को लेने से इनकार कर दिया। कई साल बाद, जब श्री एफ. ने अपनी पत्नी के साथ बिगड़ते संबंधों के बारे में बात की, तो डॉक्टर ने उन्हें वैवाहिक परामर्शदाता से बात करने का सुझाव दिया; श्रीमती एफ. ने इस सुझाव को भी अस्वीकार कर दिया। इस पृष्ठभूमि में, डॉक्टर के अनुसार, तेरह वर्ष की आयु तक केट का शेष जीवन "सामान्य" था।
एक सामाजिक कार्यकर्ता की रिपोर्ट, जो केट और उसकी माँ के साथ साक्षात्कार पर आधारित थी, में आगे की घटनाओं का वर्णन किया गया है। शनिवार का दिन सैलून में उसकी माँ के लिए सबसे व्यस्त दिन होता था, इसलिए केट अपना समय अपने पिता के साथ बिताती थी। आमतौर पर, दोपहर के आसपास, केट और उसके पिता दोपहर के भोजन के लिए पब जाते थे—दोनों मछली और चिप्स खाते थे—फिर वे चेल्सी का मैच देखने के लिए टेम्स नदी के किनारे-किनारे स्टैमफोर्ड ब्रिज तक पैदल जाते थे।
चौदह साल की होने से कुछ महीने पहले, एक शनिवार को, जब उसकी माँ काम पर जाने वाली थी, उसके माता-पिता के बीच झगड़ा हुआ। अपने कमरे से केट अपनी माँ को रोते हुए और अपने पिता पर चिल्लाते हुए सुन सकती थी। ("तुम्हें लगता है तुम बहुत होशियार हो।" "तुम्हें हमेशा सब कुछ पता होता है।" "काश तुम मुझे छोड़कर चले जाते।") तभी उसने सामने का दरवाज़ा ज़ोर से बंद होने की आवाज़ सुनी। थोड़ी देर बाद, केट नीचे आई तो उसने अपने पिता को ज़मीन पर गिरा हुआ पाया—उन्हें दिल का दौरा पड़ गया था। उसने 999 पर कॉल किया। एम्बुलेंस उनके घर की ओर तेज़ी से आ रही थी, तभी ऑपरेटर ने उसे सीपीआर करने का तरीका बताया। जब तक पैरामेडिक्स पहुँचे, केट के पिता की मृत्यु हो चुकी थी। अगले सितंबर में, केट के चाचा, जो उसके पिता के सबसे छोटे भाई थे, कंप्यूटर विज्ञान की पढ़ाई करने के लिए लंदन आए। यह उनका घर से दूर पहला अनुभव था।

ए: काफी देर तक हमने कुछ नहीं किया। हम बस एक-दूसरे को गले लगाते रहे। क्यू: फिर उसने तुम्हें छुआ?
ए: हां।
प्रश्न: उसने आपको कहाँ छुआ?
ए: हर जगह।
प्रश्न: ठीक कहाँ?
ए: यहाँ। (अपने स्तनों और योनि की ओर इशारा करते हुए।) क्यू: क्या आपको वह तारीख याद है, जब उसने आपकी योनि को छूना शुरू किया था? ए: मुझे याद नहीं है। यह तुरंत नहीं हुआ था। हम काफी देर तक एक-दूसरे से लिपटे रहे।
प्रश्न: बहुत लंबा समय?
ए: छह महीने। नहीं, उससे भी ज़्यादा। छह महीने से भी ज़्यादा। प्रश्न: क्या उसने कभी तुम्हारे अंदर अपना लिंग डाला था?
ए: हां।
प्रश्न: यह कब हुआ?
ए: मुझे याद है, मेरे जन्मदिन के ठीक बाद। प्रश्न: आपके पंद्रहवें जन्मदिन के ठीक बाद?
ए: हां।
प्रश्न: उस समय आपके चाचा की उम्र उन्नीस वर्ष रही होगी? उत्तर: मुझे नहीं पता—हाँ।
प्रश्न: क्या आपके चाचा ने कभी आपको धमकी दी थी?
ए: नहीं, कभी नहीं।
प्रश्न: जब उसने अपना लिंग आपके अंदर डाला तो क्या आपको डर लगा? उत्तर: नहीं, बुरे तरीके से नहीं।
प्रश्न: किस तरह से?
ए: मुझे डर था कि हम पकड़े जाएंगे।

फाइल में अगला दस्तावेज़ उसी महिला जासूस के सामने एलास्डेयर का गवाही बयान था। उसने अपनी चोट और धोखे की भावना को व्यक्त किया—"वे मेरे साथ ऐसा कैसे कर सकते हैं?" साथ ही, उसने केट को दोषी ठहराया ("वह मेरे साथ सोती थी") और अपने रिश्ते को तर्कसंगत ठहराया ("वह रोमियो और जूलियट की जूलियट से बड़ी है")। जासूस द्वारा लिखित, उसकी गवाही जारी रही:

प्रश्न: क्या आप मुझे अपने पिछले यौन संबंधों के बारे में बता सकते हैं? उत्तर: हम दोनों के लिए यह पहली बार था।
प्रश्न: क्या केट ने कभी आपके द्वारा उसके योनि में लिंग डालने पर आपत्ति जताई? उत्तर: ज्यादातर हम गले मिलते थे।
प्रश्न: क्या केट ने कभी आपके द्वारा उसके योनि में लिंग डालने पर आपत्ति जताई थी? उत्तर: हमने ऐसा बहुत बाद में किया—ज़्यादातर तो हम बस एक-दूसरे को गले लगाते थे। प्रश्न: मैं आपसे यह प्रश्न फिर से पूछ रहा हूँ: क्या केट ने कभी आपके द्वारा उसके योनि में लिंग डालने पर आपत्ति जताई थी?
ए: नहीं, हम दोनों यही चाहते थे—अगर वो नहीं चाहती तो मैं ऐसा नहीं करता। मैं उसे कभी चोट नहीं पहुँचाऊँगा। मैं उससे प्यार करता हूँ।

कई महीनों बाद, एलास्डेयर को जेल भेज दिया गया और उसका नाम यौन अपराधियों की सूची में डाल दिया गया। वह केट के साथ संपर्क में रहना चाहता था, लेकिन अदालत ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया।
सत्रह साल की उम्र में केट ने स्कूल छोड़ दिया। उसकी माँ की एक सहकर्मी ने सुना कि वह गणित में अच्छी है, तो उसने सोहो की एक फैशन कंपनी में सहायक लेखाकार की नौकरी दिलवा दी। नौकरी शुरू करने के कुछ ही समय बाद, केट ने अपने सुपरवाइज़र, जो लगभग चालीस वर्ष का विवाहित व्यक्ति था, के साथ यौन संबंध बनाना शुरू कर दिया। उसकी पत्नी को इस रिश्ते के बारे में पता चल गया और उसने कंपनी छोड़ दी। उसके जाने के कुछ ही समय बाद केट ने गबन शुरू कर दिया। बस में एक कैरी बैग में गलती से छूटे हुए 100 पाउंड को छोड़कर, उसके द्वारा चुराए गए 30,000 पाउंड उसकी अलमारी के पीछे छिपे एक ट्रंक से बरामद कर लिए गए और उसके मालिकों को लौटा दिए गए।
केट के मुकदमे में क्या हुआ, यह मुझे स्पष्ट नहीं था। उसकी फाइल नोट्स से मुझे संदेह हुआ कि वह जज के सामने अड़ियल, शायद उद्दंड भी, प्रतीत हुई होगी। कारण चाहे जो भी हो, अदालत ने डॉ. ग्लासर की सिफारिश को नजरअंदाज कर दिया। दोषी पाए जाने पर केट को यूरोप की सबसे बड़ी महिला जेल, एचएम प्रिजन हॉलोवे में पंद्रह महीने की सजा सुनाई गई।
मेरे पीछे केतली की सीटी बजी। शाम की रिसेप्शनिस्ट आ गई थी। मैं दो घंटे से पढ़ रहा था।

मैंने केट को एक पत्र लिखकर उससे मिलने का प्रस्ताव रखा।

2

हमारी पहली मुलाकात में, मैंने केट से यह कहकर शुरुआत की कि मैंने जो विभिन्न रिपोर्टें पढ़ी हैं, उनसे मुझे उसके बारे में कुछ जानकारी है, लेकिन अगर वह मुझे अपने बारे में कुछ बता सके तो मुझे मदद मिलेगी।
उसने बताया कि वह बहुत मुश्किल दौर से गुज़र रही है। उसे नौकरी नहीं मिल रही। पिछले शनिवार शाम को वह अपने पड़ोसी, जो परिवार का दोस्त भी था, के साथ ड्रिंक करने गई थी—"मुझे बड़े उम्र के लड़के पसंद हैं"—और इसी बात पर उसकी माँ से झगड़ा हो गया। वह घर छोड़कर जाना चाहती थी। वह अपनी माँ के साथ रह रही थी, लेकिन उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं था—उसे अपनी माँ पसंद नहीं थी, वह अपनी माँ जैसी नहीं थी—और उसे अपनी माँ का बॉयफ्रेंड भी बिल्कुल पसंद नहीं था। वह हमेशा रसोई या बैठक में घूमता रहता था, बीयर पीता और सिगरेट पीता रहता था। केट को सिगरेट का धुआँ बिल्कुल पसंद नहीं था। उसने कहा, "मेरी और मेरी माँ की आपस में बनती नहीं है।"
“वह बहुत कठोर है,” केट ने कहा। “उसका पूरा परिवार ही ऐसा है—ठंडा।” केट के जेल में बिताए पंद्रह महीनों के दौरान, उसकी माँ उससे केवल चार बार मिलने आई। “ऐसा कौन सी माँ करती है?”
मैंने कहा, "क्या तुम कभी करीब थे?"
“उसके करीब रहना आसान नहीं था,” केट ने कहा। “अगर मुझसे गलती से कुछ गिर जाता, या मैं ठोकर खाकर गिर जाती—तो वह मुझ पर चिल्लाती थी। मेरे पिताजी कहते थे कि वह ऐसा करने से खुद को रोक नहीं पाती थी।”
मैंने कहा, "तुम्हें अपने पिता के ज़्यादा करीब महसूस होता था।"
वह इतनी देर तक चुप रही—अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुकी हुई, फर्श की ओर देखती हुई—कि मुझे लगा कि शायद वह जवाब नहीं देगी।
जब उसने अपना सिर उठाया, तो मैंने देखा कि उसकी आँखों में आँसू भरे हुए थे। कुछ क्षण बाद, मैंने उससे पूछा, "क्या तुम मुझे बता सकती हो कि तुम्हें किस बात पर रोना आया?"
केट ने सिर हिलाया। "मुझे अपने पिता के बारे में बात करना पसंद नहीं है।" “किसी को भी?” मैंने पूछा।

एक बार फिर, केट ने सिर हिलाकर मना कर दिया।
"आपकी मां?"
“नहीं, खासकर वो नहीं। वो हमेशा उस पर ताने मारती रहती थी। अभी तो अंतिम संस्कार भी नहीं हुआ था कि उसने उसके सारे कपड़े, सब कुछ दान कर दिया—सब कुछ चैरिटी शॉप में दे दिया। उसने मुझे बताया तक नहीं, मुझे कुछ भी रखने को नहीं मिला।”
मैंने कहा, "यह तो आपके लिए बहुत बुरा होगा।"
केट ने कोई जवाब नहीं दिया। हम चुपचाप बैठे रहे। कुछ देर बाद, मुझे हॉल के दूसरी तरफ का दरवाजा खुलने की आवाज सुनाई दी, फिर गलियारे में मेरी सहकर्मी के कदमों की आहट। एक-दो मिनट बाद, मैंने उसे अपने ऑफिस की ओर वापस जाते हुए सुना, फिर उसके परामर्श कक्ष का दरवाजा बंद होने की आवाज आई। “क्या आपके पास रेडियो है?” केट ने कहा।
“एक रेडियो?”
"यहां एकदम सन्नाटा है," उसने कहा।
मुझे आश्चर्य हुआ, लेकिन उतना भी नहीं। पोर्टमैन क्लिनिक में मैंने जिन मरीज़ों को देखा था, उनमें से कई को शांत कमरे में, फ़ोन बंद करके, किसी ऐसे व्यक्ति के साथ अकेले रहने का अनुभव नहीं था जो उनकी हर बात सुनने के लिए तैयार हो। केट के सवाल ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि शायद मेरी टिप्पणियाँ, मेरा सुनना, या शायद क्लिनिक का शांत और ध्यानपूर्वक सुनने का माहौल—परामर्श या उस जगह की कोई बात—उसके लिए कुछ ज़्यादा ही था, और उसके लिए बेहतर होता अगर हम कुछ और सुनते। मैंने उससे यही कहा।
वह मुस्कुराई। उसने मुझे बताया कि उसे अपने पिता के बारे में बात करने की आदत नहीं है, और वैसे भी, उसे समझ नहीं आ रहा था कि इससे उसे क्या मदद मिलेगी। सिर्फ बात करने से भला क्या फायदा होगा?
मैंने कहा, हम साथ मिलकर बात करेंगे और सोचेंगे, ताकि उसके साथ जो कुछ हुआ था, उसका कुछ मतलब समझ सकें।
"मैंने पैसे क्यों चुराए?"
मैंने कहा, "क्या आपके पास इस बारे में कुछ विचार हैं?"
"तुम्हें पता है मैंने इसमें से एक पैसा भी खर्च नहीं किया।"
मैंने पूछा, "आप इसे खुद को कैसे समझाते हैं?"

उसने कहा कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि इसका क्या मतलब निकाले। उसने पैसे अपनी अलमारी में एक पुराने संदूक में रख दिए। जब वह छोटी थी, तो वह संदूक उसके कपड़े रखने का डिब्बा हुआ करता था। "शायद आपको यकीन न हो, लेकिन संदूक में पैसे रखने के बाद मैंने इसके बारे में सोचा ही नहीं।"
उसे ठीक से पता नहीं था कि यह सब कैसे शुरू हुआ, या उसने ऐसा क्यों किया—वह बेईमान नहीं थी। बस हर दिन बहुत सारा पैसा आता था, और उसे लगता था कि उन्हें इसकी कमी महसूस नहीं होगी। और उन्हें हुई भी नहीं। ज़्यादातर दिन, वह लगभग सौ पाउंड चुरा लेती थी। दिन में दो बार, सुबह और दोपहर में, उसका बॉस कॉफ़ी लेने सड़क पर जाता था। वह उसके वापस आने का इंतज़ार करती, फिर "गलती से" नोटों का ढेर ज़मीन पर गिरा देती। झुककर, खुद को इस तरह रखती कि उसकी डेस्क उसके और ऑफिस के दरवाज़े के बीच आ जाए, ताकि अगर उसका बॉस अचानक वापस आ जाए तो उसे कोई देख न सके, और फिर वह नोटों को इकट्ठा कर लेती। ऐसा करते हुए, वह पाँच बीस-बीस के नोट गिनती, फिर उन्हें अपने बूट में गहराई से डाल देती, या नोटों को अपनी जींस के ऊपर से अपनी पैंटी में डाल देती। "मुझे पकड़े जाने का बहुत डर था—मेरा दिल बहुत ज़ोर से धड़क रहा था।"
केट की चोरी करने की गुप्तता और उसका शारीरिक रूप से मौजूद होना, मुझे उसके चुपचाप अलास्डेयर के कमरे में जाने की याद दिलाता था। केट ने अलास्डेयर का ज़िक्र मुझसे नहीं किया था, मैंने उसके बारे में सिर्फ़ उसकी फ़ाइल में पढ़ा था—मैं उसके द्वारा उसके बारे में बताने का इंतज़ार कर रही थी। मैंने उससे बस इतना कहा कि मुझे लगता है कि चोरी करते समय उसे जो भावनाएँ आती हैं—गुप्तता, रोमांच—शायद उसके अवसाद से उबरने का तरीका है।
मुझे लगा कि केट ने बहुत जल्दी सिर हिला दिया, मानो वह मेरे साथ इस विचार पर चर्चा करने से बचने के लिए सहमति दे रही हो। मैंने फिर कोशिश की। “पैसा होना तुम्हारे लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं था। रोमांच, दिल दहला देने वाला डर ही शायद महत्वपूर्ण था—अपने आप में एक लक्ष्य, किसी लक्ष्य को पाने का साधन नहीं। मैं सोच रही थी कि चोरी करना अपने आप में एक तरह का अवसादरोधी उपाय था।”
“हां,” उसने कहा। “मैं यह समझती हूं।”
मैंने अपनी घड़ी देखी; एक घंटा लगभग पूरा हो चुका था। मुझे लगा कि हमने अच्छी शुरुआत की है। मैंने उससे पूछा कि क्या वह अगले हफ्ते इसी समय मिलने के लिए उपलब्ध है, और वह तैयार थी। मैंने समझाया कि अगर वह चाहे तो यह

हमारी नियमित मुलाकात का समय होगा। हम हर हफ्ते पचास मिनट के लिए मिलेंगे। वह मान गई। फिर मैंने उससे पूछा कि क्या उसके कोई सवाल हैं। उसने कहा कि उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा है। हम खड़े हुए, अलविदा कहा और वह चली गई।
अगले सप्ताह, मैं केट को प्रतीक्षालय से लेने गया। कुछ मिनटों की चुप्पी के बाद, मैंने उससे पूछा, "क्या तुम मुझे बता सकती हो कि तुम क्या सोच रही हो?"
काफी देर तक उसने कोई जवाब नहीं दिया। मुझे लगने लगा कि या तो उसने मेरा सवाल सुना ही नहीं या फिर वह जानबूझकर उसे नजरअंदाज कर रही है।
उन्होंने कहा, "मैं सोच रही थी कि यहां होना अच्छा है।"
मैंने उनसे पूछा कि क्या पिछले हफ्ते हमारी मुलाकात से कुछ ऐसा है जो उनके मन में रह गया हो।
उसने सिर हिलाया। "नहीं, ऐसा नहीं है," उसने जवाब दिया। केट मेरे सामने वाली कुर्सी पर ठीक से बैठ गई। अपने पैरों को मोड़कर उसने अपना सिर इस तरह झुकाया कि उसके बाल आगे की ओर आ गए और उसका चेहरा लगभग छिप गया।
हम कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। फिर मैंने उससे कहा कि मेरे अनुभव के अनुसार, उसे बेहतर तरीके से जानने का सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि वह अपने मन में आने वाली हर बात कह दे—चाहे वह कितनी भी दर्दनाक, बेतुकी या शर्मनाक क्यों न हो। “सपने, दिवास्वप्न, अनसुनी भावनाएँ, ऐसे विचार जो तुम्हें असहज कर देते हैं—मुझे पता है यह मुश्किल है, लेकिन अगर तुम ऐसा कर सको, तो इससे हम दोनों को तुम्हें बेहतर तरीके से जानने में मदद मिलेगी।”
केट ने मेरी तरफ देखा। उसने कहा, "मुझे कोई सपने नहीं आते," और फिर चुप हो गई।
दोपहर का समय था, फिर भी आसमान में बादल छाए हुए थे और उदासी छाई हुई थी। परामर्श कक्ष में रोशनी दो स्टैंडिंग लैंप और मेरी कुर्सी के पीछे ग्रे रंग की संस्थागत मेज पर रखे एक पुराने काले एंगलपॉइज़ लैंप से आ रही थी। दोनों खिड़कियाँ नीचे से कुछ इंच खुली थीं, और पास के एक स्कूल से मुझे बच्चों के चिल्लाने और खेल के मैदान में भागते हुए जाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी—दोपहर के भोजन का समय शुरू हो गया था। खुद को संभालते हुए, मैं परामर्श कक्ष में लौट आया। मेरा मन कर रहा था कि केट से एक सवाल पूछूँ; बहुत कुछ था जो मैं जानना चाहता था—उसके पिता और माता से उसके रिश्ते,

उसके दोस्त, उसका वर्तमान जीवन—लेकिन मैंने खुद को रोक लिया। मैं बहुत ज्यादा पूछताछ या निर्देश नहीं देना चाहता था।
हमारी पहली मुलाकात के बाद से कुछ बदलाव आ चुका था। हालांकि मुझे ऐसा नहीं लगा कि केट जानबूझकर कुछ छिपा रही थी, लेकिन वह कुछ चिंतित सी लग रही थी। मैंने खुद को यह सोचकर तसल्ली दी कि अभी तो शुरुआत है; समय के साथ वह मुझ पर भरोसा करने लगेगी और अपने जीवन के बारे में खुलकर बात करने लगेगी।
लगभग पाँच मिनट बचे थे, मैंने केट से पूछा कि क्या वह मुझे अपने विचार बता सकती है। कुछ देर तक उसने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि अपनी उंगलियों के सिरों से अपने स्कार्फ के किनारे को सहलाती रही। आखिरकार, उसने मेरी तरफ देखा और सिर हिलाकर मना कर दिया।
मनोविश्लेषणात्मक सत्र में मौन रहना कोई असामान्य बात नहीं है, फिर भी, जैसे-जैसे समय बीतता गया, मुझे निरर्थकता का बढ़ता हुआ एहसास होने लगा। मेरे मन में यह विचार आया कि केट मुझे यह अनुभव करा रही है कि उसके जैसा होना कैसा होता है, इसलिए मैंने कहा, "मुझे लग रहा था कि आज चुप रहकर, कुछ न बोलकर, तुम मुझे यह बता रही हो कि तुम्हारे जैसा होना कैसा होता है—कि तुम महसूस करती हो कि तुम एक ऐसी दुनिया में रहती हो जो मौन है, तुम्हारे लिए अनुपलब्ध है।"
वह मुस्कुराई, उसकी आंखें बिना पलक झपकाए मेरी ओर देखती रहीं, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।
लगभग एक मिनट बाद, एक घंटा पूरा होने से ठीक पहले, केट ने कहा, "क्या आप मेरे और अलास्डेयर के बारे में जानते हैं?"
मैंने कहा, "मुझे आपकी फाइल में जो कुछ है, उसके बारे में थोड़ी बहुत जानकारी है।"
“मैं उसे पत्र लिखूंगी। उसके वकीलों ने मुझे ऐसा करने से मना किया है, लेकिन मुझे उसकी याद आती है, और मुझे यकीन है कि वह अब भी मुझसे प्यार करता है।”
मैंने कहा, "यह महत्वपूर्ण है, लेकिन सिर्फ एक मिनट बचा है।"
"क्या आपको लगता है कि उसे पत्र लिखना ठीक रहेगा?"
"यह आपके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन आज इस पर विस्तार से चर्चा करने का समय नहीं है।"
"तो आप मुझे कह रहे हैं कि मैं उसे पत्र न लिखूं?" उसने कहा।

मैं बस यह समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि आपने इसे अपने सत्र के बिल्कुल अंत तक क्यों छोड़ दिया होगा। शायद आपका एक हिस्सा मुझसे एलास्डेयर के बारे में या उसे पत्र लिखने के बारे में बात करना चाहता था, और दूसरा हिस्सा नहीं चाहता था।
मैंने जानबूझकर इसे अंत में नहीं उठाया। मुझे बस याद आ गया।
“मैं सहमत हूँ। मुझे लगता है कि यह अनजाने में हुआ, जानबूझकर नहीं,” मैंने कहा। “हो सकता है कि आपने सत्र के बिल्कुल अंत में इसका ज़िक्र किया हो क्योंकि आप उसे पत्र लिखना चाहती हैं, और आपको डर है कि मैं आपको रोकने की कोशिश करूँगी।”
“तुम नहीं करोगे?” उसने पूछा।
मैं आपको कुछ भी करने से रोकने के लिए यहां नहीं हूं। मैं यहां आपके साथ मिलकर चीजों पर विचार करने के लिए हूं।
मैंने अपनी घड़ी देखी। "मुझे पता है कि इतना लंबा इंतजार करना मुश्किल लग रहा है—लेकिन अगर आप कर सकें, तो हम अगले हफ्ते अलास्डेयर के बारे में और उसे पत्र लिखने के बारे में बात कर सकते हैं।"
“हमें रुकना होगा?” उसने कहा।
"हां, अब समय आ गया है।"
“अभी?” उसने पूछा।
मैंने सिर हिलाया और खड़ा हो गया।
"इतना ही?"
मैंने फिर सिर हिलाया। "हाँ, अगले सप्ताह तक।"
केट अपनी कुर्सी पर सिमटकर बैठी रही। वह सोच में डूबी हुई लग रही थी। मुझे लगा कि वह अपने पत्र के बारे में सोच रही थी, शायद उसे भेजने के लिए एक सप्ताह इंतजार करने के विचार को स्वीकार कर रही थी।
फिर वह खड़ी हुई और दो तेज़ कदम आगे बढ़ी—बहुत करीब। उसने आगे बढ़कर मेरी जैकेट से कुछ रुई झाड़ दी।
“क्या अब आपका लंच ब्रेक है?” उसने पूछा।
मैं पीछे हट गया।
उसने अपना सिर एक तरफ झुकाते हुए कहा, "मैं बस यही सोच रही थी कि अगर आस-पास कोई पब होता, तो हम साथ में दोपहर का खाना खा सकते थे।"

मैंने कहा: "आप चाहते हैं कि हम बातचीत जारी रखें, लेकिन हम ऐसा नहीं कर सकते - हमें अगले सप्ताह तक इंतजार करना होगा।"
“मुझे पता है,” उसने कहा, “लेकिन आप मेरे प्रति बहुत अच्छे रहे हैं। मैं भी आपके प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहती हूं।”
धीरे-धीरे मुझे समझ आने लगी। उसकी अपनी माँ से मुश्किल रिश्ते, उसके पिता की मृत्यु, उसके चाचा के साथ नाजायज संबंध, उसके बॉस के साथ अफेयर, चोरी, और यह अचानक से हुआ आकर्षण—ये सभी घटनाएँ आपस में जुड़ी हुई थीं। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उससे इस बारे में कैसे बात करूँ जो मुझे समझ आने लगा था, लेकिन मुझे पता था कि मुझे क्या कहना है। मैंने कहा, "अब समय आ गया है। हमें इसे रोकना होगा।"
केट थोड़ी हिली। “मैं चाहूँगी…” उसने कहा और झिझकी। वह हिलती-डुलती रही, कभी बाएँ पैर से कभी दाएँ पैर पर। मुझे महसूस हुआ कि वह खुद को संभाल रही है, किसी सीमा को पार करने के लिए तैयार हो रही है। “क्या मैं आपको गले लगा सकती हूँ?” उसने कहा।
मैंने रुकने का संकेत देने के लिए अपना दाहिना हाथ उठाया।
मैंने कहा, "अब समय आ गया है।"
उसके होंठ एक बच्चे की तरह नीचे की ओर मुड़ गए और उसने अपनी आँखों से मुझे घूरना शुरू कर दिया।
मैंने धीमी आवाज़ में कहा, "अगले मंगलवार को मिलते हैं, हम तब आगे बात कर सकते हैं।"
वह एकदम मेरे ठुड्डी के नीचे आ गई।
“छोड़ो सब,” वो चिल्लाई। मुझे उसकी साँस महसूस हुई। “बिल्कुल भी नहीं।” अपना सामान उठाते हुए और दरवाजे की ओर बढ़ते हुए, वह मुझ पर चिल्लाती रही, “तुम बहुत बेवकूफ हो, बहुत बेवकूफ। तुम हद से ज्यादा बेवकूफ हो।” उसने दरवाजा जोर से बंद कर दिया।
मैं वहीं खड़ा रहा, जो कुछ हुआ था उसके बारे में सोचता रहा। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं है कि कितना समय बीत गया।
मैं स्टाफ रूम में गया, अपने लिए एक मग चाय बनाई, अपने ऑफिस में वापस आया और सेशन के बारे में लिख लिया।
फिर मैंने डॉ. ग्लासर को एक छोटा सा नोट लिखकर घटना का ब्यौरा दिया और उसे उनकी ट्रे में रख दिया। उन्होंने तुरंत जवाब दिया और सुझाव दिया कि हम

अगली नियमित पर्यवेक्षण बैठक में इस पर चर्चा करें—उन्होंने उम्मीद जताई कि केट अपने अगले सत्र में आएगी।
वह न तो आई और न ही उसने क्लिनिक को फोन करके अपॉइंटमेंट रद्द किया। अपनी आदत के अनुसार, मैंने उसे पत्र लिखा:
मुझे खेद है कि आज आपसे मुलाकात नहीं हो पाई। मुझे लगता है कि मैं आपकी कुछ बातें समझ गया हूँ।
उपस्थित न होने के कुछ कारण हैं, लेकिन मैं और अधिक जानना चाहूंगा। कृपया अगली बार आइएगा।
मंगलवार को आपके नियमित समय पर।

3

जब मैंने डॉ. ग्लासर के कार्यालय का दरवाजा खटखटाया, तो मुझे बेचैनी और आशंका महसूस हुई, क्योंकि मुझे उनकी निराशा का डर था। उनका कार्यालय क्लिनिक का सबसे बड़ा परामर्श कक्ष था; ऊंची छतें और विक्टोरियन शैली की लंबी खिड़कियां इसे हवादार, रोशन और आकर्षक बनाती थीं।
डॉ. ग्लासर मेज के सिर पर बैठे थे। वे मेरा अभिवादन करने के लिए खड़े हुए और मुझे अपने पास वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। उन्होंने पूछा, "क्या आपको अपने मरीज से कोई खबर मिली है?"
मैंने सिर हिलाया। "बिल्कुल नहीं।"
डॉ. ग्लासर को कागज का एक नया पैड मिला। पेन की टोपी उतारते हुए उन्होंने कहा, "चलिए सीधे सत्र शुरू करते हैं।"
जब मैं सुश्री एफ. के साथ अपनी दो मुलाकातों का विवरण पढ़ रहा था, तब डॉ. ग्लासर नोट्स ले रहे थे। उन्होंने कई बार मुझसे हमारी बातचीत के कुछ अंश दोहराने को कहा।
जब मैंने अपनी बात खत्म की, तो डॉ. ग्लासर चुप हो गए। उन्होंने अपने नोट्स का पहला पन्ना पलटा और धीरे-धीरे पढ़ना शुरू किया। “ठीक है,” उन्होंने कहा। “हाँ, यह ठीक है। मुझे नहीं लगता कि मुझे कुछ अलग करना चाहिए था।” “सचमुच?” मैंने कहा। “मुझे लगा कि पहली बैठक में सब ठीक रहा। दूसरे सत्र का जिस तरह से अंत हुआ, उसकी तो मैंने कल्पना भी नहीं की थी…।”

डॉ. ग्लासर मुस्कुराए। “हो सकता है कि आपके मरीज ने दूसरे सत्र में ऐसा व्यवहार इसलिए किया हो क्योंकि पहली मुलाकात में आप दोनों के बीच अच्छा भावनात्मक संपर्क था—यह एक नकारात्मक चिकित्सीय प्रतिक्रिया हो सकती है।”
मैंने पूछा, "क्या वह शैरन या ऐनी के साथ बेहतर नहीं रहती?"
“मुझे ऐसा नहीं लगता,” उन्होंने कहा। “अपनी माँ के साथ उसके रिश्ते बहुत खराब हैं, उसकी कोई महिला मित्र नहीं है, उसने जेल की महिला काउंसलर से मिलने से इनकार कर दिया—वह अपने प्रोबेशन अधिकारी से नफरत करती है। अगर कोई महिला विश्लेषक होती तो शायद मामला अलग होता, लेकिन जरूरी नहीं कि बेहतर ही होता।”
मैंने कहा, "इससे बुरा और कुछ नहीं हो सकता था।"
“अगर आपका मतलब दूसरे सेशन के अंत से है,” उन्होंने कहा, “मुझे लगता है कि उसे अच्छे से संभाला गया। उसके आपको छूने के बाद, अगर आपने उससे कहा होता, ‘कृपया बैठ जाइए, चलिए कुछ मिनट इस बारे में बात करते हैं’—तो यह गलत होता। इससे उसकी थेरेपी खराब हो जाती। आप एक तरह से गलत काम कर रहे होते: आप मेरे साथ फ्लर्ट करें, मैं आपको और समय दूंगा। उसे आपकी सीमाओं की ज़रूरत है, ताकि वह भी ऐसा कर सके।”
डॉ. ग्लासर आगे झुकीं। “सत्र को जिस तरह से आपने समाप्त किया, उससे आप उनसे कह रही थीं: ‘मुझे लगता है कि आप प्रतीक्षा कर सकती हैं, मेरा मानना है कि आपको आवेग में आकर कोई कदम उठाने की ज़रूरत नहीं है—आप अपने मन का उपयोग करके अपनी भावनाओं को समझ सकती हैं और अपनी इच्छाओं को नियंत्रित कर सकती हैं।’ यही चिकित्सीय प्रभाव है।”
"मर्विन, धन्यवाद—लेकिन अगर मैं मरीज को खो दूं तो क्या यह चिकित्सीय रूप से कारगर होगा?"
उन्होंने कहा, "आपको नहीं पता कि वह वापस नहीं आएगी। मरीज़ कई तरह से इलाज के लिए आते हैं। खासकर युवा लोग—वे शुरू करते हैं, फिर छोड़ देते हैं। अगर वह कभी वापस नहीं आती, तो यह एक विफलता होगी, लेकिन मुझे विश्वास है कि वह वापस आएगी।"
"मुझे लगता है कि मुझे सही शब्दों का चुनाव कर लेना चाहिए था—कुछ ऐसा— जिससे वह अगले सप्ताह वापस आ सकती थी।"

उन्होंने मेरी तरफ देखा। “स्टीफन, तुम उससे कही बातों के बारे में बहुत ज्यादा सोच रहे हो। मायने यह नहीं रखता कि तुम क्या कहते हो—महत्व इस बात का है कि मरीज क्या सुनता है। तुम्हें वही सुनना होगा जो वह सुन रही है।” उन्होंने एक गिलास में पानी भरा। उन्होंने कहा, “हमारे मरीज़ यहाँ इसलिए हैं क्योंकि उनकी समस्याओं से निपटने के तरीके नाकाम हो गए हैं। आपको नाकाम महसूस कराना, मरीज़ का आपको यह बताने का एक तरीका है कि उसे कैसा लग रहा है। लेकिन मुझे लगता है कि वह शायद कुछ ऐसा अभिनय कर रही थी, कुछ ऐसा जिसे वह शब्दों में बयां नहीं कर सकती थी।”
मैंने उनसे पूछा, "क्या आप सत्र के अंत को इसी तरह समझते हैं?"
"क्या उसका आपको छूने के लिए हाथ बढ़ाना?"
"हाँ।"
डॉ. ग्लासर ने अपना पेन मेज पर रख दिया। उन्होंने कहा, “कुछ लोगों को शब्दों से परेशानी होती है, विशेषकर उन लोगों को जिन्होंने कोई आघात झेला हो। मेरा मतलब है कि कुछ मरीज़ों को अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल लगता है। आघात के कारण व्यक्ति के साथ तालमेल बिठाना कठिन हो जाता है—वह अचानक गुस्सा हो जाता है, चुप हो जाता है। आघात झेल चुके लोग अपने शरीर के इशारों से, अपनी चुप्पी से अपनी बात कहते हैं।”
उन्होंने आगे कहा, “ज़्यादातर, जब हम या आप गुस्सा होते हैं, तो हम अपने शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। हम गाली दे सकते हैं या चिल्ला सकते हैं— आखिरकार, हम मेज पर मुक्का भी मार सकते हैं।” इस पर उन्होंने मुट्ठी बनाई और बढ़ा-चढ़ाकर मेज के ऊपर ज़ोर से मारने का नाटक किया।
“यह मेज उस व्यक्ति का प्रतीक है जिसे हम मारना चाहते हैं,” उन्होंने मेज पर धीरे-धीरे थपथपाते हुए कहा। “आपका हिंसक मरीज़”—एक पुरुष नर्स जिसका मैं इलाज कर रहा था और जो अक्सर झगड़ों में पड़ जाता था—“उसे गुस्सा आता है, और फिर लगभग तुरंत ही वह उस व्यक्ति को घूंसा मार देता है जिसने उसे गुस्सा दिलाया है। वह अपने गुस्से या दूसरे के शरीर को किसी प्रतीक से व्यक्त नहीं कर सकता। उसकी एक तरह की मनोदैहिक प्रतिक्रिया होती है। उसके अंदर एक ऐसी भावना होती है जिसे व्यक्त करने के लिए उसके पास शब्द नहीं होते—उसका शरीर प्रतिक्रिया करता है।”
मैंने पूछा, "क्या आपको लगता है कि जब उसकी आंखों में आंसू भर आते हैं तो ऐसा ही होता है?"

"मैं उसके तुम्हें छूने के लिए उछलने और सेशन के बिल्कुल अंत में उसकी प्रतिक्रिया के बारे में सोच रही हूँ। मुझे लगता है कि उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसके पास कहने के लिए शब्द नहीं थे।"
"अस्वीकृत महसूस करने का वर्णन करने के लिए?"
उन्होंने कहा, "बेशक, उसे ठुकराया हुआ महसूस हुआ।" "लेकिन—मुझे लगता है कि वह एक ऐसी इच्छा को व्यक्त करने की कोशिश कर रही है जिसे व्यक्त करना उसके लिए असंभव है।"
मैंने सिर हिलाया। मैंने कहा, "वह अपने पिता को पुनर्जीवित करना चाहती है।"
"मेरी अंतरात्मा कहती है कि आप सही हैं, यह सच है, लेकिन मैं किसी और बात के बारे में सोच रहा हूँ: वह अपने पिता को क्यों चाहती है?"
उसने अपने नोट्स पलटे। “सेशन के अंत में, वह आपके सामने एक समस्या रखती है। वह एलास्डेयर को पत्र लिखने वाली थी। आप उससे कहते हैं कि आप दोनों अगले हफ्ते एलास्डेयर और उसे पत्र लिखने के बारे में बात कर सकते हैं। बहुत बढ़िया। सब ठीक है। फिर वह कहती है, 'क्या हमें अभी रुकना होगा?'”
डॉ. ग्लासर ने कहा, “विकास की दृष्टि से, आपकी मरीज़ एक शिशु है। हालाँकि वह एक युवती की तरह दिखती है, लेकिन मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक रूप से, आपके प्रति उसका व्यवहार शिशु जैसा है।” वह धीमी आवाज़ में बोल रहे थे, लेकिन उनकी गहरी आवाज़ और उनके शब्दों में गंभीरता थी। “वह आपसे वैसा ही रिश्ता चाहती है जैसा एक शिशु का अपनी माँ से होता है।”
उन्होंने आगे कहा, “सेशन के दौरान आप उसके साथ थीं—सुन रही थीं, विचार कर रही थीं, उसे समझने की कोशिश कर रही थीं। सेशन के अंत में, जब आप कहती हैं कि अब रुकने का समय है, तो आप एक ज़रूरी काम करती हैं। आप उसे यह दिखाती हैं कि आप भले ही उसके साथ एक माँ के रूप में व्यक्तिगत संबंध में हैं, लेकिन आप वास्तविकता से भी जुड़ी हुई हैं, समय की वास्तविकता से, थेरेपी के नियमों से—उसका पचास मिनट का सेशन समाप्त हो गया है। उसकी प्रतिक्रिया तुरंत, शारीरिक होती है। वह आपको छूने के लिए उछल पड़ती है, नखरे करती है, आपको दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित करती है। वह चाहती है कि आप अपने नियमों को छोड़ दें, वास्तविकता से मुंह मोड़ लें। वह आपके साथ रहना चाहती है। वह चाहती है कि आप पूरी तरह से उसकी हों।”

“फिर ऐसा दोबारा होता है। आप कहते हैं—मुझे इसे ढूंढने दीजिए—यहाँ, आपके मन में उसके पिता की मृत्यु, उसके चाचा के साथ यौन संबंध, उसके बॉस के साथ अफेयर, चोरी—इन सभी बातों के बारे में विचार आने लगते हैं।”
धातु के फ्रेम वाले चश्मे के ऊपर से देखते हुए डॉ. ग्लासर ने कहा, “आप अपने मनोविश्लेषणात्मक स्व से परामर्श करते हैं। आपका मरीज़ इस आंतरिक संवाद को महसूस करता है—जो आपको अपने भीतर समाहित कर लेता है, आपको उससे दूर ले जाता है। उसकी प्रतिक्रिया तात्कालिक और शारीरिक होती है; वह एक पैर से दूसरे पैर पर, एक तरफ से दूसरी तरफ हिलने लगती है; वह पूछती है कि क्या वह आपको गले लगा सकती है। जब आप मना करने के लिए हाथ उठाते हैं, तो वह क्रोधित हो जाती है। वह एक ठुकराई हुई बच्ची की तरह है। यह सब महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें उसकी आंतरिक दुनिया की एक झलक मिलती है।”
डॉ. ग्लासर ने ध्यान से अपने गिलास में पानी डाला, फिर मुझे एक गिलास पकड़ा दिया। “उससे हुई मेरी बातचीत, विभिन्न रिपोर्टों और आपके साथ हुए इन सत्रों के आधार पर, मुझे लगता है कि जब वह बच्ची थी, तो उसे कई छोटे-छोटे तिरस्कारों का सामना करना पड़ा था। अक्सर किसी बच्चे को नुकसान पहुंचाने वाली चीज एक अकेला आघात नहीं होता, बल्कि कई चोट पहुंचाने वाले पलों का संचय होता है—संचयी आघात। सबके सामने छिपा हुआ, ज्यादातर दूसरों को दिखाई न देने वाला, बार-बार होने वाला, छोटा-छोटा घाव। हम जानते हैं कि सुश्री एफ. की माँ अपनी बेटी को बोझ समझती थी, बार-बार उसे दूर धकेलती थी, उससे मुंह मोड़ लेती थी, उसे अस्वीकार करती थी। उसकी माँ जानबूझकर क्रूर नहीं थी; वह खुद संघर्ष कर रही थी, शायद अवसादग्रस्त थी।”
उन्होंने आगे कहा, “मुझे लगता है कि आपकी मरीज़ ने बहुत कम उम्र में ही अपने पिता से माँ जैसा प्यार पाना सीख लिया था—वह अपने सारे दुख-दर्द उन्हीं के साथ बाँटती थी। उनकी मृत्यु उसके लिए एक बहुत बड़ा आघात रही होगी। तब से, वह पुरुषों में एक दयालु माँ की तलाश कर रही है। उसके बॉस, एलास्डेयर—इन पुरुषों ने उसकी इस चाहत को यौन इच्छा समझ लिया; शायद उसने भी इसे यौन इच्छा ही समझ लिया हो। अपने पिता की मृत्यु के सदमे से उबरने की उसकी कोशिशों ने उसकी स्थिति और भी बदतर कर दी है, जिससे उसे और भी आघात पहुँचा है—उसे कभी जेल में नहीं डाला जाना चाहिए था। सत्र के अंत में उसका व्यवहार कुछ ऐसा दर्शाता है जिसे वह शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती: आपकी मरीज़ चाहती है कि आप वह माँ बनें जो उसे कभी नहीं मिली—एक ऐसी माँ

जो किसी को कभी नहीं मिली—एक ऐसी माँ जो पूरी तरह से उसके लिए ही हो। एक असंभव इच्छा।”
बोलते समय उन्होंने अपनी उंगलियों को गिलास के किनारे पर टिकाया और उसे घुमाया।
“बेशक, मैं गलत हो सकता हूँ। यह सिर्फ एक अनुमान है। लेकिन यह उस बात पर आधारित है जो मुझे लगता है कि आप उसके सेशन के अंत में महसूस कर रहे थे। कम से कम, हम जानते हैं कि वह आपके साथ रहना चाहती थी—लेकिन मुझे लगता है कि हमने कुछ और भी झलका। खैर, अगर मैं आपकी जगह होता तो मैं भी इसी बारे में सोचता। जब वह वापस आएगी, तो आप उसकी बात सुनेंगे—आप दोनों मिलकर जो हुआ उसे समझने का अपना तरीका खोज लेंगे। कभी-कभी इस तरह की शुरुआत एक अच्छी शुरुआत हो सकती है—”
मैंने उसे रोका। "तुम्हें इतना यकीन कैसे है कि वह वापस आ जाएगी?" उन्होंने कहा, "मुझे पक्का नहीं पता। लेकिन वह तकलीफ में है। उसे पता है कि आप उसकी मदद करना चाहते हैं।"
“क्या उसे बहुत शर्मिंदगी महसूस नहीं होगी? वह आहत होकर चली गई। मुझे तो ऐसा लगा जैसे सब कुछ खत्म हो गया हो।”
"शायद, लेकिन आप उसे शर्मिंदा करने की कोशिश नहीं कर रहे थे। मुझे लगता है उसने यह सुन लिया होगा।"
"मुझे माफ करना, मर्विन, मुझे नहीं लगता कि वह वापस आएगी, सच में नहीं।" “अगर वह अगले हफ्ते नहीं आती है, तो उसे फिर से लिखें। फिर, उसके अगले हफ्ते, उसके तीसरे सत्र में अनुपस्थित रहने के बाद, उसे फिर से लिखें—उसे बताएं कि आपको खेद है कि इस समय आपके साथ आकर बात करना उसके लिए मुश्किल हो रहा है, लेकिन जब वह वापस आने के लिए तैयार हो जाएगी, तो उसके लिए यहां जगह है। उसे बताएं कि उसके लिए यहां हमेशा जगह रहेगी।”
डॉ. ग्लासर मेरी पीठ के पीछे कुछ देख रहे थे, और मैंने मुड़कर देखा तो उनकी मेज पर एक छोटी सी प्लास्टिक की अलार्म घड़ी रखी थी। समय हो गया था। उन्होंने अपनी कुर्सी पीछे धकेली और खड़े हो गए, जिससे मुझे संकेत मिला कि निगरानी समाप्त हो गई है।
मैं उठा और अपना सामान इकट्ठा किया।
“यह असफलता नहीं थी। यह अच्छा काम था,” डॉ. ग्लासर ने अपनी कोमल और स्पष्ट आवाज़ में कहा। “आपने अभी उसे आखिरी बार नहीं देखा है।”

—

उस रात मुझे एक जीवंत सपना आया। उसमें केट भी थी। हम वाटरलू ब्रिज के विपरीत छोरों से एक-दूसरे की ओर चल रहे थे। हम एक-दूसरे को देखकर बहुत खुश हुए। केट ने मेरा गर्मजोशी से अभिवादन किया। जब उसने बात की, तो वह किसी विदेशी भाषा में थी, जिसे समझने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई।
जब मैं जागा, तो बिस्तर पर लेटा रहा और सपने के बारे में सोचने लगा। विपरीत दिशाओं में चलना, वह स्थान—एक महान युद्ध के नाम पर बना पुल—और एक-दूसरे को फिर से देखकर हमारी खुशी। इन तत्वों को और विश्लेषण की आवश्यकता नहीं थी। यह तथ्य कि वह एक विदेशी भाषा में बोल रही थी जिसे मैं समझ सकता था, मुझे डॉ. ग्लासर के इस सुझाव की याद दिलाता है: "आपको वही सुनना होगा जो वह सुन रही है।"
जन्म से ही हमें अपने जटिल आंतरिक भावों को छिपाना सिखाया जाता है; चाहे हम अपने माता-पिता के बारे में कैसा भी महसूस करें, हमें यही बताया जाता है कि हम उनसे प्यार करते हैं। हमारी भावनाओं और हमें जो महसूस करने को कहा जाता है, उसके बीच एक खाई होती है। इसी खाई में हमारी इच्छाएँ जन्म लेती हैं। इंसान होने का मतलब ही अनिश्चितता, अंतर्विरोध और विभाजन है, फिर भी हम एक ऐसी दुनिया में पले-बढ़े हैं जो हमें बताती है कि हमें संपूर्ण महसूस करना चाहिए, अपनी यौन इच्छाओं के प्रति आश्वस्त रहना चाहिए। लोकप्रिय संस्कृति की सतही, जानी-पहचानी कहानियों पर पले-बढ़े, सोशल मीडिया और सेलिब्रिटी खबरों के काल्पनिक घिसे-पिटे नजरियों के जरिए प्यार को देखने के लिए प्रोत्साहित किए जाने के कारण, हम खुद से उन मुश्किल सवालों को पूछने से बच जाते हैं: मेरी इच्छा क्या है? मेरा यौन स्वरूप ऐसा क्यों है? आसान कहानियां मुश्किल कहानियों को छिपा देती हैं। "मुझे बड़े उम्र के पुरुष पसंद हैं" शायद इस बात को छुपाता हो कि "मैं एक ऐसे पुरुष को चाहती हूं जो मेरी कभी न मिली मां की तरह हो।"
मनोविश्लेषण की भी अपनी कुछ निश्चित कथाएँ होती हैं, लेकिन जब इसे सही ढंग से किया जाता है, तो यह कोई तैयार जवाब नहीं देता। इसके बजाय, यह एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ दो लोग पूरी तरह से ईमानदार हो सकते हैं, एक साथ सोच सकते हैं और मिलकर अर्थ खोज सकते हैं। अगर मैं केट की भावनाओं को सुन पाता

— उसके अवचेतन मन की भाषा को समझ पाता—तो शायद मैं उसे दूसरों को वैसे ही देखने में मदद कर पाता जैसे वे वास्तव में हैं, न कि जैसा वह डरती है या चाहती है।

—

केट के गुस्से में क्लिनिक से चले जाने के छह महीने बाद, मुझे क्लिनिक सचिव से एक नियमित अनुस्मारक मिला जिसमें कर्मचारियों से उन रोगियों की फाइलें लौटाने के लिए कहा गया था जिनका वर्तमान में इलाज नहीं चल रहा था। मेरी ट्रे के नीचे मुझे केट की फाइल मिली। समापन नोट लिखते समय, मुझे डॉ. ग्लासर के साथ अपने पर्यवेक्षण और अपने सपने की याद आई। कुछ तो अधूरा सा था। मुझे एहसास हुआ कि मेरे सपने की व्याख्या अधूरी थी। मेरी समझ में यह विश्लेषण नहीं हो पाया कि मुझे वह सपना क्यों आया—वही सपना, उस खास पल में क्यों आया? हाँ, मैं केट की मदद करने के लिए उत्सुक थी—मैं एक भयानक अन्याय को सुधारना चाहती थी—उसे कभी जेल नहीं भेजा जाना चाहिए था। लेकिन थोड़ा और सोचने पर, मुझे वह सपना डॉ. ग्लासर को खुश करने की एक स्पष्ट इच्छा के रूप में दिखाई दिया। अचानक, मुझे एहसास हुआ कि नैदानिक देखरेख से कहीं ज़्यादा, मैं डॉ. ग्लासर की स्वीकृति चाहती थी। मैं उनके पास न केवल केट के साथ अपने काम के बारे में, बल्कि अपने पिता के साथ अपने निराशाजनक रिश्ते के बारे में भी लेकर गई थी। अचेतन रूप से—यहाँ तक कि अब भी यह स्वीकार करना शर्मनाक है—मैं चाहती थी कि डॉ. ग्लासर मुझे वह दें जो एक पिता अपने बेटे को देता है, और मुझे पूरा करें। मैं उनसे वह बनने के लिए कह रही थी जो वे नहीं बन सकते थे, उस चीज़ को ठीक करने के लिए कह रही थी जिसे वे ठीक नहीं कर सकते थे: एक असंभव इच्छा।

4

तीन साल बाद—हैम्पस्टेड में, ट्यूब प्लेटफॉर्म पर—मैंने एक आवाज सुनी, “मिस्टर ग्रोज़?” मैं मुड़ा। वह केट थी।
वह एक शिशु को गोद में लिए हुए थी, जिसका चेहरा बाहर की ओर था, और वह उसे बेबी कैरियर में लिए हुए थी। वह कुछ अलग लग रही थी, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे। हम दोनों के आश्चर्य व्यक्त करने के बाद, उसने अपना हाथ

बेबी कैरियर के आगे रखा। "यह फ्रेडी है; फ्रेडी, यह मिस्टर ग्रोज़ हैं," उसने कहा, और आगे बोली, "आपको पता है ना, मैं पोर्टमैन में वापस आ गई हूँ?" मैंने कहा, "मुझे यह पता नहीं था।"
“डॉक्टर ग्लासर ने मुझे बताया कि आपने क्लिनिक छोड़ दिया है,” उसने कहा। “इसलिए मैं उनसे हफ्ते में एक बार मिलती हूँ।” वह मुस्कुराई।
मैंने कहा, "वह एक बेहतरीन थेरेपिस्ट हैं।"
केट ने नीचे देखा।
अंधेरी सुरंग से, धूल का परिचित, गर्म झोंका, बढ़ता हुआ शोर, दो सफेद हेडलाइट्स—केट की ट्रेन रुक गई। दरवाजे खुल गए।
“ये हम हैं,” उसने कहा। वे अंदर चले गए। जैसे ही दरवाजे बंद हुए, उसने हाथ हिलाकर अलविदा कहा।

कामुक संबंध: तीन मामले

1

मेरे परामर्श कक्ष में बैठने से पहले, मैट ए. आगे बढ़े और मुझसे हाथ मिलाया। वे एक चुस्त-दुरुस्त और आकर्षक सैंतालीस वर्षीय व्यक्ति थे। उन्होंने सफेद कश्मीरी स्वेटर, काले चेल्सी बूट और कछुए के खोल जैसे डिज़ाइन वाले चश्मे पहने हुए थे। उनकी लाल घड़ी की पट्टी उनके मोजों से मेल खा रही थी।
आम तौर पर जो लोग मुझसे परामर्श के लिए आते हैं, वे अपनी समस्या का वर्णन करके शुरुआत करते हैं; मैट ने खुद का परिचय देकर शुरुआत की। उन्होंने मुझे बताया कि वे डाउनिंग स्ट्रीट में टोनी ब्लेयर के लिए राजनीतिक रणनीतिकार और सलाहकार के रूप में काम करते थे। यह 1999 की बात है। उनकी शादी को बीस साल हो चुके थे और उनके तीन किशोर बच्चे थे। उन्होंने अपने परिवार—अपनी पत्नी जेमिमा, जो एक बैरिस्टर थीं, और अपने दो बेटों और एक बेटी—का बड़े ही स्नेह और विस्तार से वर्णन किया। उनके पास टॉटेनहम हॉटस्पर फुटबॉल क्लब का सीज़न टिकट था और उन्हें सप्ताहांत में अपने बच्चों को स्पर्स का मैच दिखाने ले जाना और फिर घर आकर उनके लिए खाना बनाना बहुत पसंद था। उन्हें खासकर तब बहुत अच्छा लगता था जब बच्चे रसोई में उनके साथ शामिल हो जाते, संगीत बजाते और नाचने लगते।
उन्होंने मुझे अपने माता-पिता के जीवंत और स्नेहपूर्ण चित्र प्रस्तुत किए — उनकी माँ जर्मन भाषा और साहित्य की प्रोफेसर थीं, और उनके पिता एक भाषाविज्ञानी थे जो अब सरकारी संचार मुख्यालय (जीसीएचक्यू) में सिविल सेवक के रूप में कार्यरत थे। मैट एक घनिष्ठ, विस्तारित परिवार का हिस्सा थे, जिसमें कुल सोलह सदस्य थे: उनके माता-पिता, उनके तीन बच्चे, उनके जीवनसाथी और आठ पोते-पोतियाँ। यह परिवार एक साथ क्रिसमस मनाता था और हर गर्मियों में दो सप्ताह सेंट आइव्स में अपने माता-पिता के ग्रीष्मकालीन घर में बिताता था। मैट को अपने बच्चों के अपने चचेरे भाइयों और परिवार के साथ घनिष्ठ और प्रेमपूर्ण संबंधों पर गर्व था।
मैट अपने काम में सफल और खुश था। उसका जीवन उज्ज्वल दिख रहा था।
मैंने कहा, "मुझे बताओ कि तुम यहाँ क्यों हो।"

वह कुछ देर चुपचाप बैठा रहा। “मैंने पहली बार सोलह साल की उम्र में यौन संबंध बनाए थे। मेरी बहन की एक सहेली के साथ। कुछ दिनों बाद, मैंने स्कूल के एक दोस्त, एक लड़के के साथ यौन संबंध बनाए।”
विश्वविद्यालय में अपने अंतिम वर्ष तक, वह नियमित रूप से महिलाओं और पुरुषों दोनों के साथ शारीरिक संबंध बनाता रहा। अपने अंतिम सत्र में, उसकी मुलाकात जेमिमा से हुई। वह भी इतिहास और आधुनिक भाषा पाठ्यक्रम में थी। जब उनके बीच संबंध गंभीर हो गए, तो जेमिमा ने मैट के साथ रहने के लिए एक स्नातकोत्तर छात्र के साथ अपने दो साल के रिश्ते को तोड़ दिया। मैट ने अन्य महिलाओं के साथ यौन संबंध बनाना बंद कर दिया, लेकिन पुरुषों के साथ यौन संबंध बनाना जारी रखा। अपनी बीस साल की शादी के दौरान, बच्चों के जन्म के बाद के महीनों को छोड़कर, मैट और जेमिमा सप्ताह में एक या दो बार यौन संबंध बनाते थे। वह सप्ताह में एक या दो बार पुरुषों के साथ भी यौन संबंध बनाता था।
उन्होंने बताया कि वे जेमिमा से प्यार करते थे। उन्हें जेमिमा का यौन सुख और चरम सुख का अनुभव करना अच्छा लगता था, लेकिन उनके लिए असली यौन संबंध पुरुषों के साथ ही था। उन्होंने कहा कि यह "बिना किसी रोक-टोक के" यौन संबंध था।
मैंने मैट से पूछा कि क्या जेमिमा को पता है कि वह ऐसा महसूस करता है। उन्होंने बताया कि शुरुआत से ही वह उसके साथ खुलकर बात करते थे। पहली बार जब वे साथ सोए, तो उन्होंने उसे बताया कि वह पुरुषों के साथ भी यौन संबंध बनाते हैं। "ऑस्कर वाइल्ड, एलन ट्यूरिंग, जो ऑर्टन—मेरे बेडसाइड टेबल पर रखी उनकी जीवनियाँ इस बात का संकेत थीं।" वह हमेशा ईमानदार रहे थे—उन्हें होना ही था; क्योंकि वे दोनों एचआईवी और अन्य यौन संचारित रोगों को लेकर चिंतित थे। "वह सारी बातें जानना नहीं चाहती, और मैं भी उन्हें खुद नहीं बताता। मैं उससे कहता हूँ, 'काम के बाद मेरी एक मीटिंग है।' वह समझ जाती है।"
मैंने उनके और बोलने का इंतज़ार किया। उन्होंने समझाया कि उनके अनुसार विवाह और यौन संबंध एक दूसरे के विपरीत हैं। उन्होंने कहा, "समलैंगिक विवाह अपने आप में एक विरोधाभास है। अगर यह विवाह है, तो यह समलैंगिक विवाह नहीं है।"

मैंने दोबारा पूछा, "क्या जेमिमा को पता है कि शादी और सेक्स के बारे में आपके क्या विचार हैं?"
उन्होंने कहा, "मैं जानबूझकर उसे चोट नहीं पहुंचाऊंगा। मैं उससे प्यार करता हूं।"
लेकिन तुमने उसे सच नहीं बताया है।
मैंने उससे झूठ नहीं बोला है।
क्योंकि मैट ने जेमिमा से सीधा झूठ नहीं बोला था, इसलिए उसे लगा कि वह ईमानदार है। जेमिमा को पुरुषों के साथ यौन संबंध बनाने की उसकी इच्छा स्वीकार्य लग रही थी—उसका नियम था कि वह दूसरी महिलाओं के साथ यौन संबंध नहीं बनाएगा। क्योंकि मैट उसे दुख नहीं पहुंचाना चाहता था, इसलिए उसने उसे यह नहीं बताया था कि उसे पुरुषों के साथ यौन संबंध पसंद हैं। मुझे फ्रायड की एक बात याद आई: "जहां प्रेम होता है, वहां इच्छा नहीं होती, और जहां इच्छा होती है, वहां प्रेम नहीं हो सकता।" मुझे लगा कि शायद मैट की भी यही समस्या है, और मैंने उसे यही बताया।
वह असहमत था। उसने मुझे बताया कि वह जेमिमा से प्यार करता था, और उन कई पुरुषों से भी प्यार करता था जिनके साथ उसने शारीरिक संबंध बनाए थे। मैट ने मुझे बताया कि प्यार शक्ति की समानता है, दो लोगों के बीच उनकी इच्छाओं को लेकर एक आपसी समझ है। यह समानता वर्षों तक बनी रह सकती है—जैसा कि उसके और जेमिमा के बीच था—या एक संक्षिप्त, तीव्र यौन संबंध के दौरान कुछ मिनटों तक। "प्यार तब खत्म हो जाता है जब शक्ति का संतुलन बिगड़ जाता है, जब एक साथी खुद को शोषित महसूस करता है।"
मैंने कहा, "मुझे लगता है कि आप अंतरंगता का वर्णन कर रहे हैं।"
“क्या ये दोनों एक ही चीज नहीं हैं?”
महत्वपूर्ण बात यह है कि आप उन्हें एक ही चीज समझते हैं।
हमारा साथ बिताया समय समाप्त हो गया था। मुझे नहीं पता था कि मैट मुझसे या मनोविश्लेषण से क्या चाहता है। इसलिए, मैंने उससे पूछ लिया।
मैं समझ सकता हूँ कि दूसरे लोग कैसा महसूस करते हैं—मैं वैसा महसूस नहीं करता।
मैंने पूछा, "क्या आप और कुछ बता सकते हैं?"
“मुझे थोड़ा अवास्तविक सा लग रहा है,” उसने कहा। फिर वह चुप हो गया।

मैट ने जीने का एक ऐसा तरीका बना लिया था जिससे उसके व्यक्तित्व के कुछ पहलू एक-दूसरे से कटे रहते थे। अपने सबसे करीबी रिश्तों में भी वह कभी पूरी तरह से खुद नहीं होता था। मैंने कहा, "क्या तुम मुझसे समलैंगिक बनने में मदद मांग रहे हो?"
“मैं जेमिमा और बच्चों को कभी नहीं छोड़ूंगा। जुदाई का तो कोई सवाल ही नहीं।”
"क्या आप मुझसे शादी के बाहर यौन संबंध छोड़ने में मदद मांग रहे हैं?" "मैं क्यों?"
मैंने दोबारा कोशिश की। "आप चाहते हैं कि मैं आपको अपनी उभयलिंगिता को स्वीकार करने में मदद करूं।"
मैट ने मेरी तरफ ऐसे देखा मानो मैंने अपना दिमाग खो दिया हो।
“तो क्या मैं गुलाबी टी-शर्ट पहनकर प्राइड इवेंट में जा सकती हूँ? क्या आप मज़ाक कर रहे हैं? मैं बाइसेक्सुअल क्यों बनना चाहूँगी?”
मैंने जवाब दिया, "शायद आप एक ऐसी जगह चाहते हैं जहाँ आप अपने पूरे व्यक्तित्व को प्रकट कर सकें।"
मैट अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर बैठ गया, उसकी मुद्रा थोड़ी नरम हो गई। वह सहमत हो गया।

—

हम जिस तरह से यौन संबंध बनाते हैं, उसे समझने के लिए हमें अपने व्यक्तिगत इतिहास, विशेषकर अपने शुरुआती रिश्तों पर गहराई से विचार करना होगा। चाहे ये भावनाएँ गहराई से दबी हों या स्पष्ट रूप से दिखाई देती हों, वे जीवन में बहुत बाद में हमारे यौन व्यवहार को निर्देशित करती हैं। एक तरह से, हमारे यौन जीवन को हमारे शुरुआती भय, इच्छाओं और शत्रुताओं से उत्पन्न समस्याओं के समाधान के रूप में देखा जा सकता है।
मैट के मनोविश्लेषण के शुरुआती महीनों में, हमने पाया कि उसका यौन व्यवहार उसकी भावनाओं से नियंत्रित होता था, न कि उसकी कामुकता से (जो भी वह हो)। मैट खुद को न तो सीधा, न समलैंगिक, न उभयलिंगी मानता था। जहाँ तक मैं समझ पाई, वह अपनी कामुकता के बारे में कभी सोचता ही नहीं था। एक ओर, वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अपने जीवन की गहरी संतुष्टि और रीति-रिवाजों को

कल्पना और वास्तविकता के बीच अंतर नहीं कर पाता।” यदि किसी बच्चे से तब घृणा न की जाए जब वह कोई निंदनीय कार्य करता है, तो उसके द्वारा किए गए प्रेम—जब वह कोई प्रेमयोग्य कार्य करता है—उसके लिए वास्तविक नहीं होगा। “ऐसा लगता है कि वह घृणा का अनुभव करने के बाद ही प्रेम किए जाने पर विश्वास कर पाता है।”

—

दो साल से अधिक समय तक मनोविश्लेषण कराने के बाद, एक दिन मैट ने मुझे ईमेल भेजा। यह पहली बार था जब उसने मुझे लिखा था। उस दिन के सत्र में मैंने उससे जो कहा था, उसके बारे में शिकायत करने के बाद, उसने निष्कर्ष निकाला:

तुम मुझे पसंद नहीं करते। मैं तुम्हें पसंद नहीं करता। तुम्हारी मनोविश्लेषणात्मक चुप्पी मुझे ऐसा महसूस कराती है।
अशिष्ट। जब भी मैं आपसे सीधे बात करने की कोशिश करता हूँ, आप जवाब नहीं देते, या आपका
आपका जवाब बिल्कुल नीरस है। आप मुझे मूर्ख, सतही और घृणित महसूस कराते हैं।
मैं नापसंद करने लायक हूँ। मैं समझती हूँ। मैं आपकी पसंद की मरीज़ नहीं हूँ। आप मुझे देखना नहीं चाहते।
आप किसी चतुर और आकर्षक लड़की को देखना चाहते हैं? जेमिमा आपके टाइप की ज्यादा है।
मुझे समझ नहीं पा रहे हो। तुम मुझसे नफरत करते हो। मैं तुमसे नफरत करता हूँ। मैं बेवकूफ हूँ जो ऐसा करता रहता हूँ।
मैं तुम्हें देखता हूँ, लेकिन मैं देखता हूँ। इसलिए, मूर्ख मैं ही हूँ।
अपने अगले सत्र की शुरुआत में, मैट ने अपने ईमेल के लिए माफी मांगी।
उन्होंने गलती से ईमेल भेज दिया था। उन्होंने बताया कि कभी-कभी वे ईमेल या पत्र लिखते हैं, फिर उसे डिलीट कर देते हैं।
मैंने उनसे कहा कि मुझे खुशी है कि उन्होंने इसे भेजा। मैंने कहा, "आपने मुझे अपने मन की बात बता दी। हर समय अच्छा व्यवहार करते रहना कितना थका देने वाला होता होगा।"

मैट हँस पड़ा। "हाँ, ऐसा ही है।"

2

अबीगैल बी. का जन्म एक आकस्मिक घटना थी। उसके जन्म के कुछ ही समय बाद, उसके पिता ने उसकी माँ से कहा: "तुमने उसे चाहा था, अब तुम ही उससे निपटो।" अबीगैल की तीन बहनें थीं—जो उससे दस, आठ और छह साल बड़ी थीं—जिन्होंने उसे यह कहानी सुनाई थी। उसे यह सुनने की ज़रूरत नहीं थी। उसे हमेशा लगता था कि उसके पिता उससे नाराज़ हैं। वे उसकी बहनों के प्रति स्नेहपूर्ण थे, लेकिन उसके प्रति कभी नहीं।
अबीगैल बहुत होशियार थीं। उन्होंने न्यूकैसल के स्थानीय व्याकरण विद्यालय में पढ़ाई की और फिर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में शास्त्रीय साहित्य का अध्ययन किया। बाईस वर्ष की आयु में उन्हें शिकागो विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के लिए फुलब्राइट छात्रवृत्ति मिली। छह वर्षों के स्नातकोत्तर अध्ययन और पोस्टडॉक्टोरल अध्यापन के बाद, अबीगैल इंग्लैंड लौट आईं और विश्वविद्यालय में लेक्चरर के पद पर नियुक्त हुईं। यह अकादमिक जगत में शुरुआती, प्रथम श्रेणी का पद था।
नई नौकरी शुरू करने के कुछ ही समय बाद, एबिगेल मानसिक रूप से टूट गई। जब उसके मनोचिकित्सक ने उसे मेरे पास भेजा, तब वह अवसाद के कारण चिकित्सा अवकाश पर थी। एबिगेल नौकरी पूरी तरह से छोड़ना चाहती थी। दरअसल, छह सत्रों के बाद, उसने खुलकर यह सवाल किया कि क्या नियमित नौकरी के बिना भी जीवन यापन करने का कोई तरीका हो सकता है। जब मैंने उससे पूछा कि वह अपना गुजारा कैसे करेगी, तो वह हंस पड़ी। तभी उसने मुझे बताया कि शिकागो में पीएचडी की छात्रा रहते हुए वह एक यौनकर्मी भी थी। (लंदन के जिस पहले मनोचिकित्सक से उसने परामर्श लिया, उसने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया। एबिगेल ने बताया कि मनोचिकित्सक ने उससे कहा था, "तुम्हें लगता है कि तुम एक वेश्या थी।") पंद्रह साल की उम्र में, अबीगैल ने मुझे बताया, उसे लड़कों से प्यार हो गया था। उसे उनका आपस में मस्ती करना, उनकी बेचैनी और बेखौफियाँ बहुत पसंद थीं। उसने कहा, "मुझे रोमांच की बहुत चाह थी और लड़कों के साथ रहकर मुझे वो मिल जाता था।" विश्वविद्यालय में उसके कई बॉयफ्रेंड रहे। जब वह कैम्ब्रिज छोड़कर शिकागो में पीएचडी शुरू करने गई, तो उसने खुद को अलग-थलग और अकेला

महसूस किया। उसे पैसों की भी चिंता थी और वह अपने पिता से मदद नहीं मांगना चाहती थी। अपने पहले सेमेस्टर के दौरान, अबीगैल की दोस्ती एक और ग्रेजुएट छात्रा से हुई जो शहर के बीचोबीच 'द कैंडी स्टोर' नाम की जगह पर नाचकर अतिरिक्त पैसे कमाती थी। 'द कैंडी स्टोर' एक वेश्यालय का मुखौटा था। कई महीनों तक एक बूथ में कांच के पीछे नग्न नृत्य करने के बाद, अबीगैल ने उस वेश्यालय में काम करना शुरू कर दिया।
“रिसेप्शन पर पुरुष आते थे,” अबीगैल ने कहा। “वे ज्यादातर वित्तीय क्षेत्र से थे, कॉलेज से ग्रेजुएट थे। हम बाहर आते, लाइन में लगते, फिर ग्राहक अपना चुनाव करते।” उसने आगे कहा: “मैं सबसे खूबसूरत या सबसे आकर्षक नहीं थी, लेकिन ज्यादातर पुरुष मुझे ही चुनते थे।” उसने आगे बताया: “पुरुष मुझे इसलिए चुनते थे क्योंकि मैं जैसी दिखती थी वैसी ही थी: एक विश्वविद्यालय की छात्रा। युवा। किताबी कीड़ा। मैं गोरी, भोली-भाली। मेरे चेहरे पर थोड़ी सी मासूमियत थी। मैं ज्यादा मेकअप नहीं करती थी। मेरे शरीर पर टैटू नहीं हैं। मैं लॉन्जरी या हील्स नहीं पहनती थी; मैं सफेद टी-शर्ट और सफेद पैंट पहनती थी। मैं ऐसी दिखती थी जैसे वे मेरे साथ डेट पर जाना चाहेंगे।”
जल्द ही, एबिगेल के पास नियमित ग्राहक बन गए। उसने कहा, "मैंने अपना सौ प्रतिशत दिया।" ग्राहक उसे पसंद करने लगे। खूब पैसा आने लगा। "पैसा बढ़ता हुआ देखना बहुत संतोषजनक था; जीवन में पहली बार, आने वाला पैसा खर्च से कहीं अधिक था।" लेकिन इस काम में सिर्फ पैसा ही नहीं था। एबिगेल अपने एक सहकर्मी के बेटे को पढ़ाती थी; जब एक अन्य सहकर्मी के चार वर्षीय बेटे की जन्मजात हृदय रोग के कारण अचानक मृत्यु हो गई, तो उसने उसकी देखभाल की और बच्चे के अंतिम संस्कार की व्यवस्था करने में मदद की। एबिगेल को लगा कि उसकी कद्र की जा रही है।
पीएचडी पूरी करने के बाद, अबीगैल ने अपने थीसिस सलाहकार से लंदन में एक नए लेक्चरर पद के लिए आवेदन करने का आग्रह किया। जहाँ तक मुझे पता चला, अबीगैल ने इस बारे में नहीं सोचा था कि शिकागो में उसने जो समुदाय बनाया था, उसके बिना वह कैसा महसूस करेगी। उसने अपनी नई नौकरी में पूरी तरह से खुद को झोंक दिया, लेकिन कुछ महीनों बाद, उसे सोने और खाने में परेशानी होने लगी। पैनिक अटैक आने पर वह डॉक्टर के पास गई, जिन्होंने उसे एंटीडिप्रेसेंट दवाएं दीं और एक मनोचिकित्सक के पास भेज दिया। अबीगैल के एनोरेक्सिया और आत्महत्या के विचारों से चिंतित होकर, मनोचिकित्सक ने उसकी दवा बदल दी और मुझे

सप्ताह में पांच बार उससे मिलने के लिए कहा। जल्द ही, उसकी मनोदशा स्थिर हो गई।
कई महीनों के मनोविश्लेषण के बाद, एबिगेल ने एक सत्र की शुरुआत मुझे "एंटीडोट" शब्द की ग्रीक व्युत्पत्ति बताकर की: एक ऐसा उपाय जो जहर का असर कम करता है। फिर उसने कहा: "यौन कार्य मेरे पिता के लिए एक एंटीडोट था।" हर बार जब कोई ग्राहक उसे चुनता था, तो एबिगेल को "विशेष" महसूस होता था। जब एबिगेल किसी ग्राहक को चरम सुख देती थी, तो उसे लगता था कि उसने "उसकी देखभाल की है," "उसे शांत किया है।"
“उसने उसे खुश कर दिया”; अगर वह नियमित ग्राहक बन जाता, तो वह “उसे अपना बना लेती।” ये वही भावनाएँ थीं जो वह अपने पिता के साथ पाना चाहती थी। “यौन कार्य ने मुझे मेरे पिता से मुक्ति दिला दी।”
मैंने उससे कहा कि यौन कार्य ने उसे उसके पिता से मुक्ति नहीं दिलाई थी। वह अब भी उसके मन में छाया रहता था। हम बाकी सब लोगों से ज़्यादा उसके बारे में बात करते थे। क्योंकि उसके पिता उससे प्यार नहीं करते थे, इसलिए वह उनसे नफ़रत करती थी। उसके यौन कार्य को समझने का एक और तरीका यह था कि यह उसके पिता के प्रति एक गहरी प्रतिशोध की भावना थी। फिर अबीगैल को याद आया कि कभी-कभी, ग्राहकों से मिलते समय, वह खुद को यह सोचते हुए पाती थी: "मुझे यह करने का अधिकार है, और आप मुझे रोक नहीं सकते।" उस समय, उसे लगता था कि यह वाक्य उसके मन की कोई बड़बड़ाहट है। अब, उसे एहसास हुआ, वह शायद अपने पिता से बात कर रही थी। कुछ देर चुप रहने के बाद, उसने कहा: "मैं हर समय अपने मन में उनसे बात करती रहती हूँ।"
उसने एक लंबी सांस छोड़ी। उसने कहा, "मुझे नहीं लगता कि हम इसे कभी बदल पाएंगे।"
मैंने कहा, "हम वही करेंगे जो हमने अभी किया।"
"इसका क्या मतलब है?"
“हम इस समस्या को समझते हैं। इसे गंभीरता से लें।”
“तो फिर?” उसने कहा।
फिर हम इस बारे में बात करेंगे।

3

मैरी सी. चार साल की थी जब उसकी गर्भवती माँ का अचानक निधन हो गया। दो साल बाद, उसके पिता की भी दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई। मैरी को डबलिन से काउंटी स्लाइगो के एक गाँव में उसकी माँ के धर्मनिष्ठ कैथोलिक माता-पिता के साथ रहने के लिए भेज दिया गया। उसने स्थानीय कैथोलिक प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाई की और नियमित रूप से चर्च जाती थी।
मैरी को बचपन से ही महिलाओं के समुदाय में रहने की इच्छा थी। उन्नीस साल की उम्र में, उनके एक चचेरे भाई—जो हाल ही में पादरी बने थे—ने उन्हें लंदन के एक कॉन्वेंट से परिचित कराया। वहाँ एक सप्ताह के प्रवास के बाद, उन्होंने मदर सुपीरियर से कहा कि वह वहाँ शामिल होना चाहती हैं। मदर सुपीरियर ने उन्हें कुछ समय इंतजार करने का सुझाव दिया। इक्कीस साल की उम्र में, मैरी ने दीक्षा के लिए आवेदन किया और फिर नन बन गईं।
जब सिस्टर मैरी इक्यावन वर्ष की हुईं, तो उन्हें अपने "दुनिया से दूर" रहने के मूल निर्णय पर संदेह होने लगा। वे अवसादग्रस्त हो गईं। कॉन्वेंट के चिकित्सक के सुझाव पर, उन्होंने सप्ताह में चार बार मनोविश्लेषण कराना शुरू किया। मेरा बिल हर महीने उनकी मदर सुपीरियर द्वारा हस्ताक्षरित चेक से भुगतान किया जाता था।
सिस्टर मैरी के लिए मुझसे यौन संबंध के बारे में बात करना आसान नहीं था। उनका एक अन्य नन के साथ लंबे समय तक यौन संबंध रहा था—"मैं उसे बताती थी कि मैं उससे क्या करवाना चाहती हूँ।" एक अन्य अवसर पर, उन्होंने मुझे बताया कि उनके मठ में दिन के विशिष्ट समयों पर ही इस विषय पर चर्चा की अनुमति थी, और किसी एक नन की संगति को दूसरी नन से अधिक महत्व देना वर्जित था। परिणामस्वरूप, उन्हें नियमित रूप से "चुप रहने की बात" स्वीकार करनी पड़ती थी और यह भी कहना पड़ता था कि उनका "एक विशेष मित्र" है।
दो साल के मनोविश्लेषण के बाद, सिस्टर मैरी ने कॉन्वेंट छोड़ दिया। उन्होंने एक सहायता समूह में शामिल हो गईं जो पूर्व ननों को सांसारिक जीवन में वापस लौटने में मदद करता है। इसी समूह के माध्यम से उनकी मुलाकात पैट्रिक से हुई, जो एक पूर्व पादरी थे, और उनके साथ उनका प्रेम संबंध शुरू हुआ।
शादी से दो महीने पहले, मैरी और पैट्रिक के बीच यौन संबंध को लेकर बहस शुरू हो गई। मैरी ने मुझे बताया कि उसे अपने यौन संबंध की तीव्रता और आनंद तो बहुत पसंद था, लेकिन वह शारीरिक संबंध बनाने में देरी कर रही थी। अब वह

शादी की रात शारीरिक संबंध बनाने के लिए तैयार तो थी, लेकिन उसे डर था कि जब समय आएगा, तो वह ऐसा नहीं कर पाएगी। "बात सिर्फ सेक्स की नहीं है। मुझे अब भी गर्भवती होने की चिंता सता रही है।"
सिस्टर मैरी के मनोविश्लेषण की शुरुआत के कुछ ही समय बाद, हमें पता चला कि उन्हें गर्भावस्था का लगभग मनोविक्षिप्त भय था। उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या आप कल्पना कर सकती हैं कि आपके शरीर के अंदर एक शरीर हो? वह फट सकता है।"
साथ में काम करने के शुरुआती महीनों में, हम उसके डर के कुछ कारणों का पता लगाने में सक्षम हुए। सबसे पहले, उसकी गर्भवती माँ की अचानक मृत्यु का सदमा था। लेकिन उसके बचपन की अन्य घटनाओं ने भी उसके डर को बढ़ाने में योगदान दिया। जब वह ग्यारह साल की थी, तो उसकी धार्मिक शिक्षा की कक्षा में "प्रसव के चमत्कार" पर एक स्पष्ट वृत्तचित्र फिल्म दिखाई गई। खून से लथपथ तौलिए और प्रसवोत्तर द्रव से ढके नन्हे बच्चे को देखकर मैरी बेहोश हो गई। उसे एक और घटना याद आई: जब वह तेरह साल की थी, तो उसकी सबसे अच्छी दोस्त नियाम की साइकिल से घर जाते समय एक शराबी ड्राइवर ने टक्कर मार दी थी। मैरी ने नियाम के अंतिम संस्कार का वर्णन किया, जिसमें नियाम की माँ बार-बार अपनी बेटी का नाम पुकार रही थी। "वह लगातार रो रही थी। वह खुद पर काबू नहीं रख पा रही थी।" इस घटना के बाद से, मैरी जानती थी कि वह माँ नहीं बन सकती - वह अपने होने वाले बच्चे के जन्म और मृत्यु से भयभीत थी। उसका मानना था कि बच्चा पैदा करना ही उसकी जान ले लेगा।
धीरे-धीरे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि मैरी ने गर्भधारण से बचने के लिए नन बनने का फैसला किया था, और अब रजोनिवृत्ति से गुजरने के बाद, उनमें कुछ परिवर्तन आ गया था। वह मठ छोड़कर दुनिया में वापस लौटने के लिए तैयार थीं। शादी से कुछ सप्ताह पहले, हमने गर्भावस्था के प्रति उसके दोबारा जागने के डर पर चर्चा की, और ऐसा करते-करते यौन संबंध को लेकर उसकी चिंताएँ धीरे- धीरे कम हो गईं। बाद में, अपनी शादी की रात का वर्णन करते हुए, मैरी ने मुझे बताया कि यह "एक उपचार जैसा था। इसने मुझे स्थिरता और ऊर्जा का अहसास कराया।"

4

जब आप छोटे बच्चे थे—कमजोर, जरूरतों से भरे हुए—तब आपने अंतरंगता के बारे में क्या सीखा?
मैरी को पता चला कि यौन संबंध से गर्भावस्था हो सकती है, जो जानलेवा भी हो सकती है। रजोनिवृत्ति के बाद ही उन्हें इतना सुरक्षित महसूस हुआ कि वे अपने कॉन्वेंट से बाहर निकलकर यौन संबंध बनाने लगीं। दूसरे शब्दों में, गर्भावस्था के डर ने ही उनके यौन जीवन को आकार दिया।
अबीगैल ने इस बात को आत्मसात कर लिया था कि वह प्रेम के योग्य नहीं है, एक दर्दनाक सच्चाई जिसे उसके पिता के व्यवहार से हर दिन और पुख्ता किया जाता था। अपने दूर रहने वाले पिता के लिए उसकी तड़प और नफरत की भावनाएँ उसके भीतर इतनी गहराई से दबी हुई थीं कि उसे लगा कि उसने उनसे छुटकारा पा लिया है। लेकिन वे अनदेखे भाव एक साथ जमा हो गए और एक शक्तिशाली अदृश्य शक्ति बन गए जो उसके यौन व्यवहार को निर्देशित कर रही थी।
हम कैसे सोचते हैं, यही हमारी पहचान है। कई साल बाद—जब अबीगैल की शादी हो गई, वह माँ बन गई और शिक्षा के क्षेत्र में उसने कुछ सफलता हासिल कर ली—जब हम उसके मनोविश्लेषण के अंतिम चरण में थे, तब उसने मुझे बताया कि यह एहसास कि वह लगातार अपने पिता से मन ही मन बातें कर रही थी, उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। उसने अपने पिता और खुद के बारे में अलग तरह से सोचना शुरू कर दिया। “जैसे-जैसे उसका आकार छोटा होता गया, मेरे मन में अपने जीवन के लिए अधिक जगह बन गई।”
मैट ने यह जान लिया था कि नफ़रत सब कुछ बर्बाद कर देती है। अपनी प्रेमिका से नफ़रत करने की आज़ादी न मिलने की समस्या का हल निकालने के लिए उसने अपनी यौन ज़िंदगी को ही चुना था। क्योंकि उसे हमेशा "अच्छा" बनकर रहना पड़ता था, इसलिए वह हमेशा व्यस्त रहता था—जेमिमा और कई अन्य यौन साथियों के बीच घूमता रहता था। इस गतिविधि से उसे जेमिमा के प्रति नफ़रत महसूस करने का जोखिम कम करने में मदद मिली। (अफेयर, हस्तमैथुन, सेक्स वर्कर—इन सभी का इस्तेमाल अपने साथी से अपने व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं को छिपाने के लिए किया जा सकता है।) मैट ने अपनी ज़िंदगी को इस तरह व्यवस्थित किया था कि उसकी दुश्मनी को अलग करके उन लोगों से दूर रखा जा सके जिनसे वह प्यार करता था। एक राजनीतिक सलाहकार के रूप में उसके काम ने उसे दूर के लोगों, अपने राजनीतिक दुश्मनों से नफ़रत करने की अनुमति दी। क्योंकि वह अपनी नफ़रत को

ज़ाहिर नहीं कर सकता था, इसलिए उसके सबसे करीबी रिश्ते बनावटी और खोखले लगते थे—उसके शब्दों में कहें तो, "अवास्तविक"।
ये मरीज़ मेरे पास निराशा की अलग-अलग अवस्थाओं में आए थे। प्रेम भी हमें असुरक्षित और असहाय महसूस करा सकता है। शायद मन की इसी अवस्था में—जब हम अनिश्चित होते हैं कि क्या करें, जब हमें पता नहीं होता कि किस रास्ते पर जाना है—हम खुद को बेहतर ढंग से समझने के लिए प्रेरित होते हैं।
हम अपने यौन स्वरूप को तभी समझ सकते हैं जब हम स्वयं की ओर यात्रा करें। यह आंतरिक यात्रा हमें समय में आगे-पीछे ले जाती है। जैसे-जैसे हम याद करते हैं, वैसे-वैसे हम खोजते हैं। खोजते हुए, हम याद करते हैं। अपने हृदय का ज्ञान हमारे हृदय से ही आना चाहिए। यह ज्ञान हमें प्राप्त नहीं होता। यह हमें उस यात्रा के अंत में मिलता है जिसे कोई और हमारे लिए नहीं कर सकता।

कनेक्शन

1

मेरी पहली मुलाकात सुसान वोल्फ और कोरा सिस्किन से जुलाई 1990 में हुई, जब मैंने अमेरिकी और यूरोपीय मनोविश्लेषकों के एक छोटे द्विवार्षिक सम्मेलन में भाग लेना शुरू किया। छह वर्षों में, चार सम्मेलनों - कॉर्क (1990), कोपेनहेगन (1992), एंटीबेस (1994) और ग्लासगो (1996) - में मुझे वोल्फ दंपति, सुसान और उनके पति पॉल, और सिस्किन दंपति, कोरा और उनके पति मार्टिन से मिलने का मौका मिला। मैं चालीस वर्ष की आयु के आसपास थी, अविवाहित थी, और मैंने इन सभी सम्मेलनों में अकेले भाग लिया।
कॉर्क में ही मेरी नज़र सबसे पहले सुसान पर पड़ी। हम दोनों एक ही क्लिनिकल सेमिनार में थे। उसके खुले, लंबे, काले घुंघराले बाल और बहुत कम या बिना मेकअप के, उसे देखकर मुझे बर्कले में अपने स्नातक के दिन याद आ गए। मुझे उसकी अमेरिकी शैली बहुत पसंद आई: वह बात करते समय लोगों को छू जाती थी; होटल के कर्मचारियों से मिलते समय वह मुस्कुराती थी।
इस सम्मेलन के प्रत्येक सेमिनार में आठ लोग शामिल थे—अमेरिका से चार मनोविश्लेषक और यूरोप से चार। हम विभिन्न मनोविश्लेषणात्मक समाजों और विभिन्न नैदानिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। उद्देश्य यह था कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के कार्य करने के तरीके को सीख सके। प्रक्रिया सरल थी: प्रत्येक प्रतिभागी ने एक गुमनाम, चल रहे विश्लेषण से संबंधित कार्य प्रस्तुत किया—रोगी के जीवन इतिहास का वर्णन किया, मनोविश्लेषण का विवरण दिया, और फिर समूह के साथ चर्चा के लिए हाल ही के एक सत्र का संक्षिप्त विवरण (उसने कहा, मैंने कहा) पढ़कर सुनाया। इस तरह नैदानिक प्रक्रिया को धीमा करने से इसके मूल तत्व—विश्लेषक के सिद्धांत और व्यवहार के बीच का संबंध—स्पष्ट हो जाता है।
फ्लाइट में देरी होने के कारण कोरा पहले प्रेजेंटेशन में शामिल नहीं हो पाईं, लेकिन लंच के बाद वह हमारे ग्रुप में शामिल हो गईं। उन्होंने नेवी ब्लू रंग का सूट पहना था और उनके सुनहरे बाल करीने से जूड़े में बंधे हुए थे। उनके शांत स्वभाव के कारण वह थोड़ी पुराने ख्यालों की लग रही थीं, इसलिए उनका क्लिनिकल प्रेजेंटेशन हमारे लिए आश्चर्य की बात थी।

कोरा वक्ता की कुर्सी पर बैठ गईं। उन्होंने अपने प्रस्तुतीकरण सत्र की एक प्रति बाँटी, अपनी प्रति एक तरफ रखी, आगे झुकीं और बोलना शुरू किया। उन्होंने तीस वर्ष के एक व्यक्ति के साथ अपने अनुभव का वर्णन किया, जिसे उन्होंने जॉन स्मिथ नाम दिया। यह मरीज़ सफल, बुद्धिमान और मददगार था, लेकिन वह किसी से भी सार्थक संबंध नहीं बना पाता था, हालाँकि उसे इसका एहसास भी नहीं था। वह एक स्त्री से दूसरी स्त्री के पास भटकता रहता था। उसमें एक प्रकार की शांति और तर्कसंगतता थी, लेकिन यह दिखावटी परिपक्वता उसने स्वयं से और दूसरों से वास्तविक भावनात्मक संपर्क के अभाव में हासिल की थी। कोरा ने कहा कि उन्हें लगता था कि वह व्यक्ति "अंतहीन" था। उनकी वाक्पटुता अद्भुत थी।
सत्र के दौरान, कोरा ने जो कुछ पढ़ा, उसमें श्री स्मिथ ने अपनी प्रेमिका द्वारा उनसे संबंध तोड़ने के बारे में अपने हमेशा के खोए हुए अंदाज़ में बात की। कोरा चुप रही। आखिरकार, उसने कहा, "तो आपको क्या लगता है कि मैं जॉन से कब मिल सकती हूँ?" मरीज़ का दिमाग उलझन में था। उसने उसे कुछ देर तक उसी हालत में रहने दिया। फिर उसने कहा, "आप मुझसे ऐसे बात कर रहे हैं जैसे हम सहकर्मी हों—दो मनोविश्लेषक एक मरीज़—जॉन स्मिथ नाम के किसी व्यक्ति— के बारे में चर्चा कर रहे हों। अगर मुझे उसकी मदद करनी है," उसने आगे कहा, "तो मुझे उसे इस कमरे में आने और अपनी चिंताओं को मेरे सामने रखने की ज़रूरत है।" फिर, एक लंबे विराम के बाद, उसने कहा: "हम जॉन के बारे में बात कर रहे हैं, मुझे जॉन से बात करनी है।" मरीज़ पर इसका ज़बरदस्त असर हुआ। चर्चा के दौरान, सुसान, कोरा और मेरे बीच एक गठबंधन बनने लगा। समूह के अधिकांश सदस्य श्री स्मिथ के निदान के बारे में बातचीत में मग्न थे। क्या वे ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम पर थे? क्या वे हिस्टीरिया के शिकार थे? हम तीनों को सत्र के माहौल में दिलचस्पी थी: वे किस तरह दूरी बनाए रखते थे, और क्यों। सुसान ने यह बात रखी कि ऐसे मरीज़ होते हैं, जिनकी मनोविकृति अलग-अलग होती है, लेकिन उनमें एक सामान्य विशेषता होती है: वे मरीज़ होने का दिखावा करते हैं। उन्होंने पूछा, हम ऐसे मरीज़ तक कैसे पहुँच सकते हैं जो विश्लेषण में शामिल नहीं होना चाहता?
उस शाम हम सब छोटे से होटल के रेस्तरां में इकट्ठा हुए। मेरी मुलाकात सुसान के पति पॉल से हुई, जो एक खाद्य पत्रकार और कुकबुक लेखक हैं। जब मैं यह लिख रही हूँ, तो मुझे याद है कि उन्होंने काले रंग का पोलो स्वेटर और

खाकी रंग की प्लीटेड पैंट पहनी हुई थी। न्यूयॉर्क में जन्मे और पले-बढ़े, वे लंबे-चौड़े, खुले विचारों वाले और स्पष्टवादी थे। उन्होंने मुझे अपने तीन किशोर बच्चों और वजन कम करने के अपने अथक संघर्ष के बारे में बताया। पहली ही मुलाकात में, मुझे वे अच्छे लगे।
कोरा के पति मार्टिन भी वहाँ मौजूद थे। हालाँकि वे मनोविश्लेषक थे और एनवाईयू के मनोचिकित्सा विभाग में पढ़ाते थे, फिर भी वे सम्मेलन में भाग नहीं ले रहे थे। जब मैंने उनसे पूछा कि वे अपना समय कैसे बिता रहे हैं, तो उन्होंने बताया कि वे ज़्यादा कुछ नहीं कर रहे हैं—पढ़ रहे हैं, दक्षिणी तट के एक हिस्से में पैदल यात्रा कर रहे हैं; उन्होंने ली नदी पर एक दिन के लिए फ्लाई-फिशिंग के लिए एक गाइड भी किराए पर लिया था। मार्टिन मुझे दयालु और साथ ही गंभीर स्वभाव के लगे। मुझे लगा कि वे शायद एक उत्कृष्ट मनोविश्लेषक होंगे।
वोल्फ और सिस्किन दोनों परिवार न्यूयॉर्क से थे। सुसान और उनके पति ने हाल ही में ब्रुकलिन में एक ब्राउनस्टोन घर खरीदा था। कोरा और उनके पति अपनी दो किशोर बेटियों के साथ अपर वेस्ट साइड में रहते थे। हालांकि सुसान और कोरा में कई समानताएं थीं, लेकिन उन्होंने अलग-अलग संस्थानों से प्रशिक्षण लिया था, वे अलग-अलग मनोविश्लेषणात्मक समितियों की सदस्य थीं और उनकी कार्यशैली पूरी तरह से भिन्न थी।
रात के खाने से पहले, सुसान समुद्र तट पर टहलने गई थी। वह हल्के वाटरप्रूफ जैकेट और पुराने लेकिन अच्छी तरह से देखभाल किए गए चमड़े के हाइकिंग बूट पहनकर रेस्तरां में आई। उसके हाथ में एक कैनवास का बैग था। सुसान में एक तरह की सहजता और आज़ादी झलक रही थी। जब कोरा रात के खाने के लिए आई, तो उसने काले सूट के साथ सफेद शर्ट पहनी हुई थी। उसके मैनीक्योर किए हुए नाखून गहरे लाल रंग के थे। हालांकि कोरा मिलनसार और मेहमाननवाज थी, लेकिन वह किसी व्यावसायिक बैठक से आई हुई लग रही थी, हालांकि ऐसा होना संभव नहीं था। वोल्फ और सिस्किन परिवार बहुत ही आकर्षक लोग थे। मैं एक दशक से अधिक समय से इंग्लैंड में रह रहा था, लेकिन मैं अमेरिकी था और मुझे अमेरिका की याद आती थी। अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे समझ आता है कि मैं न केवल उन दोनों व्यक्तियों के प्रति आकर्षित था, बल्कि उनकी अमेरिकी पहचान—उनका आत्मविश्वास, भविष्य की उम्मीद और अपनी खुशी की तलाश में उनका दृढ़ विश्वास—भी मुझे बहुत भाता था।

1992 में, कॉर्क के प्रतिभागियों को अगले अमेरिकी-यूरोपीय नैदानिक सम्मेलन के लिए कोपेनहेगन आमंत्रित किया गया था। एक बार फिर, प्रत्येक सेमिनार में आठ लोग थे—अमेरिका से चार विश्लेषक और यूरोप से चार। सम्मेलन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए—अन्य परंपराओं के मनोविश्लेषकों के कार्य करने के तरीके को सीखना—सुसान, कोरा और मुझे अलग-अलग सेमिनारों में रखा गया था। जब भी हमें समय मिलता—कॉफी ब्रेक या भोजन के समय—हम एक-दूसरे से मिलते थे। काम के बाद, हम साथ में कुछ काम करते थे। मुझे याद नहीं कि हमने क्या बातें कीं। मुझे इतना ज़रूर याद है कि हमने जितना भी समय मिल सका, साथ बिताया।
दो साल बाद, एंटीबेस में एक सम्मेलन में, मैं सुसान से होटल की लॉबी में उसकी क्लिनिकल प्रस्तुति से एक रात पहले मिली। उसने कहा कि उसे चिंता है कि उसकी प्रस्तुति बहुत अच्छी नहीं थी। क्या मैं उस पर एक नज़र डाल सकती हूँ?
उसकी मरीज़ एक जटिल रोगी थी—एक अवसादग्रस्त, आत्म-विनाशकारी तेईस वर्षीय महिला, जो अपनी माँ से बुरी तरह उलझी हुई थी। सुसान की मरीज़ और उसकी माँ दोनों ही मनोविश्लेषण को असफल होते देखना चाहती थीं। एक बातचीत में, सुसान ने मरीज़ को धीरे से समझाया कि वह शायद अपने मनोविश्लेषण को बिगाड़ना चाहती है ताकि खुद को और अपनी माँ को यह तसल्ली दे सके कि उसकी मदद करने वाली एकमात्र व्यक्ति उसकी माँ ही है। मरीज़ रोने लगी, और सुसान को उससे बड़े होने के दुख के बारे में बात करने का मौका मिल गया।
सुसान का नैदानिक कार्य उत्कृष्ट था, और मैंने उसे यह बताया भी। फिर से, उसने मुझे बताना शुरू किया कि वह खुद से निराश है। लेकिन वह रुक गई। उसमें यह समझने की सूझबूझ थी कि उसकी असफलता की भावना शायद उसके मरीज़ से जुड़ी हो सकती है। सुसान ने कहा, "वह एक परफेक्शनिस्ट है। वह शायद देखना चाहती है कि जब चीजें गलत होती हैं तो मैं कैसे सामना करती हूँ।" उसकी यह अंतर्दृष्टि मुझे बहुत प्रभावित कर गई। खुद के लिए एक नोट लिखते हुए उसने कहा, "मुझे यह बात याद रखनी चाहिए कि मेरी असफलता का भी कुछ महत्व हो सकता है। अपने मनोविश्लेषक को अपनी सीमाओं को स्वीकार करते हुए, असफलता को मानते हुए देखना उपयोगी हो सकता है।" सुसान ने मुझे गले लगाया।
हम बाकी लोगों से कॉन्फ्रेंस होटल के सामने वाली गली में एक बार में मिले। पॉल सिस्किन्स को अपने भाई के बारे में बता रहा था। उसके भाई को सिस्टिक

सम्मेलन के पहले दिन, शनिवार की सुबह, मैंने सुसान को होटल की लॉबी में उस शाम के "भव्य रात्रिभोज" के लिए बैठने की व्यवस्था का निरीक्षण करते हुए पाया। उसने ऊपर देखा और मार्टिन को देखा। उसने उससे पूछा, "हम साथ क्यों नहीं हैं?"
मार्टिन ने उसे खाली निगाहों से देखा। "अगर तुम वजह जानना चाहती हो, तो अपने पति से पूछो।"
सुसान पॉल को ढूंढने के लिए अपने होटल के कमरे में गई। पॉल ने उसे बताया कि पिछले दो सालों से—एंटीबेस में हुए पिछले सम्मेलन के बाद से—उसका कोरा के साथ अफेयर चल रहा था।
सुसान गुस्से में बाहर निकल गई। उसने कोरा और मार्टिन का होटल का कमरा ढूंढा। कोरा वहां अकेली थी। कमरे में तीखी आवाजें आ रही थीं। सुसान ने कोरा से कहा कि उन्हें बात करनी है। दो घंटे बाद, होटल से कुछ गलियों की दूरी पर एक कैफे में उनकी मुलाकात हुई।
उस रात न तो मार्टिन सिस्किन और न ही वोल्फ परिवार गाला डिनर में शामिल हुए, लेकिन कोरा और मैं गए थे—उसने कहा कि उसे कमरे से बाहर निकलना है और वह बात करना चाहती है। उसने कहा कि वह नहीं चाहती थी कि सुसान को इस यात्रा पर या इस तरह से पता चले। उसने मुझे यह नहीं बताया कि मार्टिन को कैसे पता चला, और मैं पूछने में हिचकिचा रही थी। कोरा ने हमारी बातचीत का अधिकांश समय सुसान के साथ उस दिन हुई बहस को दोहराने में बिताया, बार-बार उन दोनों के बीच हुई बातों को दोहराती रही। अगले दिन, रविवार की सुबह, सुसान ने मुझे अपना पक्ष बताया। यह लगभग कोरा के पक्ष से मिलता-जुलता था।
और फिर सम्मेलन समाप्त हो गया। रविवार शाम को, मैंने ग्लासगो से लंदन के लिए ट्रेन पकड़ी। पाँच घंटे की यात्रा के अधिकांश समय मैं खिड़की से बाहर देखता रहा, उनके बीच हुई बातचीत को बार-बार अपने मन में दोहराता रहा। कुछ देर बाद, अंधेरा होने पर, मैंने वही किया जो मैं अक्सर तब करता हूँ जब मैं असमंजस में होता हूँ। मैंने अपनी नोटबुक खोली और सब कुछ लिख लिया।

3

जब कोरा कैफे में दाखिल हुई, तब सुसान पहले से ही एक मेज पर कॉफी का कप लिए बैठी थी और उसने धूप का चश्मा पहन रखा था।

(“बार्थेस की रचना से हूबहू प्रेरित,” कोरा ने बाद में मुझसे कहा। जब मैंने उससे पूछा कि उसका क्या मतलब है, तो उसने मुझे 'ए लवर्स डिस्कोर्स' के उस खंड की याद दिलाई, जिसका शीर्षक है "डार्क ग्लासेस," जो आहत प्रेमी के प्रशंसनीय और दयनीय दोनों बनने के प्रयास का वर्णन करता है—अपने लाल आंखों वाले दुख को छिपाने और उस पर ध्यान आकर्षित करने के लिए काले चश्मे पहनना।)
सुसान की शुरुआती बात सुनकर कोरा चौंक गई।
“आप ज्यादा पढ़ाते या लिखते नहीं हैं। मुझे लगा था कि आप अपने परिवार में ही व्यस्त रहते हैं।”
कोरा ने कुछ नहीं कहा। फिर उसने कहा, "सुसान, तुमने मुझे यहाँ मिलने के लिए कहा था। मैं यहाँ हूँ।"
"तुम्हारे साथ क्या बात है?"
कोई बात नहीं।
“नहीं—तुम्हें सच में कुछ गंभीर समस्या है। क्या तुम बूढ़े हो रहे हो? या मरने वाले हो?”
कोरा ने शांत भाव से उत्तर दिया, "मुझे ठीक से नहीं पता कि आप मुझसे यहाँ क्या करवाना चाहते हैं।"
"मैं चाहती हूं कि तुम मेरे पति के साथ संबंध बनाना बंद करो," सुसान ने कहा।
"होने वाला नहीं है।"
"क्या?"
“ऐसा नहीं होने वाला है। मैं यह आपको निशाना बनाने के लिए नहीं कर रही हूँ। मैं यह इसलिए कर रही हूँ क्योंकि मैं पॉल के साथ एक नया जीवन शुरू करना चाहती हूँ।”
“तुम्हें क्या चाहिए? हिटलर तो पोलैंड चाहता था।”
"रुकना।"
"तुम्हें बिल्कुल यही करना चाहिए—बस करो। मैनीक्योर, लाल नेल पॉलिश, डिजाइनर सूट सब बंद करो—मेरे पति के साथ संबंध बनाना बंद करो और वैवाहिक चिकित्सा करवाओ।"
मैं यहां इसलिए हूं क्योंकि आपने कहा था कि हमें बात करने की जरूरत है। “हम बोल रहे हैं, लेकिन आप सुन नहीं रहे हैं। अपना रिसीवर चालू करें।”

मैं सुन रहा हूँ, मैंने आपकी बात सुन ली है। मुझे खेद है कि आप कष्ट झेल रहे हैं। लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता।
"वास्तव में?"
“यह तुम्हारी उदासी है—तुम्हारा दुख है—तुम्हें इसे समझना होगा, इससे निपटना होगा—”
“बच्चों का क्या होगा, उनकी पीड़ा का क्या होगा?”
“वे शिशु नहीं हैं। राहेल एक साल में विश्वविद्यालय में होगी। हाँ, इससे बच्चों को दुख होगा, लेकिन—”
“परेशान? यह मेरे बच्चों के लिए—और आपके बच्चों के लिए भी—एक आपदा है।” मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए! हाँ, इससे बच्चे परेशान होंगे—सभी बच्चे — लेकिन समय के साथ, वे शायद इससे कुछ मूल्यवान सीख लेंगे।
“तुम्हारी ये दयनीय मध्यजीवन संकट की स्थिति मेरे बच्चों को क्या सिखा सकती है? प्यार मत करो? शादी मत करो?”
“जानिए आप क्या चाहते हैं। जब आपको वह मिल जाए, तो उसे पाने के लिए प्रयास कीजिए।”
“आपकी बातें फ्रिज पर चिपकी चुंबक की तरह लग रही हैं। मेरे बच्चों को बेवकूफी भरे नारे नहीं चाहिए। वे चाहते हैं कि उनके माता-पिता साथ रहें।” "बच्चे होने से जीवन समाप्त नहीं हो जाता।"
“असल में, आप यहाँ गलत हैं। जब आपके बच्चे होते हैं, तो आप जो चाहें वो करने के लिए स्वतंत्र नहीं हो जाते। अपनी अकड़ छोड़ो। आप और मार्टिन मदद क्यों नहीं लेते? अपनी शादी सुधारो—मेरी शादी क्यों बर्बाद कर रहे हो? अरे, आप तो विश्लेषक हैं।”
"मुझे पता है कि।"
तो फिर समझदार बनो! मुझे अफ़सोस है कि तुमने कभी यह नहीं सीखा कि मनोविश्लेषक होने का असली मतलब क्या होता है—तो मैं तुम्हें बताता हूँ: सुधार करना। मरम्मत करना। सहानुभूति रखना। दूसरों की परवाह करना। सीमाओं का सम्मान करना। वास्तविकता को देखना। किसी दोस्त के पति को न चुराना। नैतिक होना। तुम क्यों हंस रहे हो?
मुझे नहीं पता मैं किस बात पर हंस रही हूँ—शायद आप पर। आप मनोविश्लेषक जैसे नहीं लगते। आप किसी बूढ़े रब्बी की तरह लगते हैं। 'समझदार' होने की आपकी उन्नीसवीं सदी की धारणा—जिससे आपका असल मतलब यह है कि मुझे सही

व्यवहार करना चाहिए। मनोविश्लेषण के बारे में मेरी सोच इससे बिल्कुल अलग है।
“क्या तुम शादीशुदा जोड़े को अलग करने की कोशिश कर रहे हो? क्या तुम मम्मी से पापा छीनना चाहते हो? तुम बिल्कुल ही बिगड़े हुए हो। जब तुम इस तरह से अपनी जिंदगी जीते हो तो तुम किसी की मदद करने का दिखावा कैसे कर सकते हो? मॉरी क्या कहता है?”
"मुझे माफ़ करें?"
"क्या आप दोबारा विश्लेषण के लिए गए हैं?"
मुझे मॉरी के पास वापस जाने की जरूरत नहीं है।
"ओह कोरा, तुम्हें सचमुच मॉरी के पास वापस जाना चाहिए।"
मुझे पता है वह क्या कहेगा।
"वह तुमसे कहता कि वेश्या की तरह व्यवहार करना बंद करो और मनोविश्लेषक की तरह व्यवहार करना शुरू करो।"
“नहीं। वह कहते थे: ‘तुम अपने प्रियजनों को चोट नहीं पहुँचाना चाहते, लेकिन अगर तुम्हें खुद को पाने के लिए, अपनी मनचाही जिंदगी जीने के लिए उन्हें चोट पहुँचानी पड़े, तो तुम वही करोगे।’”
"क्या आप एक मिनट के लिए वैसे सोच सकते हैं जैसे वास्तव में एक मनोविश्लेषक सोचता है?"
मैं यही कर रहा हूँ।
"नहीं, आपको यह सोचना शुरू करना होगा कि शायद आप वास्तव में जो चाहते हैं - वास्तव में जो चाहते हैं - वह पॉल नहीं है, बल्कि उन लोगों को बर्बाद करना है जो आपसे प्यार करते हैं।"
मैंने यह अपने परिवार को दुख पहुंचाने के लिए नहीं किया…
और फिर भी आप ठीक वही कर रहे हैं।
मुझे अपने परिवार और आप सभी को जो तकलीफ हो रही है, उसके लिए बहुत खेद है।
सच में। लेकिन यह कोई त्रासदी नहीं है। यह कोई भयानक बायोप्सी नहीं है।
कोई मरने वाला नहीं है। हम सब इससे उबर जाएंगे। यही तो जिंदगी है।
तुमसे बात करने का कोई फायदा नहीं है।
“सुसान।”
आपको अपने आप पर इतना भरोसा है, भविष्य पर इतना भरोसा है।

“बेशक, मुझे भविष्य का पता नहीं है। लेकिन मैं पॉल के साथ भविष्य चाहती हूं। यही मेरे लिए और उसके लिए भी ज्यादा मायने रखता है।”
"पॉल क्या चाहता है, इस बारे में मुझसे बात मत करो। तुम एक समाजविरोधी हो।" “तुम बेतुकी बातें कर रहे हो। मैं भी इंसान हूँ।”
"इससे कुछ हासिल नहीं होने वाला है।"
"खैर, मुझे लगता है कि हम कुछ हद तक सफल हुए हैं। हमने यह सब सबके सामने ला दिया है।"
"जाओ भाड़ में जाओ।"
सुसान ने खुद को मेज से दूर धकेल दिया।
“मत जाओ,” कोरा ने कहा।
“मैं तुमसे नफरत करती हूँ। मार्टिन तुमसे नफरत करता है। तुम्हारी बेटियाँ, मेरे बच्चे—वे सब तुमसे नफरत करेंगे। और एक दिन—क्योंकि तुमने उसकी जिंदगी बर्बाद कर दी है—पॉल भी तुमसे नफरत करेगा।”
सुसान खड़ी होकर बोलती रही: "इसे समझने की कोशिश करो।"
उसने अपने कैनवास के थैले में हाथ डाला, अपना बटुआ निकाला, मेज पर पांच पाउंड का नोट पटका और चली गई।

4

ग्लासगो में उस आखिरी रात के भव्य रात्रिभोज में, जब हम दोनों अकेले थे, कोरा और मैंने एक खाली मेज ढूंढ ली। भुने हुए सूअर के मांस और मसले हुए आलू के साथ, उसने मुझे पॉल के साथ अपने प्रेम प्रसंग की कहानी सुनाई। "एंटीबेस की लड़ाई के एक महीने बाद, अगस्त की छुट्टी के बाद, जब हम न्यूयॉर्क वापस आ गए, तो मैंने उसे फोन किया। मैंने पॉल से पूछा कि क्या वह मिलना चाहेगा। उसने हाँ कहा।"
"यह एक बड़ा कदम था।"
“एंटीबेस में हमारी आखिरी रात, होटल वापस जाते समय टैक्सी में, मैंने अपना पैर उसके पैर से टिका दिया। वह हिला तक नहीं। जब हम सब एक-दूसरे को शुभ रात्रि कह रहे थे, तब मुझे महसूस हुआ कि वह नहीं चाहता था कि मैं जाऊं।” "और तब?"

“हम कॉफी पीने के लिए मिले। उसने कहा कि उसे मेरा पहनावा पसंद आया। मैंने उससे कहा कि मैंने उसके लिए ही ये कपड़े पहने हैं। हम कैफे से बाहर निकले, उसने मेरा हाथ पकड़ा, मुझे एक गली में ले गया और हमने चुंबन किया। बस इतना ही।”
वेटर द्वारा हमारे वाइन के गिलास भरने के बाद, उसने आगे बात जारी रखी। “मुझे उसकी ईमानदारी बहुत पसंद थी—उसने मुझे यह नहीं बताया कि सुसान के साथ उसके संबंध अच्छे नहीं थे, या वे अलग होने की सोच रहे थे, या वह अकेला था। एक बार मैंने उससे पूछा था कि क्या वे नाखुश हैं।”
"और?"
उन्होंने कहा, “बिल्कुल नहीं।”
कोरा ने अपना नैपकिन मोड़ा। उसने कहा, "मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो यह मानते हैं कि आप केवल एक ही व्यक्ति से प्यार कर सकते हैं।"
अपने प्रियजनों, विशेषकर बच्चों को दुख पहुँचाना उसे बहुत बुरा लगता था। “अगर हम अपना रिश्ता जारी रख पाते तो शायद सब कुछ आसान होता, लेकिन हम एक-दूसरे से प्यार करने लगे। मैं इसे किसी और तरह से नहीं कह सकती।”
कोरा कुछ पल चुप रही, फिर उसने ऊपर देखा। "मैं आपको बस इतना बता सकती हूँ: पॉल के साथ जो आत्मीयता मैं महसूस करती हूँ, वैसी आत्मीयता मैंने पहले कभी महसूस नहीं की।"
“तो, बात सेक्स की है?” मैंने चिढ़ाते हुए कहा।
“हां, कुछ हद तक,” कोरा हंसते हुए बोली। “मैं हमेशा सोचती थी कि मैं कामुक हूं, लेकिन असल में मेरी सेक्स लाइफ कभी अच्छी नहीं रही, इसलिए मैं कभी पक्का नहीं कह सकती थी।” उसने आगे कहा, “अब तक मैं सेक्स को एक साधन के रूप में इस्तेमाल करती रही हूं: किसी पुरुष को मुझसे प्यार करवाने का तरीका। झगड़े के बाद सुलह करने का तरीका। शादी को बचाए रखने का तरीका।”
कोरा फिर हंस पड़ी। “मनोविश्लेषक यौन संबंध को दंपत्ति के समीकरण में एक चर के रूप में देखते हैं, एक ऐसी मात्रा जिसे समायोजित किया जा सकता है। लेकिन यह उससे कहीं अधिक है। अच्छा यौन संबंध कोई चालबाज़ी नहीं, जादू है। यह आपके अपने बारे में, दुनिया के बारे में आपके नज़रिए को बदल देता है।” “पॉल के साथ यौन संबंध ने मुझे कई मायनों में बदल दिया है। मुझे हमेशा खुद को खुलकर व्यक्त करने में कठिनाई होती थी। अब मुझमें अधिक साहस है। मैं

लोगों से अलग तरह से पेश आती हूँ। मैं उनसे जुड़ पाती हूँ। मुझे लगता है कि मैं पूरी तरह से खुद हूँ। छप्पन साल की उम्र में, यह एक चमत्कार है।”
"यह तो बहुत बढ़िया लग रहा है।"
कोरा ने नज़रें फेर लीं। “मैं तो बयान भी नहीं कर सकती… इससे मुझे रोना आ जाता है। मैं यह बता भी नहीं सकती कि कैसा लगता है, क्योंकि पॉल के साथ मेरा जो गहरा जुड़ाव है, उसने मुझे पूरी तरह बदल दिया है।”
आप रो सकते हैं, इसमें कोई बुराई नहीं है।
“मैं ठीक हूँ,” कोरा ने कहा। “ये कोई मामूली रोना नहीं है। मैं खुशी और राहत के आँसू रो रही हूँ—कि मुझे पॉल मिल गया, और उसने मुझे ढूंढ लिया। वो मुझे देखता है। मैं उसे देखती हूँ।”
कोरा ने अपने नैपकिन से अपने आंसू पोंछे। हमने डाइनिंग रूम से होटल के बार में जाने का फैसला किया। एक शांत कोने में बैठकर, व्हिस्की पीते हुए, कोरा ने मुझे कैफे में सुसान के साथ हुई अपनी बातचीत का विस्तृत ब्यौरा दिया। “क्या तुम्हें कॉर्क याद है?” कोरा ने कहा।
“हां,” मैंने कहा, “क्यों?”
"क्या आपको वह मरीज याद है जिसे मैंने पेश किया था - श्री स्मिथ?"
"जिसे आपने 'निर्जन' कहा था।"
“वो मैं ही थी,” उसने कहा। “मेरा मतलब है कि मैं उस मरीज़ को समझती थी क्योंकि मैं काफी हद तक उसके जैसी थी। मार्टिन भी काफी हद तक वैसा ही है। ये वो शादी थी जो हमने मिलकर की थी। उसमें काफी अनुशासन, सामंजस्य, बढ़िया खाना, पारिवारिक उत्सव—शैम्पेन, खुशियाँ थीं। लेकिन हम दोनों ने अपने जीवन का बहुत कुछ हिस्सा शादी से बाहर ही छोड़ दिया था। हम कभी एक-दूसरे से पूरी तरह जुड़ नहीं पाए। हमने कोशिश की—हमने सचमुच कोशिश की—लेकिन हम इसे कभी बदल नहीं पाए।”
अगले दिन, रविवार की सुबह, सुसान ने सुबह 8:30 बजे मेरे कमरे की घंटी बजाई। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसके साथ बर्रेल संग्रह देखने चलना चाहूँगी। हम दीर्घाओं में नहीं घूमे, बल्कि बाहर बैठे, ठंडी चाय पी और बातें कीं—वह बच्चों के बारे में चिंतित थी, पॉल पर गुस्सा थी और उनके खोए हुए भविष्य पर दुखी थी।
मेज पर पाँच पाउंड का नोट रखने के बाद, वह पॉल से दोबारा बात करने की कोशिश करने के लिए कॉन्फ्रेंस सेंटर लौट गई। उसने उसे बताया कि वह अलग नहीं होना

चाहता, लेकिन वह कोरा के साथ अपना रिश्ता नहीं छोड़ेगा। दोनों में खूब बहस हुई। वह रोया। वह भी रोई। आधी रात के बाद, वह सोने चला गया। सुसान इतनी परेशान थी कि उसे नींद नहीं आ रही थी, "मैंने सोचा, 'मरना इससे बुरा नहीं हो सकता।' " सुसान को एहसास हुआ कि न्यूयॉर्क फोन करने के लिए अभी भी काफी समय है। उसने अपनी सबसे अच्छी दोस्त को फोन किया, फिर अपने पुराने मनोविश्लेषक को। उन दोनों की किसी भी बात से उसका दर्द कम नहीं हुआ। भला कैसे हो सकता था? फिर भी, सुसान ने मुझे बताया, "एक पल ऐसा आया, सूरज निकल चुका था, जब मैंने बार-बार सब कुछ सोचना बंद कर दिया। मुझे एक-दो मिनट के लिए राहत महसूस हुई।"
“क्योंकि अब तुम्हें सच पता चल गया है?” मैंने पूछा।
“सिर्फ इतना ही नहीं,” उसने कहा। “मैंने सोचा, ‘मैं यही बनूंगी: वो पत्नी जिसे छोड़ दिया गया है, अकेली माँ, मनोविश्लेषक। ठीक है, मैं ये कर सकती हूँ। मैं ये कर सकती हूँ।’”
कुछ मिनटों तक हम चुपचाप बैठे रहे। फिर सुसान ने मुझसे पूछा कि मैं क्या सोच रहा हूँ।
मैंने उससे कहा कि मुझे उसकी कही हुई एक बात याद आ गई है—क्या यह कोपेनहेगन में कही गई थी? हम शादी के बारे में बात कर रहे थे। उसने मुझसे कहा था कि उसकी भावनाओं की तीव्रता के लिए वह बिल्कुल भी तैयार नहीं थी। “तुम्हें पता है हम अपने छात्रों को कैसे सिखाते हैं कि जहाँ प्यार होता है, वहाँ नफ़रत भी होती है? कभी-कभी, मुझे पॉल से इतनी नफ़रत होती है कि मैं बर्तन धो रही होती हूँ, फिर मुड़कर देखती हूँ तो वह वहीं होता है, और मुझे सचमुच आश्चर्य होता है कि वह गायब क्यों नहीं हो गया।” उस समय हम हँस पड़े थे।
“मुझे याद है,” उसने कहा। वह मुस्कुराई, और फिर उसकी आँखों में आंसू भर आए।

5

एक साल बाद, मैं फिर से ग्लासगो में था, इस बार भाषण देने के लिए। सुसान और कोरा के बीच विवाद शुरू होने के बाद से मैं शहर में वापस नहीं गया था। ग्लासगो से लंदन जाने वाली ट्रेन लेट हो गई। यूस्टन स्टेशन पहुँचने पर आधी रात हो चुकी थी। मैंने अपनी किताब बंद की, ऊपर लगे रैक से अपना सामान उठाया

और अंडरग्राउंड की ओर चल पड़ा। कैमडेन टाउन और चाक फार्म के बीच नॉर्दर्न लाइन की बिजली चली गई। ट्रेन दस मिनट तक सुरंग में रुकी रही। वहाँ अखबार की सरसराहट और एक युवक के हेडफ़ोन से आती हल्की गुनगुनाहट के अलावा कोई आवाज़ नहीं थी।
जब मैं अपने फ्लैट में वापस आई, तो मैंने सामान खोला, नहाया और बिस्तर पर चली गई। मैं बहुत थकी हुई थी, लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी। थोड़ी देर बाद, मैं उठी, एक कप हर्बल चाय बनाई, फिर पिछले साल की अपनी नोटबुक निकाली। रसोई की मेज पर बैठकर, मैंने सुसान और कोरा के बीच हुई बातचीत को दोबारा पढ़ा।
एक साल बीत जाने के बाद भी, उनकी बहस मुझे परेशान करती रही। नैतिक मुद्दे के तौर पर नहीं— मैं भला कैसे फैसला सुना सकता था? मुझे लगा कि उनकी बहस कोरा और सुसान के पति के बीच के संबंध से कहीं अधिक गंभीर थी; कोरा की इच्छा और सुसान के बेबस गुस्से से कहीं बढ़कर। ये दो प्रतिष्ठित मनोविश्लेषक थे, एक हताश क्षण में, मनोविश्लेषण की अवधारणाओं को तलवार और ढाल बनाकर—मनोविश्लेषण के उद्देश्य को लेकर आपस में बहस कर रहे थे। मेरी समझ से, सुसान का मानना था कि मनोविश्लेषण का उद्देश्य रोगी को वास्तविकता को स्वीकार करने में मदद करना है—जैसा कि उसने कहा, "परिपक्व होना"। हमारा जीवन आपस में जुड़ा हुआ है, एक दूसरे पर निर्भर है। क्योंकि अंतर्दृष्टि हमें स्वयं और दूसरों के बारे में अधिक सत्यपरक धारणा प्रदान करती है, इसलिए मनोविश्लेषण चिकित्सीय है: इससे हम स्वयं को और दूसरों को कम चोट पहुँचाते हैं। सुसान के अनुसार, कोरा मनोविश्लेषक की तरह नहीं सोच रही थी, क्योंकि वह आवेगपूर्ण व्यवहार कर रही थी। उसका प्रेम-प्रसंग प्रेम से रहित था। उसकी वासना विनाशकारी थी। सुसान की बात को संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है: जो एक बड़ी मछली के लिए अच्छा है, वह छोटी मछली के लिए मृत्यु है।
कोरा के अनुसार, मनोविश्लेषण हमें स्वयं से परिचित कराता है—हमारी इच्छाओं को उनकी संपूर्ण जटिलता, विरोधाभास और दुविधा के साथ उजागर करता है। उनका दृष्टिकोण यही था: जो चाहो ले लो, और उसकी कीमत चुकाओ। मानो वह कहना चाह रही हों, मनोविश्लेषण का उद्देश्य रोगी के मन को मुक्त करना होना चाहिए ताकि—जब तक वह परिणामों को स्वीकार करने के लिए तैयार हो—वह कार्य कर सके। जीवन छोटा है। रहो, जाओ: हर चीज़ की एक कीमत होती है।

सुसान का दृष्टिकोण मेरी शिक्षा के अनुरूप था, लेकिन कोरा का अपने जीवन को जीने का दृढ़ संकल्प अत्यंत प्रेरणादायक था। क्या मनोविश्लेषण का उद्देश्य यही नहीं होना चाहिए—कि मैं अपने रोगी को स्वयं को पहचानने में मदद कर सकूँ?
मैं एक विचार से दूसरे विचार पर भटकता रहा। मैंने अपने मरीज़ों और अपने स्वयं के मनोविश्लेषण के बारे में सोचा। स्पष्ट रूप से, प्रत्येक मनोविश्लेषण के अनेक उद्देश्य होते हैं: छोटे व्यावहारिक उद्देश्य (उदाहरण के लिए, मिलने का समय तय करना) और परिणामात्मक उद्देश्य (जैसे, चिंता कम करना)। तात्कालिक उद्देश्य भी होते हैं (किसी व्यवहार को समझना) और जीवन के उद्देश्य भी (जीवनसाथी या करियर का चुनाव करना)। लेकिन इन विभिन्न उद्देश्यों से परे, मनोविश्लेषण का उद्देश्य क्या है?
मैंने दराज से सफेद कागज का एक पन्ना निकाला और उस पर वाक्य लिखने शुरू किए:

मनोविश्लेषण का उद्देश्य:

— अचेतन को चेतन बनाना (फ्रायड)
— रोगी की कार्य और प्रेम करने की क्षमता को बढ़ाना (फ्रायड)
— रोगी को मानसिक पीड़ा से मुक्ति दिलाने और दुख को स्वीकार करने में मदद करना।
रोजमर्रा की जिंदगी के बारे में (फ्रायड)

हर कुछ मिनटों में एक नया वाक्य मेरे दिमाग में आता हुआ प्रतीत होता था, जो किसी सेमिनार, पर्यवेक्षण, बातचीत या किसी पठन की स्मृति से उपजा होता था। मुझे ऐसा लगता था मानो मैं घंटों तक लिखता रह सकता हूँ।

— आत्म-धोखे के जाल को तोड़ना (अमादेओ लिमेंटानी)
अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए—केवल अंतर्दृष्टि ही खोए हुए हिस्सों के पुन: एकीकरण की ओर ले जाती है
अहंकार, विकास की अनुमति देता है (हन्ना सेगल)
— विरोधाभासी भावनाओं को सहन करना और कम भय के साथ दुनिया का अनुभव करना।

और विखंडन (मेलानी क्लेन)
— बचपन के आघात के घाव को भरने के लिए (माइकल बालेंट)
बचपन के आघात को एक घाव के रूप में नहीं, बल्कि विकास के द्वार के रूप में देखना।
(माइकल आइगेन)
— उस भ्रम से बाहर निकलने के लिए कि हमें या तो नियंत्रण करना होगा या नियंत्रित होना होगा।
(जेसिका बेंजामिन)
मृत्यु के प्रति जागरूकता पैदा करना—यही जागरूकता हमें मुक्ति दिलाती है।
न्यूरोटिक भय से (नॉर्मन ओ. ब्राउन)
अनुपस्थिति को स्वीकार करना; झूठे आश्वासनों या झूठी पहचान के बिना जीना (मैनन का अष्टक)
अपने विचारों पर आवेगपूर्ण ढंग से अमल करने के बजाय उन पर विचार करना। (माइकल फेल्डमैन)
— दुख से ज्ञान प्राप्त करना (जोनाथन लीयर)
मरीज की भावनात्मक सच्चाई को सुनना, न कि उन्हें कोई बनावटी जवाब देना। व्याख्या (डिनोरा पाइन्स)
खुशी की चीख के लिए जगह बनाने के लिए; एक ऐसी जगह प्रदान करने के लिए जहाँ यह सुरक्षित हो
रचनात्मक होना (मैरियन मिलनर)
— रोगी को अपनी समझ की सीमाएँ दिखाना (डोनाल्ड विनिकॉट)
अदृश्य को देखना; घोर अंधकार की किरण डालकर यह देखना कि क्या है
तेज रोशनी की चकाचौंध से धुंधला हो गया है (विल्फ्रेड बियोन)
— रोगी को नीरस होने की स्वतंत्रता वापस दिलाना (जेनेट)
मैल्कम)
— अवचेतन मन को बोलने देना ताकि वह स्वयं को ठीक कर सके (क्रिस्टोफर) गेंदें)
— यह स्वीकार करना कि कोई इलाज नहीं है, संपूर्णता की कोई संभावना नहीं है (जैक्स लैकन)

— स्वयं को जानना, या अधिक सटीक रूप से, स्वयं को विकसित करना (थॉमस ओग्डेन)। मैंने शायद ऐसे बीस वर्णन सूचीबद्ध किए थे जब मुझे विरोधाभास दिखाई दिया। हाँ, निश्चित रूप से, मनोविश्लेषण को ये सभी चीजें करनी चाहिए — ठीक वैसे ही जैसे उसे एक रोगी को वास्तविकता को स्वीकार करने (सुसान) और अपना जीवन जीने (कोरा) में मदद करनी चाहिए—लेकिन ऐसा करने का लक्ष्य रखकर नहीं।
लक्ष्य रखना रोगी की स्वायत्तता पर अतिक्रमण है—अपनी इच्छाओं को पहचानने और अपने मन के निर्णय लेने की शक्ति पर हमला है। रोगी को मार्गदर्शन देना, भले ही उससे कुछ लाभ हो, मनोविश्लेषण को सीमित करता है। समय के साथ, जैसे- जैसे फ्रायड को नैदानिक अनुभव प्राप्त हुआ, वे इस खतरे के प्रति सचेत होते गए। अपने अनेक लेखों में—विशेषकर नए परिचयात्मक व्याख्यानों में— उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि रोगी को ठीक करने की इच्छा, जिसे उन्होंने "चिकित्सीय उत्साह" कहा, मनोविश्लेषक की अंतर्निहित क्रूरता का संकेत है। "रोगी की सहायता करना,"
"उसकी भलाई में सुधार करना"—ये उद्देश्य रोगी की स्वतंत्रता को सीमित करने की अवचेतन इच्छा को छुपा सकते हैं।
मनोविश्लेषण की दवा मदद करना नहीं, बल्कि समझना है। मुझे मनोविश्लेषक विल्फ्रेड बियोन द्वारा एक मरीज से कही गई बात याद है: "मुझे नहीं पता कि तुम मुझसे इतने नाराज़ क्यों हो - मैं तुम्हारी मदद करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ।"

6

ग्लासगो सम्मेलन के बाद, मुझे सुसान, पॉल, कोरा या मार्टिन से ज़्यादा संपर्क नहीं हुआ। कुछ सालों तक, कभी-कभार सुसान का संदेश मेरे आंसरिंग मशीन पर आ जाता था। क्या मैं किसी पूर्व मरीज़ से मिल सकता हूँ जो लंदन चली गई थी? क्या उसका बेटा, जो इंग्लैंड आ रहा था, मुझे फ़ोन कर सकता है? एक दोस्त की बेटी परेशान थी; क्या मैं एडिनबर्ग में किसी अच्छे मनोचिकित्सक को जानता हूँ? लेकिन कुछ समय बाद, सुसान के फ़ोन आने बंद हो गए। मुझे याद है कि मैंने मार्टिन को रोम में एक अंतरराष्ट्रीय मनोविश्लेषण सम्मेलन में

एक बार फिर देखा था। उसने कमरे के दूसरी तरफ से मुझे देखकर मुस्कुराया, और फिर किसी और से बात करने लगा।
सन् 1998 में, ग्लासगो सम्मेलन के दो साल बाद, मुझे डाक से एक तस्वीर मिली। कोरा और पॉल न्यूयॉर्क की एक मेट्रो ट्रेन में साथ-साथ बैठे थे, सजे-धजे और मुस्कुराते हुए। तस्वीर के पीछे कोरा ने लिखा था, "शादी करने के लिए सिटी हॉल जा रहे हैं!" मैंने उन्हें बधाई का संदेश भेजा। उसके बाद, मुझे कोरा से कोई खबर नहीं मिली। हम दोस्त तो थे, लेकिन अब दोस्त नहीं रहे।
ग्लासगो के बाद, उनमें से किसी के साथ दोस्ती संभव नहीं रही। हमारी जिंदगी अलग-अलग दिशाओं में चली गई थी। मेरी शादी हुई, बच्चे हुए। हालांकि मुझे कुछ कमी महसूस हुई, लेकिन मैं यह नहीं कह सकती कि मैंने उनमें से किसी के बारे में बुरा सोचा। मुझे हमारी दोस्ती की बहुत याद आती थी।

7

हमारी कहानी में अभी एक और मोड़ बाकी है।
ग्लासगो की घटना के बारह साल बाद, अप्रैल 2008 में, मैं परिवार से मिलने न्यूयॉर्क में था। मुझे पॉल से एक ईमेल मिला। ईमेल की शुरुआत इस तरह हुई: “प्रिय मित्रों, शुक्रवार की सुबह, जब मैं अपने अपार्टमेंट से निकला, तो कोरा बाथरूम में गिर गई और उसके सिर पर चोट लग गई।”
जब वह दोपहर के भोजन के समय घर लौटा, तो कोरा अभी भी सांस ले रही थी। उसे अस्पताल ले जाया गया। वह ब्रेन डेड हो चुकी थी। जब तक उसकी बेटियाँ न्यूयॉर्क वापस नहीं आ गईं, उसे वेंटिलेटर पर रखा गया। रविवार सुबह, कोरा की बेटियों की उपस्थिति में, वेंटिलेटर बंद कर दिया गया।
यहूदी रीति-रिवाज के अनुसार, परिवार ने एक सप्ताह तक घर पर शोक मनाया। पॉल के ईमेल में सभी को आने का निमंत्रण दिया गया था।
जब मैं पहुंचा तो सामने का दरवाजा खुला हुआ था। अपार्टमेंट दोस्तों से खचाखच भरा हुआ था।
मैं गलियारे से होते हुए धीरे-धीरे गर्म रोशनी से जगमगाते बैठक कक्ष में पहुंचा। वहां पॉल और मार्टिन के चारों ओर सुसान और कोरा के बच्चों और नाती- पोतों की भीड़ जमा थी।

शोरगुल के बीच रब्बी ने कहा, "क्या सबके पास प्रार्थना की किताब है? हम शुरू करने जा रहे हैं।"
परिवार के लोग कंधे से कंधा मिलाकर रब्बी के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गए। कुछ ने एक-दूसरे को बाहों में भर लिया, तो कुछ ने हाथ पकड़ लिए। रब्बी ने प्रार्थनाएं गाना शुरू किया।
एक युवती, जो स्पष्ट रूप से कोरा की बेटी थी, पॉल और मार्टिन के बीच खड़ी थी। वह रोने लगी।
पॉल ने अपना सिर झुका लिया। पॉल के पीछे खड़ी एक महिला ने उसके कंधे पर हाथ रखा। उसने अपना गाल उसकी उंगलियों से सटाया और उसके हाथ को चूमा। वह उसकी पूर्व पत्नी सुसान थी।
वह क्षण मेरे मन में एक प्रतीक बन गया है।
अपने क्लिनिकल प्रैक्टिस में, मैं समय-समय पर ऐसे व्यक्तियों से मिलता हूँ जो कानूनी तौर पर तो अपने जीवनसाथी से विवाहित हैं, लेकिन मानसिक रूप से नहीं। वे खुद को एक जोड़े के रूप में नहीं देख पाते। वे शायद ही कभी "हम" की बात करते हैं। हो सकता है कि उनकी शादी को कई दशक हो गए हों, लेकिन वे किसी और चीज़ से बंधे होते हैं, आमतौर पर अपने काम से। या, एक और उदाहरण के तौर पर, मेरे पास एक मरीज़ है जिसका पति शराब पीता है। शराब, न कि उनका रिश्ता, उसे सुकून देती है। वह कानूनी तौर पर उससे विवाहित है, लेकिन मानसिक रूप से शराब से बंधा हुआ है।
प्रेम संबंधों में हमारी मंशाएँ उतनी ही जटिल और विविध होती हैं जितनी किसी विश्लेषण के लक्ष्य। फिर भी, मुझे पूरा विश्वास है कि स्वयं को एक जोड़े के हिस्से के रूप में देखने की क्षमता एक विकासात्मक उपलब्धि है। एक सार्थक वैवाहिक जीवन के लिए व्यक्ति को विरोधाभासी प्रकृति को पहचानना आवश्यक है: स्वयं को और अपने प्रिय को उदार और निराशाजनक, रचनात्मक और साधारण, प्रेमपूर्ण और क्रूर, दोनों रूपों में स्वीकार करना। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें अपने और अपने साथी पर थोपी गई सीमित और प्रतिबंधात्मक धारणाओं को त्यागने का प्रयास करना चाहिए।
विकास का यह चरण स्थिर नहीं है। यह हमारी इच्छाओं से लगातार खतरे में रहता है। पल भर में हम खुद को एक दुखी बच्चे की तरह व्यवहार करते हुए पा सकते हैं। जब ऐसा होता है, तो हमें खुद को और अपने साथी को फिर से खोजने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। सुसान और पॉल ने प्यार किया, नफरत की, शादी की और

तलाक भी लिया। लेकिन इस कठिन समय में भी, वे अभी भी एक दंपत्ति थे, अभी भी प्यार का सफर तय कर रहे थे।

उपहार

जब मैं लगभग पैंतीस वर्ष की थी, तब मेरी बहन से अनबन हो गई। उस समय मैं मनोविश्लेषक बनने का प्रशिक्षण ले रही थी और खुद भी मनोविश्लेषण करवा रही थी। मेरे मनोविश्लेषक ने ही मुझे बताया कि मैंने अपनी बहन को जन्मदिन पर जो उपहार भेजा था—जॉर्ज जेन्सन की विंटेज बालियाँ, "बिना पहनी हुई, अभी भी अपने मूल डिब्बे में"—वह अनुचित था। (उन्होंने इसके लिए "क्रूरतापूर्ण" शब्द का प्रयोग किया।) मैंने आपत्ति जताई। मैं अपनी बहन को यह दिखाना चाह रही थी कि मैं अब भी उससे संपर्क में रहना चाहती हूँ। उन्होंने पूछा, "क्या तुमने उसे फ़ोन और पत्र लिखकर यह पहले ही नहीं कर दिया है?"
मैंने अभी-अभी उसे बताया था कि मेरी बहन के लिए जन्मदिन का तोहफा "बिल्कुल सही" था, उसे चांदी की साधारण बालियां बहुत पसंद आएंगी। इस पर उसने कहा कि इस तरह मैंने एक ऐसा तोहफा चुना है जो उसके लिए परेशानी खड़ी कर देगा। इस तोहफे से मुझे खुद पर गर्व महसूस हुआ—क्या मैं वाकई विचारशील नहीं थी?— और फिर, जब मेरी बहन ने कोई जवाब नहीं दिया, या रूखेपन से जवाब दिया, तो मैंने उसके बारे में बुरा सोचा।
मेरे आक्रोश भरे विरोध प्रदर्शन इस बात का पर्याप्त प्रमाण थे कि मेरे मनोविश्लेषक सही थे। उपहार देना कभी-कभी अच्छे लोगों के लिए क्रूरता दिखाने का एक तरीका होता है।
कुछ साल पहले, मेरे एक मरीज़ को, जिसने संग्रहालय क्यूरेटर के रूप में अपनी पहली नौकरी शुरू की थी, उसके संपन्न माता-पिता ने एक नई वीडब्ल्यू गोल्फ कार उपहार में दी। उसकी तनख्वाह में पेट्रोल, पार्किंग और बीमा का खर्च उठाना उसके लिए नामुमकिन था, वार्षिक रखरखाव का खर्च तो दूर की बात थी। कार बेचने से उसके माता-पिता उस पर बहुत गुस्सा होते, लेकिन कार रखने का मतलब था कि उसे नियमित रूप से उनसे आर्थिक मदद मांगनी पड़ेगी, ठीक उसी समय जब वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की कोशिश कर रहा था। "मुझे साइकिल से ज़्यादा खुशी होती, लेकिन अगर मैं उन्हें यह बताऊँगा, तो वे नाराज़ हो जाएँगे और कहेंगे कि मैं एहसानफरामोश हूँ।"
हाल ही में, मेरी अठारह वर्षीय मरीज़ मेलानी डी. को ट्रिनिटी डबलिन विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी पढ़ने के लिए दाखिला मिला। यह दाखिला इस

शर्त पर था कि वह अपनी तीन ए लेवल परीक्षा विषयों - अंग्रेज़ी साहित्य, फ़्रेंच और इतिहास - में ए ग्रेड प्राप्त करे। परीक्षा शुरू होने से कुछ हफ़्ते पहले, ईस्टर की छुट्टियों से एक हफ़्ते पहले, उसके माता-पिता ने उसे एक सरप्राइज़ दिया: उसकी कड़ी मेहनत के इनाम के तौर पर, उन्होंने छुट्टियों के दौरान इबीज़ा में एक पारिवारिक छुट्टी का आयोजन किया था। मेलानी ने अपनी माँ को याद दिलाया कि उसने उन्हें बताया था कि उसका कार्यक्रम बहुत व्यवस्थित है। उसने छुट्टियों के दौरान पढ़ाई करने की योजना बनाई थी और साथ ही, उसने अपनी माँ को बताया था कि वह परीक्षा के बाद छुट्टी पर जाना चाहती है। फिर भी, उसकी माँ उस पर चिल्लाई, उसे कहा कि वह छुट्टियाँ बर्बाद कर रही है और उसे "बिगड़ी हुई" कहा।
मुझे लगता था कि मुझे इस बात की अच्छी समझ है कि उपहार देने का इस्तेमाल नियंत्रण करने और कमजोर करने के लिए कैसे किया जा सकता है, लेकिन हाल ही में मैं एक ऐसी ही स्थिति को पहचानने में विफल रहा।
जब हेलेन टी. छह साल की थीं, तब उनकी माँ की मस्तिष्क ट्यूमर से मृत्यु हो गई। उनके पिता को काम के सिलसिले में लंदन और महाद्वीप के विभिन्न शहरों के बीच अक्सर यात्रा करनी पड़ती थी। नौकरी और हेलेन की देखभाल करने में असमर्थ होने के कारण, उनके पिता ने हेलेन को अपनी विधवा सास के साथ रहने के लिए भेज दिया। समय के साथ, वे हेलेन से कम मिलने आने लगे। जब हेलेन ग्यारह साल की थीं, तब उनके पिता ने पुनर्विवाह कर लिया और एक नया परिवार बसा लिया। हेलेन और उनकी दादी उनके बारे में शायद ही कभी बात करती थीं। अगर हेलेन उनका ज़िक्र करतीं, तो उन्हें "उकसाने वाली" कहा जाता था। इस रूखेपन और दादी के बच्चों के लिए तय नियमों के कारण, हेलेन चुप रहना, आज्ञाकारी बनना और अपने अकेलेपन, दुख और अवसाद को छिपाना सीख गईं।
चालीस साल की होने के कुछ ही समय बाद हेलेन को स्तन कैंसर का पता चला। उनकी सर्जरी और विकिरण चिकित्सा हुई, और अब, इक्यावन साल की उम्र में, वह अच्छी सेहत में थीं, हालांकि उन्हें इस बात का डर बना रहता था कि उनका कैंसर दोबारा हो सकता है।
हेलेन विवाहित थीं और उनकी दो बेटियाँ थीं। उन्हें भव्य पारिवारिक समारोह आयोजित करना बहुत पसंद था—जन्मदिन, नए साल की पूर्व संध्या और विशेष रूप से क्रिसमस। वह पूरा साल क्रिसमस की तैयारी में बिताती थीं—मोजों में डालने के लिए छोटे-छोटे उपहार इकट्ठा करती थीं, हर उपहार को

सावधानीपूर्वक, सोच-समझकर, हर प्राप्तकर्ता की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए लपेटती थीं।
मुझे ऐसा लग रहा था कि हेलेन ने यह सब इसलिए किया क्योंकि वह चाहती थी कि उसके बच्चों को वह घर मिले जो उसे कभी नहीं मिला था। लेकिन उसके मनोविश्लेषण के लगभग एक साल बाद, कुछ ऐसा हुआ जिसने मुझे इस विचार पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर दिया।
एक सोमवार को, हेलेन ने अपना सत्र शुरू करते हुए मुझे बताया कि उसका सप्ताहांत बहुत खराब बीता था। उसका जन्मदिन था। शनिवार को, उसकी बेटियों ने उसके लिए जन्मदिन का बड़ा भोज बनाने पर ज़ोर दिया था।
हेलेन ने नाराज़गी भरे लहजे में कहा, "उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। वे दोनों व्यस्त हैं—उनकी अपनी-अपनी ज़िंदगी है। और हम दोस्तों के साथ डिनर पर जा रहे थे।"
और फिर उसके पति के उपहार ने उसे चिढ़ा दिया था। कुछ महीने पहले, उसने वेस्ट एंड की एक आभूषण की दुकान में एक प्राचीन मोती का हार देखा था, और उसके पति ने उसे आश्चर्य के रूप में खरीद लिया था।
मैंने कहा, "उसे लगा होगा कि तुम्हें यह पसंद आया होगा।"
"उसने कहा कि मैंने उससे कहा था कि मुझे यह बहुत पसंद आया।"
“क्या तुमने किया?” मैंने पूछा।
मुझे नहीं पता—शायद। लेकिन मुझे नहीं लगता था कि वह इसे खरीदेगा—यह बहुत महंगा था।
आपका पति पैसों के मामले में लापरवाह नहीं है।
"मेरी प्रतिक्रिया से वह बहुत नाराज हो गया था।"
मैंने पूछा, "तुमने उससे क्या कहा?"
मैंने उन्हें धन्यवाद दिया, और…”
"और?"
और बाद में, मैंने उनसे पूछा कि क्या हम इसे वापस कर सकते हैं। मैंने उनसे कहा कि मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं आया—यह कुछ ज्यादा ही है।
हेलेन को अपने दिए गए उपहारों के बारे में बताना अच्छा लगता था, लेकिन खुद मिले उपहारों के बारे में नहीं। उसकी बेटियों द्वारा तैयार किया गया जन्मदिन का भोजन उसे खटक रहा था ("वे रसोई में हमेशा बहुत गंदगी फैलाती

हैं")। और अगर उसके पति को पता था कि यह भोजन होगा, तो उसने उसी शाम बाद में रात के खाने का इंतजाम क्यों किया था?
कुछ ऐसा ही उसके सत्रों में भी हुआ। जब भी हमारी बातचीत से हेलेन को थोड़ी राहत मिलती, तो उसके अंदर कुछ बदल जाता— शुक्रगुजार होने के बजाय, वह चिड़चिड़ी हो जाती। वह मेरी कही हुई हर बात में कुछ न कुछ कमी निकालती— मुझे अपना विचार उसे पहले ही बता देना चाहिए था, मैंने इतना इंतज़ार क्यों किया? या फिर, क्या मैं वही बात नहीं कह रही थी जो उसके दोस्त उसे लंबे समय से कहते आ रहे थे?
जब मैंने उससे उसकी इस उदासीनता के बारे में बात करने की कोशिश की—"ऐसा लगता है कि तुम अपने पति के प्रयासों के लिए बिल्कुल भी आभारी नहीं हो"—तो उसने इस बारे में सोचने से ही इनकार कर दिया। "लेकिन यह हार वाकई बहुत महंगा है," उसने ज़िद की।
इस बातचीत के अगले दिन, हेलेन परेशान सी होकर आई। उसे एक बुरा सपना आया था। उसने कहा, “दो घुमावदार सीढ़ियाँ अगल-बगल थीं। मैं एक सीढ़ी से ऊपर जा रही थी और मेरी माँ दूसरी से नीचे आ रही थीं। मैंने उन्हें छूने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन वह मेरी पहुँच से थोड़ी दूर थीं।”
जब हेलेन मुझे अपना सपना बता रही थी, तो उसने इशारे से अपनी उंगलियों से हवा में दो सीढ़ियाँ बनाईं और फिर उसे कुछ याद आया। अपनी माँ के जीवन के अंतिम दिनों में, जब उसकी माँ बहुत कमज़ोर थीं, हेलेन उनके बिस्तर के किनारे बैठ जाती और उसकी माँ स्कूल जाने के लिए उसके बाल बनातीं। हेलेन ने मुझे बताया, “मुझे उनका मेरे बालों की चोटी बनाना बहुत पसंद था; उन्हें यह करना बहुत अच्छा लगता था। वे फ्रेंच चोटी बना सकती थीं, मेरी चोटियों में रिबन लगा सकती थीं। मुझे उनके हाथों का स्पर्श बहुत अच्छा लगता था, जब वे मेरे बालों को सहलाती थीं।”
“तुम्हारी मां तुमसे प्यार करती थी। वह तुम्हारी देखभाल करना, तुम्हें सब कुछ देना पसंद करती थी। तुम उसके प्रति कृतज्ञ महसूस करते थे।”
हेलेन ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया।
हेलेन अपने पति और बेटियों के करीब रहने के लिए तरस रही थी, फिर भी, अवचेतन रूप से, वह अपनी माँ की मृत्यु के बाद हुए अवसाद से भयभीत थी - और इसी कारण से, उसने कृतज्ञता महसूस करने से बचने की कोशिश की।

स्पार्क्स

ऑक्सफ़ोर्ड में छात्र रहते हुए मुझे मनोविश्लेषक के रूप में जीवन की पहली झलक मिली। बर्कले से स्नातक होने के बाद, यह तय न कर पाने पर कि आगे क्या करना है, मैं दर्शनशास्त्र, राजनीति और अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के लिए ऑक्सफ़ोर्ड गया। यह 1976 की बात है और उस समय मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत किसी भी विभाग में नहीं पढ़ाया जाता था। ऑक्सफ़ोर्ड के अधिकांश शिक्षाविद इसे "छद्म विज्ञान" मानते थे।
लेकिन मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत मुझे समझ में आया। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि फ्रायड, क्लेन और विनिकॉट को पढ़ने से मुझे खुद को समझने में मदद मिली, इसलिए मैं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की मनोविश्लेषणात्मक सोसायटी में शामिल हो गया। हमारे लगभग दस सदस्यों का छोटा छात्र समूह मूल रूप से एक पठन समूह था - हम मनोविश्लेषणात्मक पाठ का विश्लेषण करने के लिए मिलते थे, और कभी-कभी किसी कार्यरत मनोविश्लेषक को शोध पत्र प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करते थे।
मई की एक सुहावनी सुबह, सत्र समाप्त होने से कुछ दिन पहले, समूह के सभी दस सदस्य अन्ना फ्रायड के साथ एक सेमिनार में भाग लेने के लिए साउथवोल्ड के समुद्र तटीय शहर तक चार घंटे की, 175 मील की यात्रा करने के लिए एक किराए की बिना खिड़की वाली वैन के पीछे वाले हिस्से में सवार हो गए।
हमारे छोटे छात्र समूह के सदस्यों के लिए यह बैठक बेहद महत्वपूर्ण थी। उस समय, सिगमंड फ्रायड की बेटी अन्ना फ्रायड सबसे प्रसिद्ध जीवित मनोविश्लेषक थीं। वे उनकी सहकर्मी, विश्वासपात्र और अंततः उनकी नर्स थीं। अन्ना फ्रायड बाल मनोविश्लेषण की संस्थापक और स्वयं एक प्रतिष्ठित मनोवैज्ञानिक सिद्धांतकार भी थीं। फ्रायड की जैविक उत्तराधिकारी होने के साथ-साथ, कई लोगों के लिए वे उनकी नैदानिक और सैद्धांतिक उत्तराधिकारी भी थीं—एक प्रकार से मनोविश्लेषण की राष्ट्राध्यक्ष।
यह सभा डॉ. मैरी बैटल सिंगर द्वारा आयोजित की गई थी, जो उन गिनी-चुनी महिला मनोविश्लेषकों में से एक थीं जिनके सप्ताहांत में वाल्बर्सविक या उसके आस-पास कॉटेज थे। अपने निमंत्रण में, डॉ. सिंगर ने प्रस्ताव दिया था कि हम

शनिवार को सुबह 11 बजे उनके घर पहुँचें। हम कॉफ़ी पिएंगे, और फिर मिस फ्रायड और उनकी आजीवन मित्र, मनोविश्लेषक श्रीमती डोरोथी बर्लिंगहैम, हमारी बैठक के लिए साउथवॉल्ड आएँगी। सेमिनार सुबह 11:30 बजे से दोपहर 1 बजे तक चलेगा। डॉ. सिंगर ने ऑक्सफ़ोर्ड वापस जाने से पहले हमें दोपहर का भोजन कराने का वादा किया। मिस फ्रायड ने डॉ. सिंगर को सुझाव दिया कि हम उनकी पुस्तक "बचपन में सामान्यता और विकृति" पर चर्चा करें।
हमारी मुलाकात से पहले के दिनों में, मैंने मिस फ्रायड के साथ होने वाले सेमिनार की कल्पना की: शुरुआत में औपचारिक, रस्मों से भरी; फिर सहज, बौद्धिक रूप से उत्साहवर्धक और सार्थक। विचारों की चिंगारियां फूटेंगी— तेज़ सोच और तीक्ष्ण असहमति। वे हमारे ज्ञान और समझ से प्रभावित होंगी। चर्चा से उत्साहित होकर, मनोविश्लेषण के भविष्य के लिए आश्वस्त होकर, वे हमारे छात्र समुदाय को अपने संरक्षण में ले लेंगी। वे सेमिनार का समापन लंदन स्थित अपने घर पर चर्चा जारी रखने के निमंत्रण के साथ करेंगी—अगले महीने नहीं, अगले सप्ताह। मैंने कल्पना की कि वे मुझे विशेष रूप से पसंद करेंगी।
हम मिस फ्रायड की हर बात से मुग्ध थे: उनका वियनाई लहजा; उनकी गहरी, उदास आँखें; और उनके पिता से उनकी मिलती-जुलती शक्ल। जैसे शिष्य अपने गुरु से मिलते हैं, वैसे ही हम अचानक आत्म-सचेत हो गए। हम उनकी किताब पर चर्चा करने के लिए तैयार होकर आए थे; उन्हें इस पर थोड़ी हैरानी हुई। वे दूर-दूर बैठी थीं, हमारे सवालों का जवाब देने में आनाकानी कर रही थीं। जब गणित में डॉक्टरेट कर रहे एक जर्मन छात्र इंगो ने उत्तेजक लहजे में पूछा कि क्या मनोवैज्ञानिक विकास के सभी सिद्धांत "सामान्य" विकास की एक अनुचित धारणा थोपते हैं, तो उन्होंने अपने हाथों की ओर देखा, मुस्कुराईं, फिर सिर हिलाकर मना कर दिया। हमारी कोई भी बात उन्हें बोलने के लिए प्रेरित नहीं कर पाई। श्रीमती बर्लिंगहैम भी मुश्किल से ही बोलती थीं। शायद उनका संयम हमें खुलकर बोलने का मौका देने के लिए था, लेकिन इसका असर उल्टा हुआ। अपने विशाल बौद्धिक और भावनात्मक ज्ञान को छिपाकर, उनकी अनुपस्थिति ने एक ऐसा अंधकार पैदा कर दिया जिसने कमरे की सारी रोशनी सोख ली। सेमिनार शुरू होने के लगभग एक घंटे बाद, मैंने देखा कि इंगो पैर मोड़े, अब पैर थपथपाते हुए, चुपचाप डॉ. सिंगर की किताबों की अलमारी में रखी किताबों के शीर्षक पढ़ रहे थे। सेमिनार के अंत तक, मुझे खालीपन का अहसास हुआ।

बाद में हम सब डॉ. सिंगर के बगीचे में ठंडी चाय पीने के लिए इकट्ठा हुए। डॉ. सिंगर ने सुनिश्चित किया कि मिस फ्रायड और श्रीमती बर्लिंगहैम आराम से छांव में बैठ जाएं, फिर दोनों के लिए एक-एक गिलास चाय लाए। मैं आलू के चिप्स का कटोरा लेकर घूम रहा था, तभी मिस फ्रायड ने मुझे अपने पास बुलाया। उनके पास खड़े होकर मुझे फूलों जैसी खुशबू महसूस हुई, शायद कोई साबुन की खुशबू, जैसे फ्लोरिस, लिली ऑफ द वैली। यह पुष्टि करने के बाद कि मैं समूह का निर्वाचित अध्यक्ष हूं, उन्होंने कहा: "क्या आपको पता है कि बीस और तीस के दशक में, मेरे पिता के समय में, वियना विश्वविद्यालय में आपके जैसा ही एक छात्र समूह था?" मुझे यह जानकर इतना आश्चर्य हुआ कि अन्ना फ्रायड अपने पिता के बारे में मुझसे बात कर रही थीं कि मैं कुछ बोल नहीं पाया। उन्होंने ब्रूनो बेटेलहाइम का जिक्र किया: "वह शिकागो विश्वविद्यालय में मानसिक रूप से विक्षिप्त बच्चों के लिए ऑर्थोजेनिक स्कूल के निदेशक हैं - अर्न्स्ट क्रिस भी, दोनों उस समूह के सदस्य थे। उन्होंने मेरे पिता के लेखों का संपादन किया और येल विश्वविद्यालय में मनोविश्लेषण की शुरुआत की।" उन्होंने मेरी आंखों में देखा और मुस्कुराईं। उन्होंने कहा, "क्या पता, आप जैसे छोटे समूहों से भी बड़ी-बड़ी चीजें पनप सकती हैं।"
तभी मुझे समझ आया कि मिस फ्रायड इस बैठक के लिए शायद इसलिए राज़ी नहीं हुई थीं कि उन्हें अपनी किताब पर चर्चा करनी थी, बल्कि इसलिए कि वे मनोविश्लेषणात्मक विचारों के प्रसार के उद्देश्य के प्रति समर्पित थीं— जैसा कि उनके पिता ने कहा था, 'सही मकसद के लिए'। वे चाहती थीं कि ऑक्सफोर्ड के पाठ्यक्रम में मनोविश्लेषण शामिल हो। मुझे उम्मीद थी कि वे हमारी शिक्षिका बनेंगी; वे चाहती थीं कि हम उनके अगुआ बनें। जब सेमिनार शुरू हुआ, तो मिस फ्रायड मुझे सहानुभूतिपूर्ण और बुद्धिमान लगीं। अब भी उनमें ये गुण थे, लेकिन मुझे लगा कि वे कुछ हद तक बनावटी थीं। उनसे हुई बातचीत और यह एहसास कि उन्होंने शायद अपने पिता का ज़िक्र इसलिए किया था क्योंकि वे जानती थीं कि इसका मुझ पर क्या असर होगा—और यह कि उन्होंने निस्संदेह पहले भी अनगिनत बार ऐसा किया होगा—ने मुझे और भी निराश कर दिया।
जब उन्होंने और श्रीमती बर्लिंगहैम ने हमारे समूह के सभी सदस्यों से बात कर ली, तो वे अपनी कार में बैठकर वालबर्सविक स्थित अपने कॉटेज की ओर रवाना हो गईं। उनके जाने पर हमने उन्हें हाथ हिलाकर अलविदा कहा। मैं दिन भर की

थकान से थोड़ा निराश होकर अंदर जा रहा था, तभी डॉ. सिंगर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं गिलास साफ करने और दोपहर का खाना लाने में उनकी मदद कर सकता हूँ। मिस फ्रायड के जाने के बाद ही मैंने उनकी सहकर्मी डॉ. सिंगर को ठीक से देखा। उस समय के बाल मनोविश्लेषक अक्सर बच्चों की तरह ही कपड़े पहनते थे: गहने नहीं, एक सादा फ्रॉक या एप्रन जैसा कपड़ा; मिस फ्रायड भी इसी तरह की पोशाक में थीं। मैरी—जैसा कि वह चाहती थीं कि मैं उन्हें बुलाऊं—बहुत ही स्टाइलिश थीं: एक चमकीली पीली ब्लाउज, गले में रंगीन लिबर्टी सिल्क का स्कार्फ; उनके घने बाल पीछे की ओर कंघी किए हुए थे, जो उनके चेहरे को खूबसूरती से सजा रहे थे। मैरी अश्वेत थीं और साठ वर्ष की आयु के आसपास थीं — अब तक मैं जितने भी मनोविश्लेषकों से मिली थी, वे सभी श्वेत थे और उनसे काफी बड़े लगते थे। मुझे जिज्ञासा हुई—मैरी का लहजा ब्रिटिश नहीं था, लेकिन मैं समझ नहीं पा रही थी कि कौन सा है। उनमें ऊर्जा थी। उनमें एक अपनापन भी था।
मैरी का घर भी आकर्षक था। उसमें हवादार और सादगी भरा एहसास था—किसी अंग्रेजी देहाती कॉटेज की बजाय एक समकालीन कला दीर्घा जैसा: सफेद दीवारें, गहरे रंग के चौड़े ओक के फर्श; बैठक कक्ष में फर्श पर एक किलिम और सोफे के ऊपर एक और किलिम; सोफे के ऊपर दीवार के बीच में एक छोटी, गहन, अमूर्त तेल चित्रकला।
रसोई के छोटे से कमरे में, चूल्हे के बगल में काउंटर पर एक कांच की केमेक्स कॉफी मेकर रखी थी। बर्कले या न्यूयॉर्क में मेरे लगभग सभी जान-पहचान वालों के पास ऐसी ही एक कॉफी मेकर थी, लेकिन मैंने इंग्लैंड में ऐसी कॉफी कभी नहीं देखी थी। तभी मेरी नज़र काउंटर पर तले हुए चिकन की एक बड़ी थाली और आलू के सलाद के एक कटोरे पर पड़ी। मैंने मैरी से पूछा कि वह कहाँ से है। उन्होंने कहा, "मैं अमेरिका से हूं। लेकिन मैं यहां काफी समय से रह रही हूं।"
लगभग बिना किसी अमेरिकी लहजे के बोलते हुए, उन्होंने मुझे बताया कि वह दक्षिण से हैं और मिसिसिपी में पली-बढ़ी हैं। उन्होंने बोस्टन विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, फिर स्मिथ कॉलेज में समाज कार्य का अध्ययन किया। युद्ध के बाद, वह यूरोप आईं, पहले जर्मनी में विस्थापित, अकेले बच्चों के साथ काम करने के लिए, फिर लंदन में मिस फ्रायड के साथ प्रशिक्षण लेने के लिए।

मैं और मैरी खाना, प्लेट और पेय लेकर उसके बगीचे में गए; सबने अपनी पसंद से ले लिया। पिकनिक टेबल के एक कोने में तिरछे बैठकर हम खाना खाते रहे और बातें करते रहे। मुझे याद है कि बात करते-करते वह अपनी कुर्सी घुमाकर मेरी तरफ देख रही थी—मुझे याद है कि उसने मुझे कैम्ब्रिज में अपने अध्यापन के बारे में और बताया था। जब उसने मेरी कोट की जेब में एक छोटी सी किताब देखी, तो उसने मुझसे उसके बारे में पूछा। मैंने उसे किताब दिखाई, और उसके और सवालों के जवाब में मैंने उसे लेखक के बारे में जो कुछ भी जानता था (टॉमस ट्रांसट्रोमर लड़कों की जेल में मनोवैज्ञानिक थे) और मुझे जो पसंद आया (कविताओं का शांत, चिंतनशील भाव) बताया। उसने किताब खोली और पहली कविता मन ही मन पढ़ी, फिर उसे ज़ोर से मुझे पढ़कर सुनाया।

रात के 2 बजे: चांदनी। ट्रेन रुक गई है।
एक खेत में। दूर किसी कस्बे से आती रोशनी की चिंगारियां, क्षितिज पर ठंडी रोशनी की तरह टिमटिमा रही हैं।

जैसे कोई व्यक्ति अपने सपने में इतनी गहराई तक डूब जाता है
उसे कभी याद नहीं रहेगा कि वह वहाँ था।
जब वह वापस अपने कमरे में लौटता है।

या फिर जब कोई व्यक्ति किसी बीमारी में इतना डूब जाता है कि उसके दिन टिमटिमाती चिंगारियों की तरह हो जाते हैं, क्षितिज पर मंद और ठंडे, धुंधले से झुंड की तरह...

उसने एक छोटा सा पैड निकाला और लेखक का नाम और किताब का शीर्षक लिख लिया। गोर्की ने एक बार चेखव के बारे में लिखा था कि उनकी उपस्थिति में "हर कोई सरल, अधिक सच्चा और अधिक स्वाभाविक होने की अवचेतन इच्छा महसूस करता था।" मैरी भी वैसी ही थी। उसके व्यवहार ने सेमिनार को लेकर मेरी निराशा को दूर कर दिया। मेरा खालीपन गायब हो गया। उसकी जगह, मेरे अंदर अधिक स्पष्ट और अधिक स्वाभाविक होने की इच्छा जागृत हुई।
बर्तन समेटने के बाद, उसने मुझसे कहा कि उसे बैठक में मेरी मदद चाहिए। अंदर जाकर उसने कहा कि वह कालीन को समेटना चाहती है।

“आप छात्र हैं, है ना? मुझे लगा कि आप सभी को नृत्य करना अच्छा लगेगा।” उसकी किताबों की अलमारी के बगल में फर्श पर एक फोनोग्राफ और रिकॉर्डों का ढेर पड़ा था। उसने एक एलपी रिकॉर्ड को उसके कवर से निकाला और सावधानीपूर्वक उसे टर्नटेबल पर रख दिया। बिली हॉलिडे की मधुर आवाज़ कमरे में गूंज उठी।
“चलो नाचते हैं,” उसने कहा।
बैठक कक्ष के दरवाजे खुले हुए थे और संगीत बगीचे में गूंज रहा था। जल्द ही, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की मनोविश्लेषणात्मक सोसायटी के सभी दस सदस्य अंदर आ गए और छोटे-छोटे समूहों में नाचने या झूमने लगे।
एक समय ऐसा आया जब हम एला फिट्जगेराल्ड और लुई आर्मस्ट्रांग के गीत "दे कांट टेक दैट अवे फ्रॉम मी" पर नाच रहे थे, तभी उसने कहा: "उन्होंने मेरे अंदर से नृत्य को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के जरिए खत्म करने की कोशिश की। लेकिन वे इसे मुझसे छीन नहीं सके।"
जब जाने का समय हुआ, तो मैरी ने कहा, "अब, उन्हें कभी भी तुम्हारे नृत्य का विश्लेषण करने मत देना।" फिर उसने मेरा हाथ पकड़ लिया।
हालांकि हम फिर कभी नहीं मिले, लेकिन मैरी ने मुझे वह सब कुछ दिखाया जो मैं बनना चाहता था - उसने मुझे जीने का एक तरीका दिखाया।

प्यार और समय

जब मैं पहली बार परामर्श के लिए उस्मान एम. से मिला, तो मुझे उनकी शांत स्थिरता समझ में नहीं आई। उनके बचपन की घटनाओं और उनके द्वारा वर्णित चुनौतियों को देखते हुए, मेरे सामने बैठे लंबे, सुरुचिपूर्ण ढंग से कपड़े पहने हुए व्यक्ति को तो अंदर से बेचैन होना चाहिए था। इसके विपरीत, उन्होंने शांत भाव से और गहरी समझ के साथ बात की।
ओस्मान के जन्म के चार महीने बाद, उसके माता-पिता इरिट्रिया छोड़कर इंग्लैंड चले गए। ओस्मान को उसके दादा-दादी—उसकी माँ के पिता और माँ—की देखरेख में छोड़ दिया गया। लंदन में बसने के बाद, उन्होंने वापस आकर उसे लेने की योजना बनाई थी। लेकिन ऐसा कभी नहीं हो पाया।
जब मैंने उस्मान से उसके दादा-दादी के बारे में बताने को कहा, तो उसने बताया कि वह अपने दादाजी के अस्पताल से घर आने का इंतज़ार करता था, जहाँ वे सर्जन के रूप में काम करते थे। उस्मान ने उस उत्साह और उत्सुकता का वर्णन किया, जब वह खिड़की से बाहर देखता था और अपने दादाजी के आने की घोषणा करने के लिए बेताब रहता था। उसकी दादी कपड़े बदलतीं और लिपस्टिक लगातीं। फिर, जब वह खाना बनातीं, तो उस्मान और उसके दादाजी भोजन कक्ष में ज़मीन पर बैठ जाते और साथ मिलकर चीज़ें बनाते—उदाहरण के लिए, लकड़ी के छोटे टुकड़ों, गोंद और मिट्टी से अपने घर का एक मॉडल।
जब उस्मान नौ साल का था, तब उसके दादाजी की अग्नाशय कैंसर से मृत्यु हो गई। दो साल बाद, उसकी दादी की मोटरसाइकिल दुर्घटना में मौत हो गई। उनकी मृत्यु के कुछ दिनों बाद, बिना किसी स्पष्टीकरण के, उस्मान को इंग्लैंड की यात्रा के पहले चरण के लिए अस्मारा हवाई अड्डे ले जाया गया।
स्टॉकवेल पहुँचने पर उस्मान को पता चला कि उसके माता-पिता का तलाक हो चुका है। उसकी माँ ने दोबारा शादी कर ली थी और उसके चार सौतेले भाई-बहन थे, जिनकी उम्र छह साल से कम थी। लंदन में अपने पहले दिन, उसे इस्त्री करना सिखाया गया और फिर सोने से पहले उसे तीन टोकरियाँ कपड़े इस्त्री करने के लिए दिए गए। ग्यारह साल की उम्र से लेकर विश्वविद्यालय जाने तक, उसकी माँ और सौतेले पिता ने उसके साथ नौकर जैसा व्यवहार किया। उस दौर को याद करते हुए—अपने गहरे दुख और अकेलेपन को—उस्मान ने बताया कि कैसे वह रात में

या प्यार दें, उसमें कोई बदलाव नहीं आता। "मैं लोगों पर हार नहीं मानता," उन्होंने कहा।
जब उस्मान का तारा से रिश्ता नहीं था, तब वह दूसरी महिलाओं के साथ डेट करता था। हालाँकि उसने मुझे बताया कि वह "सही महिला" से मिलने के लिए उत्सुक था, लेकिन वह अपनी सहकर्मी या बौद्धिक स्तर की महिलाओं से दूर रहता था। वह अपने से ज़्यादा सफल महिलाओं के साथ डेट नहीं करता था। वह विशेष रूप से शांत स्वभाव वाली महिलाओं से बचता था। उस्मान उन महिलाओं की ओर आकर्षित होता था जिनके पंख टूटे हुए हों, जो बेचैन हों और दूसरों को भी बेचैन कर दें। उसने मुझे बताया कि उसकी एक डेट हमेशा मेनू का सबसे महंगा व्यंजन ऑर्डर करती थी। मुझे याद है मैंने सोचा था: "लंदन के सारे लॉबस्टर थर्मिडोर भी उस खालीपन को नहीं भर सकते।" उसने मुझसे तारा के लिए एक मनोचिकित्सक की सिफारिश करने को कहा। उसने लगभग हर उस महिला के लिए मनोचिकित्सक की सिफारिश करने को कहा जिसके साथ वह डेट करता था।
डेटिंग के दौरान, उस्मान हर महिला को महंगे डिनर और छुट्टियों से सराबोर कर देता था। "प्यार में पड़ना" या "प्यार में होना," जैसा कि वह इसे बताता था, उसके लिए एक तरह का आत्म-पीड़ादायक अनुभव था। वह अपनी साथी की ज़रूरतों का ज़रूरत से ज़्यादा ध्यान रखता था, लेकिन अपनी ज़रूरतों को अपनी साथी को बताता नहीं था, जिससे उसके लिए उन्हें पूरा करना नामुमकिन हो जाता था। अपने मनोविश्लेषण में, वह हमेशा देखभाल करने वाले की भूमिका निभाने की अपनी इच्छा को प्रदर्शित करता था। उदाहरण के लिए, मनोविश्लेषण शुरू होने के कुछ महीनों बाद, उस्मान ने देखा कि मेरा वज़न थोड़ा कम हो गया है। (मेरे किसी अन्य मरीज़ ने इस पर ध्यान नहीं दिया।) उसने कहा, "क्या आपने अपने डॉक्टर को दिखाया है?" एक और अवसर पर, उसने मेरे हाथ के पिछले हिस्से पर पट्टी देखी। उसने पूछा कि मुझे चोट कैसे लगी। मैंने जवाब दिया कि मैं ठीक हूँ, फिर भी, अगले दिन वह मेरे लिए जीवाणुरोधी क्रीम की एक छोटी सी ट्यूब ले आया। उस्मान का उस व्यक्ति की मदद करना जो उसकी मदद करने के लिए मौजूद था, इस तरह के छल से मुझे उसे यह बताने का मौका मिला कि वह देखभाल करने की अपनी क्षमता का उपयोग देखभाल किए जाने से बचने के लिए एक बचाव के रूप में करता है। मैंने आगे कहा कि उसके कामुक संबंधों में भी यही बात थी: उसकी अत्यधिक ध्यान देने की प्रवृत्ति ध्यान दिए जाने से बचने का एक बचाव थी।

उस्मान की अत्यधिक सतर्कता ने मुझे अपने प्रशिक्षण विश्लेषण में अपनी अति-सजगता की याद दिला दी: हम दोनों ही हार मानने से इनकार कर रहे थे।
डॉ. लिमेंटानी के साथ अपने मनोविश्लेषण के दौरान, मुझे पता चला कि मैं अपने माता-पिता से प्यार तो करती थी, लेकिन उन पर पूरी तरह भरोसा नहीं करती थी। इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी। मैं जन्मजात विकार के साथ पैदा हुई थी। दो से सात साल की उम्र के बीच, मुझे कई सर्जिकल प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ा। यह अनुभव बहुत दर्दनाक था। मेरे माता-पिता को समझ नहीं आ रहा था कि मैं इस स्थिति से कैसे निपटूँ। उन्होंने कभी भी मेरी सर्जरी के बारे में मुझसे बात नहीं की। मुझे लगता है कि उनका मानना था कि अगर हम इस बारे में बात नहीं करेंगे, तो मैं जल्दी ठीक हो जाऊँगी। मैं उन्हें यह यकीन दिलाने के लिए बहुत सतर्क हो गई कि मैं ठीक हूँ। मैं अपना गुस्सा ज़ाहिर नहीं कर पाती थी। यहीं से मेरे अच्छे होने का ढोंग शुरू हुआ।
अति सतर्कता उस्मान का एक छिपा हुआ रूप था। अपने बचपन के बारे में बात करते समय, उस्मान शांत, विचारशील और संयमित रहता था। फिर भी, उस्मान के सपनों और उससे जुड़ी बातों को ध्यान से सुनने पर मुझे यह विश्वास हो गया कि अनजाने में ही सही, वह अपने माता-पिता द्वारा उसे छोड़ दिए जाने, अपने दादा-दादी की मृत्यु और अपनी माँ और सौतेले पिता द्वारा किए गए क्रूर व्यवहार से क्रोधित था। अचेतन रूप से, वह मुझे क्रोध से भरा हुआ प्रतीत होता था, लेकिन अपने करीबियों को ठेस पहुँचाने से भी डरता था। (जब वह अपने जीवन के केंद्र में मौजूद किसी व्यक्ति से क्रोधित होता था, तो वह अपने क्रोध को दबा लेता था; फिर वह अपने जीवन के बाहरी हिस्से में मौजूद किसी व्यक्ति—जैसे पार्किंग अटेंडेंट या डिपार्टमेंट स्टोर के सेल्समैन—पर अत्यधिक आक्रोश प्रकट करता था।) इस दृष्टिकोण से देखने पर, उसकी शांत समता, वह गुण जो मैंने उसमें सबसे पहले देखा था, अलग प्रतीत होती थी। उसका सौम्य व्यवहार दूसरों को—और स्वयं को—यह प्रदर्शित करने का एक तरीका था कि वह खतरनाक आक्रामकता से मुक्त है। उसकी अत्यधिक देखभाल अपने करीबियों की रक्षा करने का एक तरीका था।
इसके अलावा, हमेशा देखभाल करने वाले की भूमिका निभाकर, उस्मान ने खुद को समर्पण के एक खास पहलू—निर्भरता की स्थिति में वापस लौटने—से बचाए रखा। वह चाहता था कि उसके साथी उस पर भरोसा करें और भावनात्मक रूप से उसके सामने आत्मसमर्पण करें; लेकिन अपने बचपन की घटनाओं के कारण, उसे किसी और के सामने

आत्मसमर्पण करने के विचार से डर लगता था। उस्मान ने इस बात को स्वीकार किया, और हमने कई महीनों तक इस पर विस्तार से चर्चा की, लेकिन उसमें कोई बदलाव नहीं आया। उसके शब्दों में: "मैं जैसा हूँ वैसा नहीं रहना चाहता, लेकिन मैं वैसा बन भी नहीं पा रहा जैसा मैं बनना चाहता हूँ।"
फिर, उनके मनोविश्लेषण की शुरुआत के लगभग तीन साल बाद - तारा के साथ संपर्क न होने की एक और अवधि के दौरान, जब वह कई महिलाओं के साथ डेटिंग कर रहे थे - एक बदलाव आया।
उस्मान मुझे उस सुबह एक सात वर्षीय अफगान शरणार्थी लड़के के साथ हुई अपनी मुलाकात के बारे में बता रहे थे। उनकी बातों में मुझे उनके अपने एरिट्रियाई बचपन की झलक सुनाई दी। जब उस्मान ने उस लड़के द्वारा उनके लिए बनाए गए चित्र, कंधार स्थित उनके घर की तस्वीर का वर्णन किया, तो मुझे याद आया कि कैसे उस्मान अपने दादाजी के साथ ज़मीन पर बैठकर घर बनाते थे। मैंने उस्मान से कहा कि मुझे लगता है कि वह इस लड़के की देखभाल वैसे ही कर रहा है जैसे उसके दादा ने बचपन में उसकी देखभाल की थी, जब वह एक डरा हुआ छोटा बच्चा था। मैंने कहा, "ऐसा करके, तुम अपने दादा के जीवन को आगे बढ़ा रहे हो।"
उस्मान ने गहरी सांस ली। कुछ देर तक वह चुप रहा। अंत में उसने कहा कि उसने इसे कभी इस तरह नहीं देखा था। “मैं अपने दादा, अपनी दादी, श्री हैरिस, सुश्री फ्राई, अपने शिक्षक और प्रधानाध्यापिका के बारे में सोच रहा हूँ— मैं उन लोगों के बारे में सोच रहा हूँ जिन्होंने मुझे वह बनाया जो मैं आज हूँ,” उसने कहा।
उसके बाद जो शांति छाई, उसमें मैं उन लोगों के बारे में सोचने लगी जिन्होंने मुझे जन्म दिया, जिन्होंने मुझे प्यार दिया। कुछ देर बाद, मैं मनोविश्लेषक बनने के अपने शुरुआती दौर के बारे में सोचने लगी—मैरी सिंगर से मिलना, डॉ. लिमेंटानी के साथ अपना प्रशिक्षण विश्लेषण शुरू करना। यह सोचकर सुकून मिला कि मैं उन्हीं के काम को आगे बढ़ा रही हूँ।
और फिर एक और विचार मन में आया।
एक दिन, निकट भविष्य में, यह सब समाप्त हो जाएगा। पल भर में, सब कुछ गायब हो जाएगा। पचास साल पहले, साउथवॉल्ड में मैरी के साथ, मनोविश्लेषण के मेरे शुरुआती प्रशिक्षण के दिनों में, मेरे मन में उस्मान की अपने दादा के साथ फर्श पर लेटी हुई छवि—यह सब सोच—मेरे सारे विचार, भावनाएँ, सब गायब हो

जाएँगी। मेरा अस्तित्व, सब कुछ मिट जाएगा। मनोविश्लेषण जारी रहेगा।
उस्मान और मेरे अन्य युवा सहकर्मी अपने परामर्श कक्षों में अपने रोगियों के साथ काम करते रहेंगे, लेकिन जल्द ही, मैं नहीं रहूँगा। न कोई विचार, न कोई शब्द। कुछ भी नहीं।
इन विचारों से बाहर आकर, अब मुझे एहसास हुआ कि मैंने गलती कर दी थी। उस्मान सही जीवनसाथी की तलाश में व्यस्त था। उसे लगता था कि उसकी समस्या प्यार पाना नहीं है। उसकी असली समस्या इस बात को स्वीकार करना था कि एक दिन वह इसे खो देगा।
हर प्रेम का अंत होता है। उस्मान इस सच्चाई के बारे में सोचना ही नहीं चाहता था। तारा के साथ उसका कभी बनता, कभी बिगड़ता, कभी न खत्म होने वाला रिश्ता; उसकी व्यस्त डेटिंग; अनगिनत महिलाओं पर ज़रूरत से ज़्यादा ध्यान देना, जिनके बारे में उसने एक बार मुझसे कहा था कि वे "एक जैसी" लगती हैं— इतना सब कुछ देने के बावजूद, उसके शब्दों में कहें तो, "कोई प्रगति नहीं हो रही थी"। क्योंकि प्रेम का अंत होता है, उस्मान प्रेम से दूर भागता था। अनजाने में ही उसने जीने का एक ऐसा तरीका बना लिया था जिससे वह इस भ्रम में जी रहा था कि प्रेम का कोई अंत नहीं है।
प्रेम का महान कार्य, और जीवन का भी महान कार्य, स्वयं को और दूसरों को स्पष्ट रूप से देखना है। वास्तविकता को देखने के लिए, हमें एक ऐसी चीज़ की आवश्यकता है जिसे मैंने एक बार दूरबीन दृष्टि के रूप में वर्णित देखा था: एक लेंस हमारे जीवन को देखने के लिए, और दूसरा हमारे स्वयं के व्यक्तिगत अंत को देखने के लिए।
पिछले कई वर्षों में, मैंने कई रोगियों से विनम्रता और समर्पण के बीच के अंतरों के बारे में बात की थी। उस्मान के साथ उन सत्रों में मैंने कुछ और भी देखा। मैंने समझा कि जब हम समर्पण करते हैं, तो हम स्वयं को, दूसरे को और समय की वास्तविकता को भी स्वीकार करते हैं। प्रेम—यह जानना कि दूसरा व्यक्ति हमारे लिए मायने रखता है—हमें समय में स्थिर कर देता है।
मैंने कुछ मिनट यह सोचने में बिताए कि मैं ये बातें उस्मान को कैसे बताऊं।
फिर मैंने उसे बताया कि मैंने उसके दादाजी के जीवन के बारे में जो कहा था, वह पूरी सच्चाई नहीं थी।
“बाकी क्या है?” उसने कहा।

“बाकी बात ये है: तुम्हारे दादाजी मर चुके हैं। मैं भी मर जाऊंगी। एक दिन तुम भी मर जाओगे।”
उस्मान तनाव में आ गया। "मुझे पता है। शायद तुमसे बेहतर; मैं एक डॉक्टर हूँ।"
मैंने कहा, “मैं किसी वार्ड में मर रहे मरीज़ या आम तौर पर मौत के बारे में नहीं सोच रहा हूँ। मैं अपने और आपके व्यक्तिगत अंत के बारे में सोच रहा हूँ।”
मुझे नहीं लगता कि मेरी मौत का इससे कोई लेना-देना है।
मैंने कहा, "प्यार का अंत तो हमेशा होता है। मुझे लगता है कि 'सही स्त्री से मिलने' की आपकी ज़िद आपको इस सच्चाई से दूर रखती है।"
मुझे अंत से कोई दिक्कत नहीं है—अरे, मेरे दादाजी का निधन हो गया, मेरी दादीजी का निधन हो गया। मैं तो हर समय चीजों का अंत करता रहता हूँ।
"मुझे लगता है कि ऐसा उन मौतों की वजह से है - ऐसा लगता है कि आप किसी के द्वारा आपके साथ संबंध समाप्त करने या किसी प्रियजन को मृत्यु के हाथों खोने के अनुभव से बचना चाहते हैं।"
“मैं कोशिश कर रहा हूँ,” उस्मान ने कहा। “बस मुझे सही व्यक्ति नहीं मिल पा रहा है।”
मैंने उस्मान को याद दिलाया कि तारा के साथ उसका रिश्ता अभी भी वैसा ही है, और कभी-कभी उसे लगता है कि उसकी गर्लफ्रेंड्स एक जैसी ही हैं। "तुमने मुझे बताया है कि तुम्हें लगता है कि तुम्हारे रिश्ते कहीं नहीं जाते, उनमें कोई विकास नहीं होता। शायद यही मकसद है। शायद तुम्हारे सारे डेटिंग का मकसद तुम्हें प्यार से बचाना है।"
उस्मान ने मुझसे कहा कि मैं उसके साथ अन्याय कर रहा था। उसने मुझे अपने एक सफल रिश्ते की याद दिलाना शुरू किया। वे दोनों साथ रहने के कगार पर थे; उसने तो शादी का प्रस्ताव रखने के बारे में भी सोचा था।
फिर धीरे-धीरे, लगभग अदृश्य रूप से, उस्मान की आवाज़ से ऊर्जा कम होती चली गई, यहाँ तक कि वह पूरी तरह से चुप हो गया। उस्मान सोफे पर लेटा हुआ था, इसलिए मैं उसका चेहरा नहीं देख सका, लेकिन मुझे लगा कि वह रोने से खुद को रोकने की कोशिश कर रहा था। उसने कहा, "मैं एक सीमा से आगे नहीं बढ़ पाता।" कमरे में सन्नाटा छा गया। कुछ बदल गया था।
उन्होंने कहा, "हमें इस समस्या का समाधान निकालना होगा।"

“□□□,” □□□□□ □□□□ “□□ □□□□ □□□□”
□□ □□□□□ □□ □□□ □□□, □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□, □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□, □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□
□□□□□□□□ □□□, "□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□"

घर जा रहा है

अगस्त 1987 में, मनोविश्लेषक के रूप में योग्यता प्राप्त करने से कुछ महीने पहले, मैं अपनी माँ की देखभाल करने के लिए इंडियाना लौट आई। मेरे माता-पिता का घर मिशिगन झील के किनारे पर था। शाम को, भीषण गर्मी के बावजूद, मेरी माँ को सभी खिड़कियाँ खोलना अच्छा लगता था। उन्हें अंदर आती हुई आवाज़ें पसंद थीं—फुटपाथ पर बातचीत की हल्की-फुल्की आवाज़ें, पड़ोसी का अपने लॉन में पानी डालना, दूर से आती ट्रेन की सीटी। जिन दिनों वह बिस्तर पर रहती थीं, मैं उनके लिए मैक्रोबायोटिक भोजन तैयार करती थी, जिसके बारे में उनका मानना था कि इससे उन्हें आराम मिलता है। रात में मैं उनके बिस्तर के पास एक रिक्लाइनिंग कुर्सी पर सोती थी, या अगर गर्मी बहुत ज़्यादा होती थी, तो बैठक के कमरे के फर्श पर सो जाती थी।
महीने के अंत में, मेरी बहन सांता बारबरा से आकर ज़िम्मेदारी संभालने लगी और मैं लंदन लौट गया। कुछ हफ़्ते बाद, अस्पताल में मुलाक़ात के दौरान, मेरी माँ ने मेरी बहन से कुछ कहने के लिए मुड़ी, लेकिन फिर रुक गईं। वह सीधी बैठीं, साँस लेने के लिए हाँफने लगीं और फिर कुर्सी पर आगे की ओर झुक गईं। मेरी बहन ने नर्स को आवाज़ दी, जो तुरंत आ गई। फिर कमरा डॉक्टरों और नर्सों से भर गया, जिन्होंने मेरी माँ को अस्पताल के स्ट्रेचर पर उठाया और मेरी बहन को बाहर भेज दिया, लेकिन मेरी माँ को बचाना संभव नहीं था।
मेरी माँ की मृत्यु के लिए मैं बिल्कुल भी तैयार नहीं थी—खासकर उनके पंद्रह साल के कैंसर के संघर्ष के लिए। उन्हें पहले स्तन कैंसर हुआ, फिर फेफड़ों का कैंसर, फिर दूसरी तरफ स्तन कैंसर, फिर उनके लीवर पर एक धब्बा— ये सब बार-बार होने वाले निदान, उपचार और फिर रोगमुक्ति के चक्र—इन सबने मेरे बचपन के इस विश्वास को और भी मजबूत कर दिया था कि वह कभी नहीं मरेंगी। उनकी मृत्यु के बाद के हफ्तों में, मैं बेहद थका हुआ महसूस कर रहा था। मैं शाम को काम के तुरंत बाद सो जाता था और सप्ताहांत सोफे पर बैठकर पुरानी ब्लैक एंड व्हाइट फिल्में देखता रहता था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह थकान शोक का हिस्सा थी, या मेरे शोक का हिस्सा थी। यह एक नई वास्तविकता को स्वीकार करने के आंतरिक प्रयास का परिणाम था—एक नए भविष्य की कल्पना

करने का कठिन काम, एक ऐसा भविष्य जिसमें मेरी माँ को पता भी न चले कि मेरा क्या हुआ है।
इस दौरान अगर मैं भविष्य के बारे में सोच रहा था, तो साथ ही साथ उसके साथ बिताए अपने आखिरी दिनों को भी याद कर रहा था। हमने साथ में पढ़ने में काफी समय बिताया था। मैं उसके लिए एक कप चाय लाता, रिक्लाइनर को बिस्तर के पास खींचता और एक किताब खोलता, आमतौर पर एंटोन चेखव की कहानियों का संग्रह जो मेरे पास होता था। अगर पढ़ते-पढ़ते वह सो जाती, तो मैं पन्नों में एक बुकमार्क लगा देता और अगले दिन हम वहीं से पढ़ना शुरू करते जहाँ हमने छोड़ा था।
चेखव की कहानियाँ हमें मेरी माँ के बीमार कमरे से बहुत दूर ले जाती थीं, लेकिन वे महज़ मनोरंजन से कहीं बढ़कर थीं। चेखव एक कुशल पर्यवेक्षक और बुद्धिजीवी हैं, जो हमें दूसरों के जीवन की गहराई में ले जाने में सक्षम हैं। ऐसा करते हुए, वे हमें दिखाते हैं कि कैसे एक-दूसरे के प्रति और स्वयं के प्रति हमारी भावनाएँ विरोधाभासी और अस्पष्ट हो सकती हैं। इसमें कोई समस्या, कोई चरमोत्कर्ष या कोई नैतिक संदेश नहीं है। वे एक मित्र की शांत आवाज़ हैं, जो आपको कोई महत्वपूर्ण बात बता रहे हैं।
मुझे विशेष रूप से "गुसेव" की कहानी याद है, जो एक बहुत बीमार सैनिक के नाव से घर लौटने की कहानी है। मुझे यह कहानी इसलिए याद है क्योंकि पढ़ते समय गुसेव की बीमारी के बढ़ते विवरणों ने मुझे लगातार बेचैन किया।
झूले से उठने में असमर्थ, गुसेव एक अस्पष्ट भूख से व्याकुल है, लेकिन वह समझ नहीं पा रहा है कि उसे क्या चाहिए। उसके सीने में भारीपन है, सिर में तेज़ दर्द है, उसका मुंह इतना सूख गया है कि जीभ हिलाना भी मुश्किल हो रहा है। वह ऊंघता है, सपने में ओवन से रोटी निकालता है, और फिर गुसेव की मृत्यु हो जाती है।
हम सोचते हैं कि उनकी मृत्यु एक अंत है; हम कहानी के समापन की उम्मीद करते हैं। लेकिन चेखव कुछ असाधारण करते हैं। गुसेव की मृत्यु हो जाती है, उनके शरीर को पाल के कपड़े में सिलकर, वज़न से बांधकर समुद्र में फेंक दिया जाता है—उनका जीवन समाप्त हो जाता है। और फिर भी उनकी कहानी जारी रहती है:

वह तेजी से तल की ओर बढ़ा। क्या वह वहाँ पहुँच गया? हाँ, पहुँच गया था।
तल तक तीन मील की दूरी बताई जाती है। साठ या सत्तर डूबने के बाद

धीरे-धीरे चलते हुए, वह डगमगाने लगा।
लयबद्ध ढंग से, मानो वह हिचकिचा रहा हो और बहता हुआ आगे बढ़ रहा हो।
धारा नीचे की ओर बहने की तुलना में अगल-बगल अधिक तेजी से बह रही थी।
फिर उसका सामना हार्बर पायलट नामक मछलियों के झुंड से हुआ।
उस काले शरीर को देखकर मछली मानो पत्थर की तरह रुक गई, और
अचानक मुड़कर गायब हो गए। एक मिनट से भी कम समय में वे
वह तीर की तरह तेजी से गुसेव की ओर वापस भागा और टेढ़े-मेढ़े रास्ते से चलने लगा।
पानी में उसके चारों ओर।
उसके बाद एक और काला शरीर दिखाई दिया। वह एक शार्क थी।
उसने गरिमा के साथ और बिना किसी रुचि दिखाए गुसेव के नीचे तैरा, जैसे कि हालाँकि उसने उसे अनदेखा कर दिया और अपनी पीठ के बल लेट गया, फिर उसने
पेट ऊपर की ओर करके, गर्म, पारदर्शी पानी में धूप सेंकते हुए।
उसने अपने जबड़े को दो पंक्तियों वाले दांतों के साथ सुस्ती से खोला।
बंदरगाह
पायलट बहुत खुश हैं, वे यह देखने के लिए रुक जाते हैं कि आगे क्या होगा।
शार्क शरीर के साथ थोड़ा खेलते हुए लापरवाही से अपने जबड़े आगे बढ़ाती है।
उसके नीचे, वह सावधानी से अपने दांतों से उसे छूता है, और पाल का कपड़ा सिर से पैर तक उसकी पूरी लंबाई फाड़ दें; एक वज़न गिर जाता है
और बंदरगाह के पायलटों को डराता है, और शार्क की पसलियों पर वार करता है।
तेजी से नीचे की ओर जाता है।
इस समय आसमान में बादल घनी तरह से इकट्ठे हैं।
जिस तरफ सूरज डूब रहा है; एक बादल विजय मेहराब की तरह लग रहा है,
एक शेर की तरह, तीसरा कैंची की तरह... पीछे से
बादलों के बीच से प्रकाश की एक चौड़ी, हरी किरण निकलती है और
आकाश के मध्य तक फैला हुआ; थोड़ी देर बाद एक और, बैंगनी-
रंग-बिरंगा... आसमान हल्का बैंगनी रंग का हो जाता है। इस खूबसूरत नज़ारे को देखकर...
मंत्रमुग्ध आकाश, पहले तो सागर क्रोधित प्रतीत होता है, लेकिन जल्द ही वह भी अपना रंग ले लेता है।
कोमल, आनंदमय, भावुक रंग जिनके लिए उपयुक्त रंग खोजना मुश्किल है।

मानव भाषा में नाम।
पढ़ने के बाद, मैंने किताब एक तरफ रख दी और अपनी माँ के हाथ पर हाथ रख दिया।
जब वह सो गईं, तो मैंने पर्दे ठीक किए और झील की ओर चल दी।
टीलों पर उगती घास में बैठे हुए, ऊपर उठते बादलों को देखते हुए, मैंने सोचा कि गुसेव की कहानी परेशान करने वाली नहीं थी। बल्कि इसके विपरीत। ऐसा लग रहा था कि इसने मेरी माँ को शांत कर दिया था, और इसने मुझे गर्मियों भर में महसूस की गई शांति से कहीं अधिक शांति प्रदान की थी।
दूर से मुझे धीमी गति से आती ट्रेन की हल्की, स्थिर खट-खट की आवाज़ सुनाई दी। मैं वहीं बैठकर सीटी की आवाज़ का इंतज़ार करता रहा। एक पल के लिए सब कुछ थम गया।

भूत-प्रेत

1

अपने सत्र के अंत में, मूर्तिकार टोबियास बी. ने अपने एक सपने का वर्णन करना शुरू किया—जिसमें उन्होंने समुद्र तट पर एक विशाल मूर्ति देखी थी। उनका वर्णन इतना संक्षिप्त था और सपना इतना छोटा था कि मुझे लगा कि शायद मैंने उसका अधिकांश भाग सुन ही नहीं पाया।
मैंने पूछा, "माफ़ कीजिए, क्या आप मुझे यह बात दोबारा बताएँगे?"
इस समय तक टोबियास लगभग दस वर्षों से मुझसे मिलने आ रहा था, और इस दौरान उसने लगभग कभी भी अपना कोई सपना साझा नहीं किया था। इस दशक के दौरान उसे कला बनाना भी increasingly मुश्किल लगने लगा था, हालाँकि हमने इस बारे में भी ज्यादा चर्चा नहीं की थी।
सपने में टोबियास समुद्र तट पर है। उसे रेत में बहकर आई एक बड़ी, दूधिया सफेद आकृति, एक मूर्ति मिलती है, जो लगभग उसकी ही ऊँचाई की है। टोबियास ने कहा, "मुझे लगा कि यह फाइबरग्लास की बनी है, लेकिन करीब से देखने पर मुझे पता चला कि यह केकड़े के खोल जैसी है।"
उसने अपने हाथों को इस तरह घुमाया कि उसकी हथेलियाँ एक दूसरे के सामने आ गईं, हवा को आकार देते हुए, एक छोटा सा चाप बनाया।
कुछ देर रुककर उसने कहा, “यह रेत में फंसा हुआ था। रेत गीली और काली थी, और समुद्र धूसर और शांत था। खोल के अंदर जो भी जीव था, वह बह गया था।” उसने आगे कहा, “जैसे कोई जानवर रेत में फंसकर मर गया हो।”
उसने अपने हाथ गोद में जोड़ लिए।
“बस यही है, यही मेरा पूरा सपना है,” उन्होंने कहा। “मैं इस किनारे पर पड़े, टूटे-फूटे ढांचे को देख रहा हूँ, और मेरे मन में यह विचार आ रहा है कि एक समय यह मूर्ति एक जीवित वस्तु थी, लेकिन अब यह निर्जीव है।”
टोबियास ने मेरी तरफ देखा। "तुम क्या सोचते हो?"
मैंने कहा, "मुझे बताओ कि सपने के बारे में तुम्हें क्या महत्वपूर्ण लगता है।"

उन्हें यकीन नहीं था। फिर उन्होंने कहा, "फंस गई थी—मूर्ति रेत में फंस गई थी। वह बेजान हो गई थी। सपना किसी बुरे सपने जैसा था। इसने मुझे जगा दिया।" मैंने पूछा, "क्या आपको हमारा पिछला सत्र याद है?"
टोबियास असमंजस में दिख रहा था।
मैंने कहा, "मैंने 'फंसे हुए' शब्द का इस्तेमाल किया - हम दोनों ने ही कई बार किया।"
टोबियास ने सिर हिलाया। "ओह, हाँ।"
मुझे लगता है कि आपका सपना उस बातचीत की प्रतिक्रिया हो सकता है।
पहले भी ऐसा हो चुका है कि मरीज़ अपने सपने के बारे में बताते हैं जो पिछली मुलाकात में कही गई मेरी किसी बात से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ लगता है। कुछ साल पहले, मैंने अपने एक मरीज़ के लिए एक सहकर्मी से सलाह ली। वह सहकर्मी बहुत ही समझदार थे। अगली मुलाकात में, मैंने उत्साहपूर्वक अपने मरीज़ को अपने सहकर्मी के विचारों की व्याख्या करके बताई। अगले दिन मेरे मरीज़ ने एक सपने के बारे में बताया जिसमें वह सैविल रो की एक दर्जी की दुकान में थे। एक सेल्समैन ने उन्हें कई सूट पहनाए। उन्होंने कहा, "वे बहुत सुंदर थे, हर सूट मुझे बिल्कुल फिट आया, लेकिन अनुभव थोड़ा डरावना था क्योंकि सब कुछ सेकंड हैंड था।"
इसी तरह, मुझे लगा कि टोबियास का सपना शायद उस विचार की प्रतिक्रिया हो सकता है जिसे मैंने पिछली बैठक में उठाया था। मैंने कई बार "फंसा हुआ" शब्द का प्रयोग किया था। टोबियास ने अपने सपने का वर्णन करने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया, वह और भी सजीव थी: "बर्बाद," "टूटा हुआ," "एक खोखला ढांचा," "एक जीवित प्राणी" जो अब "मृत" है—ये शब्द टोबियास के जीवन के अनुभव को बेहतर ढंग से व्यक्त करते हैं। टोबियास के सपने ने मुझे एक ऐसा अहसास भी कराया, जैसा मैंने पहले कभी नहीं किया था, कि मैं मानो किसी दरार से, मीलों नीचे, अपने पैरों के नीचे, कोई आवश्यक चीज़ देख पा रहा था, टोबियास का एक ऐसा पहलू जिस पर मैंने पहले कभी ध्यान नहीं दिया था। मुझे लगा कि अपना सपना सुनाकर, टोबियास अनजाने में, अचेतन रूप से मुझे बता रहा था कि वह केवल फंसा हुआ नहीं था, बल्कि वह मर चुका था।

2

"जीवन में मृत" होना सुनने में अटपटा लग सकता है, लेकिन यह वाक्यांश मेरे द्वारा वर्षों से देखे गए कई रोगियों का सटीक वर्णन करता है। इस वाक्यांश की जड़ें मनोविश्लेषणात्मक अवधारणा "मृत माँ" में हैं, जो फ्रांसीसी मनोविश्लेषक आंद्रे ग्रीन द्वारा भावनात्मक निष्क्रियता के एक विशेष रूप को समझाने के लिए विकसित की गई परिकल्पना है। ग्रीन उन लोगों की बात नहीं कर रहे हैं जिन्होंने वास्तव में अपने माता-पिता की मृत्यु का अनुभव किया है। वे उन रोगियों का वर्णन करने का प्रयास कर रहे हैं जिनका पालन-पोषण एक ऐसी माँ या पिता ने किया जो शारीरिक रूप से तो उपस्थित थे, लेकिन किसी न किसी रूप में भावनात्मक रूप से अनुपस्थित थे, अपने बच्चे के विकास के एक महत्वपूर्ण समय में निर्जीव थे। आमतौर पर, मृत माँ अपने बच्चे को खाना खिलाती है, नहलाती है और उसके कपड़े बदलती है। वह वे सभी काम करती है जो एक माँ को करने चाहिए; लेकिन किसी गहरे निराशा के कारण, वह बच्चे के लिए जीवन का स्रोत नहीं बन पाती। ग्रीन का मानना था कि एक मृत माँ या मृत पिता का बच्चा एक सकारात्मक, ऊर्जावान और मनोरंजक वयस्क के रूप में विकसित हो सकता है - लेकिन यह जीवंत व्यक्तित्व बच्चे द्वारा बार-बार मृत माता-पिता को पुनर्जीवित करने के प्रयास का परिणाम है। कुछ अन्य चिकित्सकों का मानना है कि बच्चा दूसरे माता-पिता, यानी उस साथी की नकल कर रहा होगा जो उस निर्जीव माता-पिता की कमी को पूरा करने की कोशिश कर रहा था। फिर भी, जिस तरह से हम अपने माता-पिता दोनों को आत्मसात करते हैं, उसी के कारण यह निर्जीवता पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती जाती है।
आम तौर पर, ये मरीज़ मेरे पास इसलिए आते हैं क्योंकि कोई और, आमतौर पर उनका जीवनसाथी, उन्हें मदद लेने की सलाह देता है। शुरुआती मुलाकात में वे अपने भीतर के खालीपन का ज़िक्र बहुत कम करते हैं। उनका यह ठंडापन धीरे-धीरे ही सामने आता है। उनके उत्साह और आकर्षण—उनकी उल्लेखनीय शैक्षणिक या पेशेवर उपलब्धियों—के नीचे एक ऐसा भ्रम जैसा खालीपन छिपा होता है जिसे वे समझ नहीं पाते। एक मरीज़ ने मुझसे कहा, “मेरे पास सब कुछ है: पत्नी, बच्चे, एक खुशहाल जीवन। लेकिन कुछ पलों में, मुझे सबसे गहरा अकेलापन महसूस होता है। मेरा जीवन अर्थहीन लगता है।”

हमेशा अच्छा प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक रहने वाले ये मरीज़ अक्सर यौन रूप से सफल होते हैं—फिर भी, वे प्रेम नहीं कर पाते। उनकी तीव्र, ऊर्जावान यौन इच्छा उनके भीतर की नीरसता और निराशा से बचाव का एक तरीका है। वे जो "प्रेम" देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उन्हें कभी मिला था, वह प्रेम का एक दिखावा मात्र है: एकदम पतला दूध।
टोबियास की उदासी अलग थी। यह उसके बचपन के विकास में किसी समस्या या "मृत" माता-पिता का परिणाम नहीं थी। उसकी प्रेमिका मिसाकी की मृत्यु के कुछ समय बाद ही उसकी निर्जीवता शुरू हो गई थी। बेशक, जीवनसाथी की मृत्यु से दुख, निराशा और कभी-कभी अवसाद होता है, लेकिन इस तरह की जीवन-मृत्यु—मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। यदि उसका मनोविश्लेषण सफल होना था, तो यह एक ऐसा रहस्य था जिसे हमें सुलझाना ही था।

—

जब हमारी पहली मुलाकात हुई, तो टोबियास एक उभरते हुए कलाकार थे। वे पहले ही एक प्रसिद्ध कला पत्रिका की "40 अंडर 40" सूची में शामिल हो चुके थे; लंदन के एक प्रमुख संग्रहालय में उनकी एक छोटी एकल प्रदर्शनी भी हो चुकी थी। अमेरिका, एशिया और यूरोप की गैलरी और संग्राहक उनकी कलाकृतियाँ खरीद रहे थे। उनके दोस्त थे, परिवार था— एक खुशहाल जीवन था।
मिसाकी की मृत्यु के बाद के दस वर्षों में, जब मैं टोबियास के साथ काम कर रहा था—यानी एक दशक से अधिक समय से—उनका जीवन धीरे-धीरे समाप्त होता जा रहा था। जिस गैलरी में उनका काम प्रदर्शित होता था, वह दिवालिया हो गई। उन्हें किसी दूसरी गैलरी में जगह बनाने में कठिनाई हुई। अपने स्टूडियो और घर दोनों रहे मकान का मॉर्गेज चुकाने में असमर्थ होने के कारण, उन्होंने संपत्ति किराए पर दे दी। किराए से मिली रकम से वे अपने खर्चे चलाते थे। बेघर होने से बचने के लिए, वे "संपत्ति संरक्षक" बन गए—यानी एक खाली इमारत में नाममात्र का किराया देकर रहने वाले व्यक्ति—लेकिन इसका मतलब यह था कि उन्हें कभी भी वहां से हटना पड़ सकता था। अक्सर ऐसा होता भी था। अंततः, टोबियास ने लंदन से बहुत दूर, दोस्तों और परिवार से दूर, एक खाली स्कूल में संपत्ति संरक्षक के रूप में रहने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। हम नियमित रूप से मिलते रहे, लेकिन उनके मनोविश्लेषण शुरू करने के दस साल बाद, यह

कहना उचित होगा कि टोबियास ने मूर्तिकला बनाना लगभग बंद कर दिया था। उन्होंने किसी भी रिश्ते के बारे में सोचना छोड़ दिया था, बच्चे पैदा करने की इच्छा भी छोड़ दी थी। उन्होंने कहा, "मुझे किसी को भी अपने घर लाने में शर्म आएगी।"
इस पूरे समय के दौरान, मैंने वे सभी काम किए जो एक चिकित्सक को करने चाहिए। मैंने अपने काम को सहकर्मियों के पास पर्यवेक्षण के लिए भेजा। समय के साथ, मैंने टोबियास को पहले एक सहकर्मी के पास और फिर दूसरे के पास आगे के मूल्यांकन के लिए भेजा। उनके हस्तक्षेप भी उतने ही असफल रहे। मनोविश्लेषण के दौरान कई बार मनोविश्लेषक की भावनाएँ उसकी नैदानिक समझ से मेल खाती हैं। लेकिन कभी-कभी उसके भीतर उत्पन्न होने वाली भावनाएँ नैदानिक स्थिति के बारे में उसकी धारणा से कहीं अधिक गंभीर होती हैं। कभी- कभी रोगी के प्रति उसकी अवचेतन जागरूकता उसकी नैदानिक समझ से कहीं आगे होती है। मुझे लगा कि टोबियास फंस गया है, और मैंने उसे यह बात बता भी दी। अगले सप्ताह, अपने सपने के माध्यम से मुझसे बात करते हुए, उसने मुझे वह बात बताई जो मैं कुछ समय से महसूस कर रहा था, लेकिन सोच भी नहीं पा रहा था, शब्दों में व्यक्त करना तो दूर की बात है: टोबियास मर चुका था।
अपनी डुइनो एलिजीज़ की पहली शोकगीत में, रिल्के ने कल्पना की है कि मृत्यु कैसी होती है:

यह सच है कि पृथ्वी पर न रहना, मुश्किल से सीखी गई परंपराओं का पालन करना बंद कर देना अजीब लगता है।
गुलाब और इस तरह की उम्मीद जगाने वाली अन्य चीजें न दें

रिल्के के अनुसार, मृत्यु कोई शारीरिक अवस्था नहीं है, बल्कि यह एक विशेष प्रकार की अनुभूति है: मृतकों को अजीब सा लगता है क्योंकि उनका कोई भविष्य नहीं होता। अतीत को त्यागना, "टूटे हुए खिलौने की तरह अपने नाम को भी अनदेखा करना" अजीब लगता है।
बाद में वह टिप्पणी करता है:

अपनी इच्छाओं को पूरा न कर पाना अजीब है। उन सभी चीजों को देखना अजीब है जो कभी इतनी परस्पर जुड़ी हुई थीं।

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

3

टोबियास और मिसाकी की मुलाकात अप्रैल 2008 में हुई थी। टोबियास चौंतीस वर्ष के थे और मिसाकी सत्ताईस वर्ष की। वह जापान की एक गैलरी के लिए कलाकृतियाँ बना रहे थे और टोक्यो में समय बिता रहे थे। उनकी एक कलाकृति को क्योटो के राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय में नई मूर्तिकला की प्रदर्शनी के लिए चुना गया था। टोबियास और मिसाकी की मुलाकात प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में हुई। "वह सबसे अलग दिख रही थीं, लेकिन उन्हें इस बात से कोई आपत्ति नहीं थी... और जिस तरह से उन्होंने कपड़े पहने थे... वह स्टाइलिश और कूल थीं... वह... मेरी पहुँच से बहुत दूर थीं, लेकिन फिर भी मैं उनके पास गया।"
उन्होंने एक-दूसरे के फोन नंबर लिए और मिलने का समय तय किया। "रात के खाने पर—यह हमारी दूसरी मुलाकात थी, मैं अगले दिन बर्लिन में अपने माता-पिता से मिलने घर वापस जा रहा था—अचानक उसने मुझसे कहा, 'मुझे पता है कि मुझे तुम्हें सब कुछ बताने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं तुम्हें यह बताना चाहती हूँ। एक साल पहले, मैं बीमार पड़ गई थी और मुझे अस्पताल जाना पड़ा क्योंकि मुझे आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। मैं बहुत बीमार थी, लेकिन मैं ठीक हो गई। अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ।' उसकी ईमानदारी दिल को छू लेने वाली थी, लेकिन चूंकि वह मुझे बिल्कुल भी मानसिक रूप से विक्षिप्त नहीं लग रही थी, इसलिए यह जानकारी मेरे लिए आश्चर्यजनक थी।"
रात के खाने के बाद, मिसाकी ने टोबियास को क्योटो में उसके होटल तक छोड़ने की पेशकश की। होटल के बाहर फुटपाथ पर, जब उन्होंने एक-दूसरे को शुभ रात्रि कहा, तो उसने उसे गले लगाया, उसे प्यार से चूमा और उसके होंठों को हल्के से काटा। बाद में, उसने टोबियास को बताया कि उसने उसे अपने कमरे में नहीं बुलाया, उसका संयम ही था जिसने उसे यह एहसास दिलाया कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जिस पर वह भरोसा कर सकती है। मिसाकी ने एक महीने के लिए लंदन आने का फैसला किया। उनकी सिर्फ दो मुलाकातें हुई थीं।
कुछ सप्ताह बाद, लंदन पहुँचने के कुछ दिनों बाद, मिसाकी ने अपना होटल का कमरा छोड़ दिया और टोबियास के घर में रहने चली गई, जो ईस्ट एंड में एक स्टूडियो था जहाँ वह रहता और काम करता था। टोबियास दिन में कुछ काम करता

था, लेकिन ज़्यादातर समय वे साथ बिताते थे। वे कला प्रदर्शनियों, डिनर और पार्टियों में जाते थे।
घर में आने के कुछ ही समय बाद, मिसाकी ने टोबियास से कहा कि वह कैमडेन मार्केट जाना चाहती है। एक दुकान की खिड़की में, उसने कांच के पाइप और नशीली दवाओं से संबंधित अन्य सामानों से भरी अलमारियाँ देखीं। टोबियास ने कहा, "मैं उसके चेहरे पर देख सकता था कि वह उस जगह को देखकर कितनी उत्साहित थी।" अंदर, काउंटर पर एक युवा जापानी युवक बैठा था। मिसाकी उससे जोश भरी बातचीत में मशगूल हो गई। बाद में, उसने टोबियास को बताया कि उसने उससे पूछा था कि क्या वह उसे क्रिस्टल मेथ दिला सकता है। उसने कहा कि जापान में मेथ को "तेज़ असर करने वाला" कहते हैं। उस व्यक्ति ने उसे बताया कि इंग्लैंड में क्रिस्टल मेथ मिलना मुश्किल है। टोबियास ने मुझे बताया, "यह पहली बार था जब मैंने मिसाकी को मेथ के बारे में बात करते सुना। यह एक ऐसी चीज़ थी जिसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था।"
दो दिन बाद, जब टोबियास अपनी गैलरी में था, मिसाकी कैमडेन लौट आई, सड़क पर किसी को ड्रग्स बेचते हुए देखा और उससे एम्फ़ैटेमिन खरीद ली। जब टोबियास घर लौटा, तो उसने उसे बाथरूम के फर्श पर टॉयलेट में उल्टी करते हुए पाया। उन दोनों में बहस हो गई। टोबियास ने मिसाकी से कहा कि उसका नशा करना उसे परेशान करता है, और वह उसके घर में नशा नहीं कर सकती। "मुझे याद है मैंने कुछ ऐसा कहा था, 'कृपया मुझे ऐसा महसूस न कराएं कि मैं सिर्फ आपका होटल हूं।' फिर उसने एक अद्भुत काम किया। वह फूट-फूटकर रोने लगी और मुझसे कहा कि वह फिर कभी ऐसा नहीं करेगी, और उसने ऐसा सिर्फ इसलिए किया था क्योंकि वह 'मुझसे दूरी बनाए रखना चाहती थी।' उसे मुझसे प्यार हो जाने का डर था।" उसके बाद, मैंने लगभग काम करना बंद कर दिया ताकि मैं उसके साथ समय बिता सकूँ क्योंकि मुझे पता था कि जापान लौटने से पहले हमारे पास सिर्फ़ कुछ ही हफ़्ते बचे हैं। और मैं अपने रिश्ते के भविष्य के बारे में सोचने लगा। अगर कोई एक ही शहर में रहता है, तो रिश्ते लंबे समय तक बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं। आप एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं। जबकि अगर कोई दुनिया के दूसरे छोर पर जा रहा है, तो आप खुद से पूछते हैं—क्या हममें से कोई एक दूसरे के देश में बस जाएगा? मुझे नहीं पता कि इसी वजह से ऐसा हुआ, लेकिन यह ज़रूर हुआ कि हमने साथ में बच्चे पैदा करने के बारे में बात करना शुरू कर दिया। यह एक

ऐसी बातचीत थी जो मैंने अपनी पिछली गर्लफ्रेंड्स के साथ कभी नहीं की थी, यहाँ तक कि उन महिलाओं के साथ भी जिनके साथ मैं लंबे समय से था।
“मैं चाहता हूँ कि तुम जानो कि हमारे बीच हर तरह से, भावनात्मक और यौन रूप से, बहुत गहरा रिश्ता था,” टोबियास ने कहा। “कभी-कभी सेक्स धीमा और कोमल होता था और हम घंटों एक-दूसरे को देखते और चूमते रहते थे। कभी-कभी हम दो जंगली जानवरों की तरह होते थे, एक-दूसरे को खरोंचते और काटते थे। जब उसे चरम सुख मिलता था, तो एक पल के लिए वह बिल्कुल अलग दिखती थी। मुझे ऐसा लगता था जैसे मैं उसे देख रहा हूँ—वह जैसी थी, जैसी वह पहले थी। मैं उसके दिल की गहराई में देख सकता था। मुझे उससे पूरी तरह प्यार हो गया था, और उसने मुझे बताया कि उसे भी ऐसा ही महसूस होता है। हमारा रिश्ता हम दोनों के लिए पहले कभी अनुभव किए गए किसी भी रिश्ते से अलग था। हमने हर बात पर खुलकर चर्चा की। उसने मुझे अपने बारे में, अपनी समस्याओं के बारे में, अपने मानसिक टूटने के बारे में बताया।”
मिसाकी ने टोबियास को बताया कि उसका यह मानसिक आघात क्रिस्टल मेथ के कारण हुआ था। विश्वविद्यालय में उसकी एक दोस्त ने उसे मेथ से परिचित कराया था। उसकी दोस्त ने तो इसे सिर्फ एक या दो बार ही पिया था, लेकिन मिसाकी के लिए इसे छोड़ना मुश्किल हो गया था। टोबियास से मिलने से एक साल पहले, वह हर दिन मेथ का सेवन करने लगी थी। वह दिन-ब-दिन बेचैन होती गई, कम सोने-खाने लगी, और अंत में उसका मानसिक संतुलन पूरी तरह बिगड़ गया। उसने कई महीने एक मनोरोग अस्पताल में बिताए।
मिसाकी ने क्रिस्टल मेथ का सेवन क्यों किया था? क्या यह अवसाद था? प्रेम से बचने का उसका तरीका? हालाँकि मैं उसके बारे में या उसकी आंतरिक दुनिया के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं जुटा पाई, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि वह टोबियास को अपना उद्धारकर्ता मानती थी, वह व्यक्ति जो उसे उसकी समस्याओं से बचाएगा। लेकिन टोबियास मिसाकी को कैसे देखता था? क्योंकि उसकी अंग्रेजी सीमित थी, इसलिए वह उसके लिए पूरी तरह से अनजान थी। इससे उसे उसे गढ़ने, उसकी कल्पना करने के लिए अधिक जगह मिली।
और फिर उसकी खूबसूरती थी। टोबियास ने मुझसे कहा, "अगर वो चाहे तो अपनी खूबसूरती को और भी बढ़ा सकती है। उसके कपड़े पहनने का तरीका, उसका व्यवहार — वो एक कलाकृति बन सकती थी।" एक बार मिसाकी और टोबियास ने वेस्ट एंड में कई दोस्तों को चाय पर बुलाया। इसे खास बनाने के लिए, उसने मेकअप किया, एक

पूछताछ कक्ष में ले जाया गया। सीमा शुल्क एवं आव्रजन अधिकारी ने बताया कि चूंकि मिसाकी इतनी बड़ी मात्रा में मनोरोग रोधी दवाइयाँ लेकर ब्रिटेन आ रही थी, इसलिए टोबियास को यह पुष्टि करनी थी कि वह उसके साथ ही रहेगी और उसकी देखभाल करने के लिए तैयार है। सहमति देने के बाद, उसे दूसरे कमरे में ले जाया गया। मिसाकी एक मेज पर बैठी थी। उसका वजन काफी कम हो गया था। "वह बिल्कुल दुबली-पतली लग रही थी," उसने कहा।
टोबियास और मिसाकी जल्दी ही एक नियमित दिनचर्या में ढल गए। टोबियास लगभग हर दिन और कुछ शामों को काम करते थे। मिसाकी स्टूडियो में उनके साथ रहती थीं। उनके सोफे पर आराम से लेटकर, वह पढ़तीं या टोबियास द्वारा खरीदे गए हेडफ़ोन पर संगीत सुनतीं। जब टोबियास आराम करते, तो वे टहलने जाते या कुछ खाने के लिए बाहर जाते। शाम को, वे किसी प्रदर्शनी के उद्घाटन, फिल्म देखने जाते या दोस्तों के साथ डिनर पर मिलते। वे दोनों ही अस्पताल में बिताए समय, मानसिक परेशानी या क्रिस्टल मेथ के सेवन के बारे में बात करने से बचते थे। इस आपसी चुप्पी के बावजूद, या शायद इसी वजह से, धीरे-धीरे मिसाकी बेहतर होती नज़र आने लगीं। टोबियास ने कहा, "हमने एक-दूसरे को गले लगाकर बहुत समय बिताया। कुछ अच्छे पल भी थे। हमारा रिश्ता और गहरा हुआ, लेकिन यह दूसरा प्रवास आसान नहीं था।"
जापानी मनोचिकित्सक द्वारा दी गई दवा से मिसाकी को नींद आने लगी थी। टोबियास टोक्यो में होने वाली आगामी प्रदर्शनी की तैयारियों में व्यस्त था और उसे मिसाकी की देखभाल भी करनी पड़ती थी। वह खाना बनाता, सफाई करता और कपड़े धोता था। वह यह सुनिश्चित करता था कि वे हर दिन बाहर समय बिताएं, आमतौर पर रीजेंट नहर के किनारे एक घंटे की सैर। "पांच महीने साथ रहने के बाद, मुझे लगता है कि उसने मेरी झुंझलाहट को भांप लिया था, क्योंकि एक दिन उसने मुझे बताया कि वह जापान लौट रही है। उसने मेरी प्रदर्शनी शुरू होने से कुछ हफ्ते पहले ही टोक्यो जाने की योजना बनाई थी। ज़ाहिर है, मैं चिंतित हो गया। मुझे लगा कि इस बात का काफी गंभीर खतरा है कि वह फिर से क्रिस्टल मेथ का सेवन करने लगेगी। लेकिन उसने कहा कि उसे फिर से आवाजें सुनाई देने लगी हैं। वे उसे डराती हैं। उसे अपने डॉक्टर के पास रहने की ज़रूरत है। मैंने उसकी बात पर विश्वास किया।"
छह सप्ताह बाद, उनकी पहली मुलाकात के एक साल से भी कम समय में, मिसाकी अकेले जापान वापस चली गई। वह विमान से उतरी, ओसाका में अपने माता-पिता के

घर गई और वहाँ उसे क्रिस्टल मेथ मिली जो उसने छिपाकर रखी थी। उसे पीने के कुछ ही समय बाद, उसने काम पर अपनी माँ को फोन किया और बताया कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है। उसने अपनी माँ को तुरंत आने के लिए कहा, और वह आ भी गई, लेकिन उसकी माँ के घर पहुँचने से पहले ही, एक राहगीर ने पुलिस को फोन करके बताया कि मिसाकी सड़क के बीच में खड़ी होकर चिल्ला रही है।
मिसाकी ने टोबियास को फोन करने से दो हफ्ते पहले की बात है। जब उन्होंने बात की, तो उसने उसे बताया कि वह एक सुरक्षित मनोरोग इकाई में है। “उसे पता था कि मैं आ रही हूँ, और वह ठीक होना चाहती थी ताकि वह मेरे साथ रह सके, और हम साथ में बाली में छुट्टियाँ मनाने जा सकें। मुझे लगा कि उसकी हालत सुधर रही है। उसके मनोचिकित्सकों को भी लगा कि उसकी हालत सुधर रही है, इसलिए उन्होंने उसे सुरक्षित इकाई से एक सामान्य अस्पताल के पुनर्वास केंद्र वाले मनोरोग वार्ड में स्थानांतरित करने का फैसला किया था।”
नए अस्पताल में अपने पहले दिन, टोबियास और मिसाकी ने फिर से बात की। वह शांत और विचारशील थी। “मैंने उससे सख्ती से बात की। वह पहले जैसी सहज थी। उसने मुझसे कहा कि जब मैं जापान पहुँचूँ, तो मैं उससे मिलने आ सकता हूँ क्योंकि उसने अस्पताल के कर्मचारियों को बताया था कि मैं उसका मंगेतर हूँ। हो सकता है कि वह मेरे साथ मेरे होटल में आकर ठहर भी सके। उसने कहा कि वह मुझे याद करती है। उसने मुझसे कहा कि वह मुझसे प्यार करती है। मैंने उससे कहा कि मैं उससे प्यार करता हूँ। फोन रखने के बाद, मुझे शांति का अनुभव हुआ। मुझे आशा भी जगी।”
अगली सुबह, टोबियास ने मुझे बताया, मिसाकी अस्पताल से निकली और कुछ ब्लॉक चलकर उस ऊंची इमारत में गई जहाँ वह बचपन में रहती थी। कुछ हफ़्ते बाद, टोबियास को उस इमारत का सीसीटीवी फुटेज दिखाया गया: मिसाकी लिफ्ट से छत पर बने बगीचे में जाती है। उसने मुझे बताया, "आप उसे एक बेंच पर बैठे, मेरे दिए हुए हेडफ़ोन पर संगीत सुनते हुए देख सकते हैं। लगभग आधे घंटे बाद, वह रेलिंग के पास जाती है, उस पर चढ़ती है और गायब हो जाती है।"
मैंने कहा, "तुम मुझे बता रहे हो कि उसने आत्महत्या कर ली।"
“खैर, यह सब जानबूझकर किया गया था या नहीं और क्या वह... टोबियास की बात अधूरी रह गई। या उसे पता भी था कि क्या हो रहा है, यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है। वह किनारे तक जाती है और बस चलती रहती है। वह ज़रा भी नहीं हिचकिचाती। मुझे नहीं लगता कि यह कोई सोच-समझकर लिया गया फैसला था।”

मैंने पूछा, "क्या आप कह रहे हैं कि आपको लगता है कि वह ड्रग्स, क्रिस्टल मेथ ले रही थी?"
“नहीं, नहीं, वह ड्रग्स नहीं ले रही थी—मेरा मतलब है कि वह वही दवाइयां ले रही थी जो उसके मनोचिकित्सक ने उसे दी थीं। मुझे लग रहा था कि यह एक दुर्घटना थी।”
“क्या आपको नहीं लगता कि यह आत्महत्या थी?”
“पिछली रात उसने मुझे बताया कि उसने सिगरेट पीना छोड़ दिया है,” उसने कहा। “अगर कोई आत्महत्या करने की योजना बना रहा हो तो वह सिगरेट पीना कैसे छोड़ सकता है?”
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। मैं जवाब दे ही नहीं सका। मुझे मिसाकी और टोबियास के लिए गहरा दुख महसूस हो रहा था। मैं सोचने लगा कि मिसाकी का सिगरेट छोड़ना ठीक वैसा ही काम है जो आत्महत्या की कगार पर खड़ा कोई व्यक्ति कर सकता है। मुझे एक सहकर्मी द्वारा बताई गई एक कहानी याद आई, जिसमें एक मरीज़ ने 200 एस्पिरिन निगलकर आत्महत्या करने की कोशिश की थी। उसने 199 गोलियां लीं, और फिर आखिरी गोली नहीं निगली, क्योंकि वह ज़मीन पर गिर गई थी और उसमें कीटाणु हो सकते थे। आत्महत्या एक बेहद दुविधापूर्ण कार्य है। मरने की इच्छा को जीने की इच्छा पर हावी होना पड़ता है। यह लिखते हुए मुझे एक और मरीज़ याद आ रही है, एक युवती जिसके पिता ने अपनी कलाई काट ली थी। कोरोनर की रिपोर्ट में उनकी बांहों पर कई "संकोच के निशान" बताए गए थे—वे छोटे-छोटे कट जो उन्होंने खुद को आत्महत्या के कठिन काम में झोंकने से पहले लगाए थे। टोबियास मिसाकी के उस छोटे से हिस्से से चिपटा हुआ था जो जीना चाहता था, उसके उस बड़े हिस्से को देखने से इनकार कर रहा था जो खुद को नष्ट करने के लिए एक ऊंची इमारत की छत पर चढ़ गया था।
एक और बात जिसने मुझे चौंका दिया: मिसाकी ने अपने मनोचिकित्सकों और टोबियास की उम्मीदें कैसे बढ़ा दी थीं, उन्हें यह विश्वास दिलाकर कि वह ठीक हो रही है। आत्महत्या की प्रवृत्ति वाले मरीज़ों में यह असामान्य नहीं है। चाहे इसका कारण कुछ भी हो—चाहे वह उसके बढ़ते आंतरिक संघर्ष का परिणाम हो या दूसरों को चोट पहुँचाने की तीव्र, क्रूर इच्छा—उनकी उम्मीदें बढ़ाकर, मिसाकी ने अपने मनोचिकित्सकों और टोबियास को भ्रम, असफलता और पश्चाताप की गहरी भावना से भर दिया था।

"मुझे कभी यह ख्याल भी नहीं आया कि उसकी मौत हो जाएगी," टोबियास ने कहा। "मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी यह सोचा था कि हमारा रिश्ता खत्म हो सकता है।"

4

टोबियास द्वारा मुझे अपना सपना सुनाने के एक सप्ताह बाद, वह अपने सेशन के लिए जल्दी आ गया। वह कुछ अलग लग रहा था जिसे मैं तुरंत पहचान नहीं पाई। उसकी ऊर्जा भी अलग थी।
बैठते ही उन्होंने कहा, "मैं इस मूर्ति को पहचानता हूँ—इस दूधिया सफेद आकृति को—मैं जानता हूँ कि यह क्या है।"
टोबियास आगे की ओर झुके। “मिसाकी की मृत्यु के दो सप्ताह बाद, मैं जापान के ओसाका गया। मैं उसकी बहनों और माँ से मिला। उसके पिता मुझसे मिलना नहीं चाहते थे। मैं उन्हें बताना चाहता था कि मैंने उसकी देखभाल करने की पूरी कोशिश की,” टोबियास ने कहा, “कि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया।” उनकी आवाज़ और भी तीखी और दृढ़ हो गई। उन्होंने आगे कहा, “उनके घर पहुँचने के बाद, हम चारों उनके बैठक कक्ष में गए और मिसाकी की याद में बने इस स्मारक के पास बैठ गए—वहाँ उनकी तस्वीरें, फूल और अगरबत्ती रखी थीं। हमने थोड़ी देर बात की। बस यूँ ही कुछ बातें।”
“फिर मिसाकी की बड़ी बहन ने मुझसे पूछा कि क्या मैं मिसाकी की हड्डियाँ देखना चाहूँगा। उसकी अंग्रेज़ी बहुत अच्छी नहीं थी। मैंने मान लिया कि उसका मतलब मिसाकी की राख से है। शिष्टाचारवश, मैंने हाँ कह दिया। फिर उसने उस डिब्बे का ढक्कन खोला, और उसमें मिसाकी की हड्डियाँ थीं।”
टोबियास ने बोलने के लिए मुंह खोला, रुक गया, फिर दोबारा कोशिश की। उसकी आवाज़ धीमी थी। "उन्हें इस डिब्बे में इस तरह से रखा गया था, मोड़कर, कि उसकी खोपड़ी सबसे ऊपर थी, इसलिए जब मैंने अंदर देखा तो सबसे पहले मुझे वही दिखाई दी।"
वह आगे बोला, “उसके दांत। मैंने उन्हें पहचान लिया।” उसकी आवाज कांपने लगी। “मैं उस एहसास को बयान नहीं कर सकता जो मुझ पर हावी हो गया। मैंने ऐसा पहले कभी महसूस नहीं किया। सब कुछ थम गया। दुनिया रुक सी गई।”

“ऐसा लग रहा था जैसे वो मेरी तरफ मुस्कुरा रही हो। मैं इसे और कैसे बयान करूँ, मुझे नहीं पता। मुझे लगा कि मिसाकी मुझे एक तरफ से देख रही है। लेकिन एक दूसरी तरफ से भी मुझे देख रही थी, क्योंकि उसकी खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो चुके थे। वो पिकासो की पेंटिंग जैसी लग रही थी। फिर, सब कुछ थमने के बाद, ये हुआ। मुझे लगता है ये किसी तरह का सामना करने का तरीका था। मेरे मन में, मैंने खुद को कहते सुना: ‘ओह, मिसाकी, आज तुम सच में ठीक नहीं लग रही हो— क्या कहते हो, थोड़ा आराम कर लें, कुछ देर के लिए शांत हो जाएँ?’”
“मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानती जिसने अपने किसी प्रियजन की खोपड़ी देखी हो। यह हमारी संस्कृति का हिस्सा ही नहीं है। मुझे नहीं पता था कि यह जापानी संस्कृति का हिस्सा है। मुझे इसकी उम्मीद भी नहीं थी।”
टोबियास ने नीचे देखा, फिर मेरी ओर देखा। “हमारे आखिरी सेशन के तुरंत बाद ही मुझे एहसास हो गया था कि मेरे सपने में जो मूर्ति थी—वह दूधिया सफेद आकृति—वह मिसाकी की खोपड़ी का टुकड़ा है, उसकी खोपड़ी का ऊपरी हिस्सा, वह भाग जिसे मैंने डिब्बे में देखते ही सबसे पहले देखा था। मेरे सपने में दिखाई गई मूर्ति उसकी खोपड़ी है।”
उसने एक लंबी सांस छोड़ी। “दस साल बाद भी मैं उस पल के बारे में सपने देख रहा हूँ। मैं उसे भुला नहीं सकता।”
बाद में टोबियास ने मुझे बताया कि जापानी लोग शव को कम तापमान पर जलाते हैं ताकि मांस राख में बदल जाए, लेकिन हड्डियाँ बची रहें। दाह संस्कार के बाद, एक बौद्ध पुजारी खोपड़ी को कई टुकड़ों में तोड़ देता है। फिर, विशेष बड़ी छड़ियों का उपयोग करके, परिवार और पुजारी हड्डियों को एक डिब्बे में रखते हैं, जिसमें पैर नीचे और खोपड़ी ऊपर होती है।
“यह सिर्फ उसकी हड्डियाँ देखना ही नहीं था,” टोबियास ने कहा, “यह पूरी बात थी। मिसाकी की माँ ने उसे अपने गर्भ में पाला था। और वह वहाँ अपनी बेटी की हड्डियों वाले इस बक्से के बगल में बैठी थी। मैं यह बात समझ ही नहीं पा रहा था… अभी भी नहीं समझ पा रहा हूँ। और फिर उसकी माँ ने कुछ ऐसा किया…।” टोबियास अचानक थका हुआ सा दिखने लगा, और मैं समझ गया कि वह मुझे और भी बहुत कुछ बताना चाहता है लेकिन उसे असहज महसूस हो रहा है।
मैंने कहा, "अपना समय लो।"
टोबियास ने गहरी सांस ली। “अपनी दूसरी मुलाकात के दौरान, मिसाकी के साथ हुई सबसे प्यारी बातों में से एक यह थी कि हम एक कॉन्सर्ट में गए थे। हमारी

शाम बहुत अच्छी बीत रही थी। तभी उसने मुझसे कहा, ‘ओह, हमें पहनने के लिए दो चेन ले लेनी चाहिए क्योंकि हम दोनों की आपस में अच्छी बनती है।’ उसने यह बात अपने अनोखे अंग्रेजी लहजे में कही, और मुझे समझ नहीं आया कि उसका क्या मतलब था। अचानक, वह बहुत शर्मा गई। उसने अपने दिल की बात मुझसे कह दी, जो वह अक्सर नहीं करती थी। मैं भावुक हो गया, और मैंने कहा, ‘ज़रूर।’ बाद में, उसने मुझे बताया कि जापान में, शादी के समय कुछ लोग ऐसा ही करते हैं; वे अंगूठियों का आदान-प्रदान नहीं करते, वे एक हार का आदान-प्रदान करते हैं जिसे कपड़ों के नीचे पहना जाता है। उसका मुझसे ‘चलो ऐसा करते हैं’ कहना, सगाई करने का उसका तरीका था। तो हमने पहनने के लिए दो चेन चुनीं, और हमने उन्हें पहन लिया।”
“जब उसकी बहन ने मुझे मिसाकी की हड्डियाँ दिखाईं, तो उसकी माँ कमरे से बाहर गई और दो थैले लेकर लौटी। पहले थैले में मिसाकी की चेन थी। उस पर सूखा खून लगा हुआ था। उस पर उसका खून लगा था... क्योंकि उसकी माँ ने उसकी पहचान करते समय उसके शरीर से चेन उतारी थी। उसने वह चेन मुझे दे दी... वह चेन अभी भी सूखे खून से सने थैले में मेरे पास है। फिर उसने कहा, 'ये लो तुम्हारे हेडफ़ोन।' उसने मुझे वही ब्लूटूथ हेडफ़ोन दिए जो मैंने मिसाकी को दिए थे। तो फिर एक दूसरा थैला था जिसमें ये टूटे हुए नॉइज़-कैंसलिंग हेडफ़ोन थे— उन पर भी सूखा खून लगा हुआ था। फिर, जब मैं ये सब चीज़ें पकड़े हुए था, तो उसकी माँ ने बड़े ही सहज अंदाज़ में कहा, 'गिरने से उसका शरीर तो कुचल गया, लेकिन उसका चेहरा ज़्यादा खराब नहीं हुआ था, इसलिए मुझे उसकी पहचान करने में कोई दिक्कत नहीं हुई।'”
टोबियास ने मेरी ओर देखे बिना दूर कहीं नज़रें गड़ा दीं। “मिसाकी की हड्डियाँ देखना, उसके हार और हेडफ़ोन पर सूखा खून—सचमुच उन चीज़ों पर उसका खून देखना जो मैंने उसे दी थीं। हम उनके बैठक कक्ष में थे, विनम्रता और शांति से बातें कर रहे थे, लेकिन मेरा मन उथल-पुथल से भरा हुआ था। मुझे मिसाकी की मौत में अपनी भूमिका पर अफ़सोस हो रहा था। इसमें कोई शक नहीं, मुझे अफ़सोस था। लेकिन उसकी माँ ने जो कुछ भी किया, ऐसा लग रहा था जैसे वह कह रही हो—मुझे यकीन है कि उसका यह मतलब नहीं था—लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे वह कह रही हो, ‘देखो तुमने मेरी प्यारी बेटी के साथ क्या किया है। वह अब सिर्फ़ हड्डियों का ढेर है।’ उस मुलाक़ात के दौरान, मैं दुखी होने से लेकर एक हत्यारे जैसा महसूस करने लगा। जैसे मैंने ही उसे मारा हो।”

जब वह बोल रहा था, तब मुझे पहली बार एहसास हुआ कि टोबियास को दो दिल दहला देने वाले झटके लगे थे - पहले मिसाकी की आत्महत्या और फिर यह मुलाकात। मैंने कहा, "तुम हत्यारे नहीं हो।"
“मुझे उसे कभी भी, कभी भी मेरे बिना जापान वापस नहीं जाने देना चाहिए था,” टोबियास ने कहा। वह रोने लगा। “अगर मैंने उसे घर जाने से रोका होता, तो वह आज भी जीवित होती,” उसने आँसुओं के बीच कहा।
“शायद,” मैंने जवाब दिया। “शायद अगर उसकी माँ उसे हवाई अड्डे से लेने आई होती, या शायद अगर उसकी कोई बहन घर पर उसका इंतज़ार कर रही होती, ताकि मिसाकी को खाली घर न लौटना पड़ता। शायद अगर उसके पिता उससे अस्पताल में मिलने आए होते, तो उसे इतना अकेलापन महसूस न होता। शायद अगर उसके मनोचिकित्सकों ने उसे सुरक्षित वार्ड से रिहा न किया होता।”
टोबियास ने अपनी आँखें पोंछीं और सिर हिलाया। "मुझे यकीन है कि इसीलिए मैंने तुम्हें इस मुलाकात के बारे में कभी नहीं बताया। मैं बता ही नहीं सका। मुझे बहुत बुरा लग रहा है।"
"मिसाकी की मौत के लिए आप जिम्मेदार नहीं हैं।"
“तुम्हें सब कुछ नहीं पता,” उसने कहा। “हमारी पिछली बातचीत में, मैंने तुमसे कहा था कि मैं मिसाकी के साथ सख्त था—यह सच नहीं है। मैंने उससे कहा था कि क्रिस्टल मेथ लेने से उसने बहुत कुछ खो दिया है। मैंने कहा था…” टोबियास रुका। “मैंने कुछ व्यंग्यात्मक कहा था। मैंने कहा था, ‘मुझे उम्मीद है कि यह इसके लायक था।’ मैंने उससे कहा था, ‘हमने बाली में जो छुट्टियाँ मनाने वाले थे, उन्हें खो दिया है। हमने जापान में एक साथ रहने का मौका भी खो दिया है।’ और उसने कहा, ‘नहीं, नहीं—कोई बात नहीं, तुम मुझसे मिलने आ सकते हो। परिवार को अस्पताल में आने की अनुमति है, और तुम मेरे मंगेतर हो।’ और मैंने उससे कहा, ‘मैं तुम्हारा मंगेतर नहीं हूँ।’” टोबियास ने सिर हिलाया। “काश मैंने ऐसा न कहा होता, काश… वह मानसिक अस्पताल में भर्ती थी। ऐसा करना बहुत ही भयानक था। उससे यह सब छीन लेना। लेकिन मैं बहुत गुस्से में था। मैंने तो यह भी सोचा था कि उससे इस तरह बात करने से शायद वह मेथ का सेवन बंद कर दे।”
मैंने टोबियास को याद दिलाया कि मिसाकी ने क्रिस्टल मेथ का सेवन तब किया था जब वह जापान में उससे दूर थी, न कि जब वह उसके साथ थी - और इंग्लैंड आने से शायद उसकी उम्र बढ़ गई थी।

मैं आपकी बात सुन रहा हूँ, लेकिन मुझे अपराधबोध हो रहा है।
मिसाकी के इमारत से कूदकर मरने की खबर सुनकर टोबियास की पहली प्रतिक्रिया अविश्वास की थी। उसने मुझे बताया कि वह "सुन्न सा महसूस कर रहा था, लेकिन अजीब तरह से शांत भी।" उसने अपनी तयशुदा शाम को जारी रखा। उसने दोस्तों के साथ डिनर किया। उसे कोई अपराधबोध नहीं था। मिसाकी के परिवार से मिलने के बाद उसकी भावनाएँ बदल गई थीं। यह कोई असामान्य बात नहीं है। ज़्यादातर लोग अपने किसी प्रियजन की आत्महत्या पर अविश्वास, सुन्नता और इनकार की प्रतिक्रिया देते हैं। फिर एक कहानी गढ़ने लगती है: किसी को दोषी ठहराया जाता है। परिवार और दोस्त मनोचिकित्सक, पूर्व पति, किसी और को दोषी ठहराते हैं। लोग खुद को दोषी मानते हैं। जो लोग सिल्विया प्लाथ के बारे में कुछ नहीं जानते, वे भी मानते हैं कि टेड ह्यूजेस उसकी आत्महत्या के लिए ज़िम्मेदार थे। आत्महत्या के बाद, शायद अपराधबोध से बचने के लिए, हम किसी को दोषी ठहराने लगते हैं।
मैंने कहा, "मुझे नहीं लगता कि मिसाकी की मौत के लिए आप ज़िम्मेदार हैं। मुझे नहीं लगता कि उसका परिवार या डॉक्टर उसकी मौत के लिए ज़िम्मेदार हैं। मुझे तो यह भी नहीं लगता कि मिसाकी अपनी मौत के लिए ज़िम्मेदार है।"
“आप ऐसा कैसे कह सकते हैं?” टोबियास ने कहा।
“अगर किसी चमत्कार से वह बच जाती, तो शायद वह आपको बताती कि उसे कूदने का पछतावा है। आत्महत्या से बचने वाले ज्यादातर लोग आत्महत्या की कोशिश करने पर पछताते हैं। मुझे नहीं लगता कि मिसाकी की मौत के लिए कोई जिम्मेदार है।”
लेकिन मैं खुद को जिम्मेदार महसूस करता हूं।
मैंने कहा, "मुझे पता है, लेकिन किसी बात को महसूस करने से वह सच नहीं हो जाती।"
मुझे लगा कि यही उसका अपराधबोध था, जो उसे लंबे समय तक शोक में डूबाए हुए था और उसे जाने नहीं दे पा रहा था। टोबियास ने एक बार मुझसे कहा था कि उसने मिसाकी को आत्महत्या के कारण "खो दिया" है, लेकिन "खो देना" एक भ्रामक शब्द हो सकता है। वह मिसाकी को एक साल से भी कम समय से जानता था, और फिर भी उसकी मृत्यु के एक दशक से अधिक समय बाद भी वह लगातार उसके विचारों में बनी रहती थी। उसकी अनुपस्थिति में, वह जीवित रहने की तुलना में कहीं अधिक मौजूद थी।

आत्महत्या किसी भी अन्य मृत्यु से अलग होती है: इस कृत्य की क्रूरता शोक को
- विशेष रूप से, उसे जाने देने को - कठिन, यदि असंभव नहीं तो, बना देती है। मेरी पहली मरीज़ों में से एक, डॉ. सारा ए., एक कनिष्ठ चिकित्सक थीं जिनका मैं अवसाद का इलाज कर रहा था। उनके पिता का निधन तब हुआ जब वह मात्र चार वर्ष की थीं। उन्हें बताया गया था कि यह दिल का दौरा था। वास्तव में, उन्होंने अपनी कलाई काट ली थी। उन्हें यह बात पच्चीस वर्ष की आयु में तब पता चली जब उन्होंने अपनी माँ को एक सहेली से यह कहते हुए सुना कि उन्हें चिंता है कि सारा भी अपने पिता की तरह आत्महत्या कर सकती है। हालाँकि डॉ. ए. को अपने पिता की बहुत कम यादें थीं, उन्होंने मुझे उनकी मृत्यु को "भावनात्मक रूप से असहनीय" बताया। "मैं इसे समझ नहीं पा रही हूँ। मैं इसे पचा नहीं पा रही हूँ। मैं इसे आत्मसात नहीं कर पा रही हूँ। यह मेरे दिल में अटके एक भारी पिंड की तरह है।"
मेरी एक मरीज़ थीं, श्रीमती ज़ाला बी., जो सफाईकर्मी थीं। उनके सोलह वर्षीय बेटे ने मेट्रो ट्रेन के सामने कूदकर आत्महत्या कर ली थी। एक होशियार छात्र होने के नाते, उसने अपनी डेस्क पर अपना सावधानीपूर्वक तैयार किया हुआ जीसीएसई अध्ययन कार्यक्रम, अपने सत्रहवें जन्मदिन के लिए अपनी इच्छाओं की सूची और अपने माता-पिता को चिंता न करने के लिए एक हस्तलिखित पत्र छोड़ा था, जिसमें उसने लिखा था कि अब उसे शांति मिल गई है। श्रीमती बी. ने मुझसे कहा, "मुझे लगता है कि वह किसी बातचीत के बीच में ही चला गया। मैं उससे दिन भर, हर दिन बात करती हूँ।"
5

टोबियास को मुझे यह बताने में दस साल लग गए कि उसने मिसाकी की हड्डियाँ देखी थीं, और उसने मिसाकी की बहनों और माँ से हुई उस मुलाकात के दौरान अपने मन में उठे भावों को मुझसे साझा किया। जीविका कमाने और घर बसाने की उसकी वास्तविक चिंताओं के नीचे, हमने अपराधबोध का एक विशाल भंडार खोज निकाला था।
अगले दो वर्षों में, लगभग हर सत्र में, उनके सपने को आधार बनाकर, हमने इस अपराधबोध के कारणों का पता लगाया। टोबियास ने खुद से पूछा, मैं हमेशा उसके साथ क्यों चलता रहा? मैंने उसे पुनर्वास केंद्र क्यों नहीं भेजा? उसके घर लौटने से पहले मैंने उसके माता-पिता को फोन करके क्यों नहीं बताया कि वह

मेथ की आदी है और उस पर अकेले रहने के लिए भरोसा नहीं किया जा सकता? पछतावा, अफसोस, दुख—जैसे-जैसे हमने टोबियास की भावनाओं को समझा और पहचाना, खुद के प्रति उसका नजरिया धीरे-धीरे बदल गया।
आत्म-मंथन के इन महीनों और वर्षों के दौरान, टोबियास अक्सर अपने सपने के बारे में इस तरह की ऊर्जा के साथ बात करता था जिससे लगता था कि वह अभी इससे पूरी तरह उबर नहीं पाया है। सपने से पहले, टोबियास अपने बाहरी जीवन में डूबा रहता था—अपनी कलाकृतियों को बेचने में कठिनाई, गृह ऋण चुकाने में परेशानी, रहने के लिए जगह ढूंढने में परेशानी, इत्यादि—लेकिन अब वह धीरे- धीरे अंतर्मुखी होता जा रहा था।
फिर, सपने का पहली बार वर्णन करने के दो साल से अधिक समय बाद, टोबियास ने एक और स्वीकारोक्ति की: "मुझे उसके सिर पर हाथ नहीं रखना चाहिए था, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था।"
"वह आपने किया?"
मैंने उसकी खोपड़ी उठा ली।
उसने मुझे यह बात पहले क्यों नहीं बताई?
उसके गले से एक सिसकी फूट पड़ी। "मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था—मुझे उसकी हड्डियों को नहीं छूना चाहिए था, है ना?"
मैंने कोई जवाब नहीं दिया।
कुछ देर बाद उसने कहा, “उसकी बहन उसकी खोपड़ी के टुकड़े उठा रही थी, मानो उनसे खेल रही हो, उन्हें पकड़े हुए हो। और उसने कहा, ‘अरे, बस हड्डियाँ हैं।’ मुझे लगता है वह दयालु बनने की कोशिश कर रही थी… मुझे दिलासा देने की। लेकिन मैं मिसाकी को देख सकता था। जब आप प्यार करते हैं, तो आप बहुत करीब होते हैं। मैं उसके दांतों को जानता था, हर एक दांत का आकार, उनके बीच का अंतर। वे वहीं थे। वे दांत जिन्होंने मेरे होंठ काटे थे। वैसे ही। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि मैं उन्हें फिर से देख पाऊंगा।” टोबियास ने नीचे देखा। “मुझे लगता है कि मैं बस उसे छूना चाहता था। उसे दिलासा देना चाहता था। इसलिए मैंने भी उसकी बहन की तरह डिब्बे में हाथ डाला। मैंने उसके सिर पर हाथ रखा”—उसने खुद को सुधारते हुए कहा—“उसकी खोपड़ी पर। और मैंने उसे उठा लिया।”

उपसंहार

प्यार और खुशी

कुछ साल पहले, मैं अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ नॉर्वे में छुट्टियां मनाने गया था। पहले दिन, हम एक खड़ी पहाड़ी पगडंडी पर चढ़ाई करने गए और एक पुराने खलिहान के पास रुके जो कभी खेतों से घिरा हुआ था। कुछ बकरियों और भेड़ों को चराने के लिए लाया गया था, लेकिन बाहरी इमारतें खाली थीं और खलिहान में अब एक छोटा सा कैफे चल रहा था। एक महिला ने बच्चों के लिए कोको और हमारे लिए चाय बनाई।
अगले दिन, हमने पहाड़ पर और ऊपर एक झरने तक जाने का फैसला किया। चढ़ाई के लिए मौसम कुछ खास अच्छा नहीं था; रात भर बारिश हुई थी और आसमान घने बादलों से घिरा हुआ था। पगडंडी फिसलन भरी थी—खतरनाक तो नहीं, लेकिन सावधानी बरतने की ज़रूरत थी। गेट के पास पैदल यात्रियों के लिए कुछ खुरदरी बनी हुई छड़ियां रखी थीं, और बच्चों ने कुछ देर तक अपनी पसंद की छड़ियां चुनीं। हम सब एक ही मकसद के लिए एक साथ थे—जैसा कि हम अपने रोजमर्रा के जीवन में बहुत कम ही होते हैं—और साथ मिलकर पहाड़ पर चढ़ने में हमें बहुत खुशी हो रही थी। बच्चे—उस समय उनकी उम्र छह और नौ साल थी—इतनी ऊंचाई तक चढ़ने में सक्षम होने पर गर्व महसूस कर रहे थे। एक मोड़ पार करते ही हम एक छोटे से खुले मैदान में पहुँचे; हम बारी-बारी से घास पर लेटकर एक झरने से पानी पी रहे थे। पूरी यात्रा के दौरान, बर्फ पिघलने से पहाड़ से नीचे बहते पानी की आवाज़ हमारे साथ थी। जैसे ही हम अपने गंतव्य के पास पहुँचे, यह आवाज़ एक गर्जना में बदल गई। झरना बहुत सुंदर था, और हम वहाँ पहुँचकर खुश थे—यह महसूस करके कि हमने कितनी दूर का सफर तय किया है।

हम सभी की इन मानसिक आदतों में कुछ न कुछ हिस्सेदारी होती है। जैसा कि प्रॉस्ट ने बताया है, आदत "वह दूसरी प्रकृति है जो हमें पहली प्रकृति को जानने से रोकती है।" हमारे छोटे-छोटे दोहराव वाले व्यवहार हमें प्रभुत्व का एहसास दिला सकते हैं, यह भावना कि हम समय के स्वामी हैं न कि उसके बहाव में बह रहे हैं— जो हमें समय बीतने के अनुभव से बचाते हैं, जिसमें परिवर्तन और हानि की भावनाएँ शामिल होती हैं।
मैंने ऊपर देखा तो पाया कि मैं पीछे रह गया था। मेरा परिवार अब पगडंडी पर काफी आगे बढ़ चुका था और लगभग खेत तक पहुँच गया था। उन्हें इस तरह एक साथ, लेकिन दूर से देखना अजीब लग रहा था—मेरी पत्नी आगे-आगे चल रही थी ताकि कोई गिर न जाए, मेरा बेटा पगडंडी के किनारे-किनारे चलने की कोशिश कर रहा था और मेरी बेटी ज़रा भी गलती नहीं कर रही थी।
फिर मेरे मन में यह विचार आया: “ऐसा ही होगा। वे तुम्हारे बिना आगे बढ़ेंगे; तुम्हें उन्हें आगे जाने देना होगा। तुम ठीक रहोगे—और वे भी।” परामर्श कक्ष में, मैं हर मरीज़ के जीवन के हर पहलू पर, बारीकियों पर ध्यान केंद्रित करता हूँ। लेकिन वहाँ, पहाड़ों में, जहाँ समय का प्रवाह थम सा जाता है, मैंने पीढ़ियों के बीच के जुड़ाव को महसूस किया। मुझे क्षण भर के लिए उदासी महसूस हुई। फिर एक और भावना जागृत हुई: जो आपके पास है, उसकी चाहत का आनंद—यही तो असल खुशी है।

आभार

मेरे मित्र जॉन लाहर कहते हैं, "डर लेखन का शत्रु है।" वे और कैरिन बेसर मेरे पहले पाठक रहे हैं। दोनों को शब्दों और कहानी कहने की कला की गहरी समझ है। उनकी देखभाल और सूझबूझ ने मुझे एक सुरक्षा कवच प्रदान किया है, जिससे मुझे लिखने और अपने मन की बात कहने की स्वतंत्रता मिली है। उनके साथ लेखन पर हुई चर्चाएँ मेरे जीवन के सबसे सुखद अनुभवों में से एक रही हैं।
चैटो एंड विंडस में क्लारा फार्मर के साथ यह मेरा दूसरा सहयोग है। वह मुझे अच्छी तरह जानती हैं। क्लारा की समझदारी, उत्साह और सुरुचिपूर्ण संपादन शैली इन पन्नों में स्पष्ट रूप से झलकती है।
अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संपादकों के एक असाधारण समूह ने इस परियोजना का समर्थन किया है और मेरे लेखन को निखारा है: अमेरिका में रैंडम हाउस में दिवंगत और प्रिय सुसान कामिल; एंडी वार्ड, जिन्होंने इस पुस्तक को ऊर्जा और उत्साह के साथ अपने हाथ में लिया। मैं रैंडम हाउस में हिलेरी रेडमोन और रैंडम हाउस कनाडा में सारा सेंट पियरे के सावधानीपूर्वक पठन और सलाह के लिए भी आभारी हूं।
इस आभार व्यक्त करने वाली सूची में, प्रचार, विपणन और डिज़ाइन की उन प्रतिभाशाली टीम को भी बधाई जिन्होंने पुस्तक को इतनी शानदार ढंग से लॉन्च करने में मदद की। लंदन में चैटो एंड विंडस/विंटेज के लिए: प्रिया रॉय, फर्गस एडमंडसन और क्रिस पॉटर। प्रबंध संपादक ग्रीम हॉल, कॉपी एडिटर एलिसन टुलेट और सहायक संपादक रोसन्ना हिल्डयार्ड को भी धन्यवाद - उन्होंने इस पुस्तक को और बेहतर बनाया। न्यूयॉर्क में रैंडम हाउस के लिए: कैरी नील, आयलेट डुरंट, जूलिया हैरिसन, एलिसन रिच, सुसान टर्नर, चैन्लर हैरिस, रेबेका बर्लेंट, इवान कैमफील्ड, जेसी ब्राइट और मार्टिन श्नाइडर। जॉर्जिया गैरेट, जिन्हें मैं अपना एजेंट कहने का सौभाग्य प्राप्त करती हूँ, ने मुझे उपयोगी सुझाव दिए। रोजर्स, कोलरिज एंड व्हाइट के सभी अद्भुत लोगों को भी मेरा सलाम, विशेष रूप से सैम कोट्स, स्टीफन एडवर्ड्स, ट्रिस्टन

केंड्रिक, लॉरेंस लालुयॉक्स, आइवी पोटिंगर-ग्लास और पीटर स्ट्रॉस को। न्यूयॉर्क में, मेलानी जैक्सन को मेरा निरंतर धन्यवाद।
'लव लेबर' के धीरे-धीरे पूर्ण होने की प्रक्रिया में, कई लोगों ने इसके मसौदे पढ़ने की कृपा की: कैट्रिन एरोनोविच, डेविड एरोनोविच, क्रिस्टोफर बोलस, सुज़ैन कैलीस, डोनाल्ड कैंपबेल, क्लेयर कार्लिस्ले, वेंडी कोप, एडम डंकन, अंजली ग्रियर, फ्रांसिस ग्रियर, लिन हडसन, कॉर्नेलिया वॉन क्लेस्ट, स्टीफन लेहमैन, पॉल मेयर्सबर्ग, कार्ल मिलर, अन्ना मोंक, मासाकी निशिमुरा, एलेजांद्रा पेरेज़, पेनी पिल्ज़र (जिनकी मुझे बहुत याद आती है), सियान पुटनाम, जेन रोड्स, जूलिया सैमुअल, जॉन स्कॉलर, जोनाथन शेल्डन, बेन स्टैम्बलर, हेलेन टायसन और बेटिना वॉन ज़्वेल। और विभिन्न मसौदों और अंतिम पांडुलिपि पर उनके सुझावों के लिए, मेरे दोस्तों मार्क एलिंगहैम, रॉबर्ट इके, नतानिया जैन्ज़ और ज़ारा टेम्पेस्ट-वाल्टर्स को विशेष धन्यवाद।
काश मैं किताबें जल्दी लिख पाता, ताकि मैं अपनी पत्नी निकोला लकहर्स्ट को सार्वजनिक रूप से धन्यवाद देने का आनंद अधिक बार उठा पाता। पच्चीस साल पहले जब हमारा रिश्ता शुरू हुआ था, तब से ही 'लव'ज़ लेबर' के विचार हमारी बातचीत का हिस्सा रहे हैं। मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरे पास साहित्य की गहरी समझ रखने वाली इतनी समझदार पाठक हैं जो मेरी कहानियाँ पढ़ती हैं और अपनी समझ साझा करती हैं। मैं इसके लिए उनका आभारी हूँ, और इससे भी कहीं अधिक। मैं यह पुस्तक निकोला और हमारे प्यारे बच्चों को समर्पित करता हूँ।
अंत में, मैं उन लोगों के समूह को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्हें मैं नाम लेकर धन्यवाद नहीं दे सकता: मेरे मरीज।

स्रोत और टिप्पणियाँ

लेखक का नोट

इस पुस्तक में शामिल कहानियाँ मनोविश्लेषक के रूप में मेरे कार्य से ली गई हैं। अपने रोगियों की गोपनीयता बनाए रखने के लिए, मैंने उनके नाम और पहचान से संबंधित सभी विवरण हटा दिए हैं। जहाँ तक संभव हो, मैंने अपने रोगी से उनके मनोविश्लेषण से संबंधित सामग्री का उपयोग करने की अनुमति प्राप्त की है। मैं उन रोगियों का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे हमारे साथ किए गए कार्य की इन रिपोर्टों को प्रकाशित करने की अनुमति दी।
मनोविश्लेषकों अमादेओ लिमेंटानी, अन्ना फ्रायड, डोरोथी बर्लिंगहैम, मैरी बैटल सिंगर, हेरोल्ड स्टीवर्ट और मर्विन ग्लासर के चित्र स्मृति के आधार पर बनाए गए हैं।

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], “[illegible], [illegible], [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],” [illegible] [illegible], 1990, 26 (I): 108–36[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (2018), [illegible] 77–105[illegible]

[illegible]. [illegible], [illegible]. [illegible], [illegible]. [illegible], [illegible] [illegible]. [illegible], “[illegible]: [illegible] [illegible] 1913–1994,” [illegible] [illegible], 1995, 76: 1031–34.

[illegible] [illegible], “[illegible] [illegible] [illegible],” [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] (1998), [illegible] 215[illegible]

[illegible] [illegible]. [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (1990)[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (1981)[illegible]

[illegible] [illegible] (1900), "[illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible], [illegible], [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (New York: [illegible], 1957).

[illegible], [illegible], "[illegible]," [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 1931-2001 (New York: [illegible], 2001), [illegible] 50.

[illegible] [illegible], A [illegible] [illegible] (New York: [illegible], 2001). "[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] 2 [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (Cambridge), [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (New York: [illegible], 2008).

[illegible] [illegible], " 'New [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]...': [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]," [illegible] [illegible] (New York: [illegible], 2008), pp. 200–215. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (New York: [illegible], 1992).

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] (New York: [illegible] [illegible], 2002).

[illegible] [illegible], "A [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] A [illegible] [illegible]," [illegible] A [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible], pp. [illegible], [illegible]. [illegible], [illegible] [illegible] (Cambridge) (New York: [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible], 1989), pp. 83–101.

[illegible] [illegible] (1914), "[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] ([illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] II)," [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] XII (1911-1913) (New York: A [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], 1958), [illegible] 145-56.

[illegible] [illegible] (1916), "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]," "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible]," [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] XIV (1914-1916) (New York: A [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], 1957), [illegible] 332-33.

मर्विन ग्लासर, "विकृतियों में आक्रामकता की भूमिका के कुछ पहलू," यौन विचलन में, आई. रोसेन (संपादक), दूसरा संस्करण (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1979), पृ. 278-305।
अमादेओ लिमेंटानी, “वर्किंग थ्रू के संबंध में एक्टिंग आउट का पुनर्मूल्यांकन,” इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोएनालिसिस, 1966, 47: 274–82. डोनाल्ड विनिकॉट (1956), “असामाजिक प्रवृत्ति,” डी. डब्ल्यू. विनिकॉट के एकत्रित कार्यों में, खंड 5, 1955-1959, लेस्ली कैल्डवेल और हेलेन टेलर रॉबिन्सन (संपादक) (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2017)। कामुक संबंध: तीन मामले
लियो बर्Sani, द फ्रायडियन बॉडी: साइकोएनालिसिस एंड आर्ट (न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1986)।
जूडिथ बटलर, द साइकिक लाइफ ऑफ पावर (स्टैनफोर्ड: स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1997)।
सिगमंड फ्रायड (1905), "यौनिकता के सिद्धांत पर तीन निबंध," सिगमंड फ्रायड के संपूर्ण मनोवैज्ञानिक कार्यों के मानक संस्करण, खंड VII (1901-1905) (लंदन: द होगार्थ प्रेस और इंस्टीट्यूट ऑफ साइकोएनालिसिस, 1953), पृष्ठ 123-246।
मेलानी क्लेन, "प्रारंभिक चिंताओं के प्रकाश में ओडिपस कॉम्प्लेक्स," इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोएनालिसिस, 1945, 26: 11-32।
जूलिया क्रिस्टेवा, पॉवर्स ऑफ हॉरर (न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982)।
एडम लिमेंटानी, “पुरुष विषमलैंगिकता की सीमाओं तक: योनि-पुरुष,” जर्नल ऑफ एनालिटिक साइकोथेरेपी एंड साइकोपैथोलॉजी, 1984, 2: 115–29। यह निबंध बिटवीन फ्रायड एंड क्लेन: द साइकोएनालिटिक क्वेस्ट फॉर नॉलेज एंड ट्रुथ (लंदन: फ्री एसोसिएशन बुक्स, 1989) में भी उपलब्ध है।
एडम फिलिप्स, विनिकॉट (लंदन: पेंगुइन बुक्स, 2007)। मूल रूप से 1988 में प्रकाशित यह पुस्तक डोनाल्ड विनिकॉट और उनके विचारों का सबसे अच्छा परिचय बनी हुई है।
डोनाल्ड विनिकॉट (1945), “होम अगेन,” डिप्रिवेशन एंड डेलिंक्वेंसी में, क्लेयर विनिकॉट, रे शेफर्ड और मैडलीन डेविस (संपादक) (लंदन: टैविस्टॉक पब्लिशिंग, 1984), पृष्ठ 47।

डोनाल्ड विनिकॉट (क्लेयर ब्रिटन के साथ ह्यूमन रिलेशंस के लिए लिखा गया, 1947), "कठिन बच्चों के उपचार के रूप में आवासीय प्रबंधन," डिप्रिवेशन एंड डेलिंक्वेंसी में, क्लेयर विनिकॉट, रे शेफर्ड और मैडलीन डेविस (संपादक) (लंदन: टैविस्टॉक पब्लिशिंग, 1984), पृष्ठ 52।
डोनाल्ड विनिकॉट, “प्रति-स्थानांतरण में घृणा,” इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोएनालिसिस, 1949, 30: 69–74। यह निबंध थ्रू पीडियाट्रिक्स टू साइको- एनालिसिस (लंदन: द होगार्थ प्रेस, 1982), पृष्ठ 199 में भी उपलब्ध है। कनेक्शन
इस कहानी में चित्रित पात्र और घटनाएँ, सार्वजनिक रूप से उपलब्ध पात्रों और घटनाओं को छोड़कर, काल्पनिक हैं, और किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।
“जो पाइक के लिए अच्छा है, वह मिनो के लिए मौत है” यह वाक्यांश “पाइक के लिए स्वतंत्रता मिनो के लिए मौत है” का ही एक रूपांतर है, जो कि आइज़ाया बर्लिन द्वारा 31 अक्टूबर, 1958 को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में दिए गए उद्घाटन व्याख्यान “टू कॉन्सेप्ट्स ऑफ लिबर्टी” से लिया गया एक उद्धरण है। यह निबंध “टू कॉन्सेप्ट्स ऑफ लिबर्टी” (ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1958) के पृष्ठ 9 पर भी उपलब्ध है।
“जो चाहो ले लो, और उसके लिए भुगतान करो” यह मुहावरा स्पेनिश कहावत से आया है: “वाई डियोस ले डिजो अल होम्ब्रे: ‘टोमा लो क्यू डिसेअस, वाई पगा पोर एलो’” (और ईश्वर ने मनुष्य से कहा: “जो चाहो ले लो, और उसके लिए भुगतान करो”)।
मनोविश्लेषक विल्फ्रेड बायोन का यह कथन मूल रूप से रॉबर्ट गोस्लिंग के लेख "गोस्लिंग ऑन बायोन" (द टैविस्टॉक गजट, डायमंड जुबली अंक, 1980, पृष्ठ 22-23) में प्रकाशित हुआ था। इसे एन. सिमिंगटन की पुस्तक "द एनालिटिक एक्सपीरियंस: लेक्चर्स फ्रॉम द टैविस्टॉक" (लंदन: फ्री एसोसिएशन बुक्स, 1986), पृष्ठ 278 और एन. सिमिंगटन के लेख "वेयर इज द मेडिसिन ऑफ हीलिंग इन साइकोएनालिसिस?" (ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ साइकोथेरेपी, 2005, 25: 2, 6-22) में भी उद्धृत किया गया है।
रोलैंड बार्थेस, द लवर्स डिस्कोर्स, रिचर्ड हॉवर्ड द्वारा अनुवादित (न्यूयॉर्क: हिल एंड वांग, 1978)। "डार्क ग्लासेस" में खंड 4 देखें, पृष्ठ 43।

फ्रांसिस ग्रियर (संपादक), ओडिपस और युगल (लंदन: कार्नाक बुक्स, 2005; पुनर्मुद्रित लंदन: रूटलेज, 2019)।
मैरी मॉर्गन, “एक युगल होने में सक्षम होने पर: मानसिक जीवन में एक ‘रचनात्मक युगल’ का महत्व,” ओडिपस और युगल में, फ्रांसिस ग्रियर (संपादक) (लंदन: कार्नाक बुक्स, 2005), पृ. 9–30।
मैरी मॉर्गन, ए कपल स्टेट ऑफ माइंड: साइकोएनालिसिस ऑफ कपल्स एंड द टैविस्टॉक रिलेशनशिप्स मॉडल (लंदन: रूटलेज, 2019)।
उपहार
आइरिस मर्डोक, “उदात्त और अच्छाई,” अस्तित्ववादी और रहस्यवादी, दर्शन और साहित्य पर लेखन, पीटर कोनराडी (संपादक) (न्यूयॉर्क: द पेंगुइन प्रेस, 1998), पृ. 205–20।
स्पार्क्स
डॉ. मैरी बैटल सिंगर ब्रिटेन की पहली अश्वेत मनोविश्लेषक थीं। उनके उल्लेखनीय जीवन के बारे में अधिक जानकारी के लिए, जेन रोड्स और लिन हडसन द्वारा लिखित पुस्तक "फ्रॉम मिसिसिपी टू कैम्ब्रिज: मैरी बैटल सिंगर, ब्रिटेन की पहली अश्वेत मनोविश्लेषक" (वुल्फसन हॉल, कैम्ब्रिज, 2021) देखें।
vimeo.com/522837361.
एन बोल्ट, “मेरी बैटल सिंगर की स्मृति में,” जर्नल ऑफ चाइल्ड साइकोथेरेपी, 1985, 11 (2): 3.
जेनेट मैल्कम, रीडिंग चेखव: ए क्रिटिकल जर्नी (लंदन: ग्रांटा बुक्स, 2001)।
जेम्स बर्न्स सिंगर, एकत्रित कविताएँ, जेम्स कीरी द्वारा परिचय सहित संपादित (मैनचेस्टर: कारकेनेट प्रेस लिमिटेड, 2001)।
टॉमस ट्रांसट्रोमर, बीस कविताएँ, रॉबर्ट ब्लाई द्वारा अनुवादित (मैडिसन, मिनेसोटा: द सेवेंटीज़ प्रेस, 1970)।
प्यार और समय
सिगमंड फ्रायड (1916), “क्षणिकता पर,” सिगमंड फ्रायड के संपूर्ण मनोवैज्ञानिक कार्यों के मानक संस्करण में, खंड XIV (1914-1916) (लंदन: द होगार्थ प्रेस और मनोविश्लेषण संस्थान, 1957), पृ. 303-07.

आइरिस मर्डोक का निबंध, “अन्य अवधारणाओं पर अच्छाई की संप्रभुता,” अस्तित्ववाद और रहस्यवाद: पीटर कॉनराडी द्वारा संपादित दर्शन और साहित्य पर लेखन (लंदन: पेंगुइन बुक्स, 1999)। इस निबंध में वे लिखती हैं: “मृत्यु को स्वीकार करना हमारी अपनी शून्यता को स्वीकार करना है, जो स्वतः ही हमें उस चीज़ के प्रति चिंतित करता है जो हम स्वयं नहीं हैं,” पृष्ठ 385। इसी भावना को प्रतिध्वनित करते हुए, ली-यंग ली की सुंदर कविता “पकड़ना,” बिहाइंड माई आइज़ (न्यूयॉर्क: नॉर्टन, 2008), पृष्ठ 98 देखें।
हेलेन वेंडलर, लास्ट लुक्स, लास्ट बुक्स: स्टीवंस, प्लाथ, लोवेल, बिशप, मेरिल (प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2010)। अपने ज्ञानवर्धक अध्ययन में, वह हमारे जीवन और हमारी मृत्यु दोनों को देखने के तरीके का वर्णन करने के लिए "दूरबीन शैली" शब्द का प्रयोग करती हैं।
जेम्स रॉबर्टसन द्वारा निर्मित 'एक दो वर्षीय बच्ची अस्पताल जाती है', 16 मिमी फिल्म, 40 मिनट और 30 मिनट के संस्करण, अंग्रेजी और फ्रेंच में (कॉनकॉर्ड वीडियो एंड फिल्म काउंसिल, 1952)। मनोविश्लेषक जेम्स रॉबर्टसन की यह अग्रणी वृत्तचित्र फिल्म उन स्थायी भावनात्मक क्षति को दर्शाती है जो नेक इरादे वाले डॉक्टरों और नर्सों द्वारा एक ऐसी बच्ची को पहुंचाई जाती है जो अपनी सर्जरी या अपनी माँ की अनुपस्थिति को समझने के लिए बहुत छोटी है।
डोनाल्ड विनिकॉट, "मनोविश्लेषणात्मक सेटअप के भीतर प्रतिगमन के मेटासाइकोलॉजिकल और नैदानिक पहलू," थ्रू पीडियाट्रिक्स टू साइकोएनालिसिस (लंदन: द होगार्थ प्रेस लिमिटेड, 1958), पृ. 278-94।
घर जा रहा है
एंटोन चेखव (1890), "गुसेव," द विच एंड अदर स्टोरीज, वॉल्यूम VI, द टेल्स ऑफ एंटोन चेखव, कॉन्स्टेंस गार्नेट द्वारा अनुवादित (न्यूयॉर्क: हार्परकॉलिन्स बुक्स, 1998)।
फ्रैंसिन प्रोस, “चेखव से सीखना,” रीडिंग लाइक ए राइटर (न्यूयॉर्क: हार्पर पेरिनियल, 2007), पृ. 233–48.
जेम्स वुड, “चेखोव का जीवन से क्या अर्थ था,” द ब्रोकन एस्टेट में (न्यूयॉर्क: रैंडम हाउस, 2000), पृ. 79–90.
भूत-प्रेत

मार्गरेट एटवुड, “डिसेंट: मृतकों के साथ बातचीत, अंडरवर्ल्ड की यात्रा कौन करता है, और क्यों?”, “मृतकों के साथ बातचीत: लेखन पर एक लेखक” (लंदन: विरागो, 2003), पृ. 137–61.
क्रिस्टोफर बोलस, द शैडो ऑफ द ऑब्जेक्ट: साइकोएनालिसिस ऑफ द अनथॉट नोन (न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 1987)।
डोनाल्ड कैम्पबेल और रॉब हेल, वर्किंग इन द डार्क: अंडरस्टैंडिंग द प्री- सुसाइड स्टेट ऑफ माइंड (लंदन: रूटलेज, 2017)। सरल और गहन, आत्महत्या से पहले की मानसिक स्थिति और आत्महत्या के इच्छुक रोगी के मनोचिकित्सा पर मेरी जानकारी में यह सबसे अच्छी किताब है।
आंद्रे ग्रीन, “द डेड मदर,” ऑन प्राइवेट मैडनेस में (लंदन: द होगार्थ प्रेस, 1986), पृ. 142–73.
रॉबर्ट पोग हैरिसन, द डोमिनियन ऑफ द डेड (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2003)।
रॉबर्ट मैकफार्लेन, अंडरलैंड: ए डीप टाइम जर्नी (लंदन: पेंगुइन रैंडम हाउस, 2019)।
जेनेट मैल्कम, द साइलेंट वुमन: सिल्विया प्लाथ और टेड ह्यूजेस (न्यूयॉर्क: पिकाडोर, 1993)।
डी. ओवेन्स, जे. हॉरॉक्स, और ए. हाउस, "आत्म-हानि की घातक और गैर-घातक पुनरावृत्ति: व्यवस्थित समीक्षा," ब्रिटिश जर्नल ऑफ साइकियाट्री, 2002, 181: 193-99।
एड्रिएन रिच, “डाइविंग इनटू द रेक,” डाइविंग इनटू द रेक: पोएम्स 1971–1972 (न्यूयॉर्क: नॉर्टन, 1973), पृ. 22–24.
रेनर मारिया रिल्के, “द फर्स्ट एलेजी,” द पोएट्री ऑफ रिल्के, द्विभाषी संस्करण, एडवर्ड स्नो द्वारा अनुवादित (न्यूयॉर्क: नॉर्थ प्वाइंट प्रेस, 2009), पृ. 282–89.
एंड्रयू सोलोमन, द नूनडे डेमन: एन एटलस ऑफ डिप्रेशन (लंदन: विंटेज, 2002)।

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

RANDOM HOUSE
Penguin
Random
House

[illegible] [illegible]?
[illegible] [illegible] [illegible]?

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]!

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

यह फ़ाइल Z-Library प्रोजेक्ट से डाउनलोड की गई थी।

ज्ञान और संस्कृति का आपका प्रवेश द्वार। सभी के लिए सुलभ।

z-library.sk z-lib.gs z-lib.fm go-to-library.sk

आधिकारिक टेलीग्राम चैनल

जेड-एक्सेस

https://wikipedia.org/wiki/Z-Library